आठवां अध्याय

संजीव के कथा-साहित्य की भाषा एवं शिल्प विधान

भाषा : भाषा के बारे में यह सामान्य धारणा है कि भाषा एक व्याकरणबद्ध व्यवस्था है और दो लोगों के बीच विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है, परंतु धीरे-धीरे भाषा की संकल्पना ने वृहत्त विस्तार पाया है। जहाँ पहले लोग बोलियों को भाषा का विकृत तथा तिरस्कृत रूप मानकर प्रयोग करते थे वहीं आज हम समाजभाषा विज्ञान के अंतर्गत भाषा के विविध रूपों की चर्चा, रचना की जीवंतता और सजीवता के परिप्रेक्ष्य में करते हैं। भाषा और समाज का अटूट संबंध है। भाषा से अलग समाज और समाज से अलग भाषा का अस्तित्व ही संभव नहीं है क्योंकि भाषा संप्रेषण की वस्तु है और इसी के माध्यम से हम अपने मित्र, भाई-बंधुओं, रिश्तेदारों से अपना संबंध स्थापित करते हैं, उनसे बातचीत करते हैं। भाषा के संरचना में ही सामाजिक संरचना के रूप भी छुपे रहते हैं। हम जीवन में किसी के साथ 'आदर सूचक' शब्दों का सम्बोधन करते हैं तो किसी के साथ 'तू-तड़ाक' का व्यवहार। भाषा का यह प्रयोग केवल भाषा की संरचना की विशेषता नहीं अपितु हमारे आपसी सामाजिक संबंधों पर भी निर्भर है। इस तरह भाषा भी एक सामाजिक संस्था (Social institution) है।

कहानीकार की रचना की सारी विशेषताएँ कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, प्रतिपाद्य, संरचना शिल्प, सजीवता, स्वाभाविकता एवं रोचकता भाषा के माध्यम से ही हमारे सामने आती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि 'कहानीकार' का भाषा पर पूर्ण अधिकार हो। भाषा संरचना को कहानी का प्राण तत्व भी कहा जाता है। शब्दों के सठीक प्रयोग द्वारा ही कथा सशक्त, स्वाभाविक, रोचक, सजीव एवं प्रभावात्मक बनती है। कहानीकार का भाषा पर जितना सशक्त अधिकार होगा, कहानी उतनी ही उत्कृष्ट और प्रभावात्मक होगी। कहानी में कथाकार जब अपना विचार रखता है तो अवश्य वह भाषा उसकी अपनी होती है। परंतु कहानी में जब कोई बात पात्रों के द्वारा कहलवाई जाती है तो वह भाषा पात्रानुकूल होनी चाहिए। कथा के विस्तार में भी भाषा पात्रों, परिवेश और परिस्थितियों के अनुसार होनी चाहिए। सरल, सुबोध और बातचीत की शैली का प्रयोग होना चाहिए। जटील, दुरूह शब्दों के प्रयोग तथा लंबे-लंबे वाक्य संरचना से बचना चाहिए ताकि कहानी पाठकों के लिए अबूझ और

बोझिल न लगे। यहाँ कहानी की भाषा-शैली के विषय में लक्ष्मी नारायण लाल के विचार सार्थक लगते हैं –"कहानी की भाषा-शैली में गद्य का महत्व सबसे अधिक है। गद्य में शब्द और वाक्य योजना की स्वाभाविकता और भावों के साथ इसका गठन और संयम इसकी परम विशेषता है। कहानी के गद्य में शब्द चयन और वाक्य-योजना ही भाषा की वह कलात्मकता है, जिसके विविध प्रयोग और रूपों से कहानीकार अपने भावचित्र को मूर्त करता रहता है। शब्द शक्ति का ज्ञान उसकी गंभीरता और संयम तथा विषय और वस्तु के अनुकूल उसमें परिवर्तन कहानी की भाषा शैली की मुख्य विशेषता है।"[1]

भाषा की इन विशेषताओं की दृष्टि से संजीव की अधिकांशतः कहानियाँ उत्कृष्ट श्रेणी की कही जा सकती हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में अवधी, मगही, ब्रज, उर्दू, हिंदी, हिंदी मिश्रित उर्दू, अंग्रेजी, बंगाली, संथाली, बुन्देलखण्डी आदि बोलियों का प्रयोग किया है।

बांग्ला का प्रयोग

चूँकि संजीव का पठन-पाठन पश्चिम बंगाल के कुल्टी से पूरा हुआ और उन्होंने नौकरी भी यहीं की, इसलिए इनकी कहानियों में बांग्ला भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है। **'ज्वार'** कहानी में तो यह भाषा बांग्लादेशी टोन में वार्तालाप शैली में स्पष्ट हुआ है जब कथानायिका अपनी मौसेरी बहन अणिमा दी को खोजने बांग्लादेश के सोनारदीघी जाती है–

"मैंने पूछा – दादा, एई ग्रामे नीहार सिंघॅ थाहेन कुथाय?" (भाई, इस गाँव में नीहार सिंह कहाँ रहते हैं?)

"नीहार सिंघा बोइल्ला काऊ रे तो जानी ना...।" (नीहार नाम के किसी आदमी को तो जानता नहीं!)

"सिंघॉ सब पलाई गेछे।" (सारे सिंह भाग गये हैं।) एक सम्मिलित ठहाके का श्लेष मुझे तेजाब-सा भिगो गया।

---

1. *लाल डॉ. लक्ष्मीनारायण, 'हिंदी कहानियों का शिल्पविधि का विकास', संस्करण : 1953, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या –300*

"आपनार बासा कुथाय?" (आपका घर कहाँ है?)"[2]

'सागर सीमान्त' कहानी में नसीबन कहती है –"हे अल्ला, एवार की हॅबे। (अब क्या होगा)? आमार लोकटा के फिरिए दाऊ (मेरे आदमी को लौटा दो)!"[3]

उन्होंने अपनी प्रारंभिक और सबसे प्रसिद्ध कहानी **'अपराध'** में भी बांग्ला भाषा का प्रयोग किया है –

"दीदी, तूमी बूझबेना। एइजे पूँजीवादी, सामोन्तोवादी, शिक्षा-व्योवस्था...!"

"चुप कोर! प्रोतिभा थाकले जे कोनो जाएगा थेके स्कोप कोरे नेवा जाय आर ना थाकले...।"[4]

अवधी का प्रयोग

संजीव का जन्म उत्तर-प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में हुआ है इसलिए उनकी मातृभाषा अवधी है। यद्यपि उनकी शिक्षा-दीक्षा पश्चिम बंगाल में हुई। परंतु गाँव से निरंतर उनका आना-जाना बना रहा और गाँव में हो रहे अत्याचार, शोषण और अमानवीय जाति प्रथा को अपने आँखों से देखा और भोगा। इसलिए इनके कथा-साहित्य में अवधी भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है। उन्होंने **'पिशाच'** कहानी में गाँव के सामंतवादी शोषण को पात्रानुकूल भाषा में दर्शाया है जहाँ महातम बाबा, बगीचे की रखवाली करते समय सो गए कथाकार के चाचा को थप्पड़ रसीद करते हुए फटकारते हैं –"सारे, इहै रखवारी कर रहे हो? इधर तुम सोई रहे हो तान के, उधर तुम्हारे बहनोई आम बीन लेई गए।"[5]

---

2. *संजीव, 'ज्वार' (कहानी संग्रह – गुफा का आदमी), दूसरा संस्करण : 2010, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 11*
3. *संजीव, 'सागर सीमान्त', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 190*
4. *संजीव, 'अपराध', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 80*
5. *संजीव, 'पिशाच', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 315*

'मरजाद' कहानी में भी अवधी का प्रयोग देखने को मिलता है –"तब तो कहा, अखण्ड रामायण होगा, हमरे पास मौके की ज़मीन नहीं है, देई दो काकी। हाय रे दइया, हम तो धरम का कारज समझकर दुई दिन के लिए देई दिए। आज जुतवाने गई तो क्या कहता है, 'इस पर पूजा हुई है, हल नहीं चलेगा।' अब कै दिन की जिनगानी है, तुम्ही बताओ, जीते-जी हड़प लेगा तो इस बुढ़ौती में हम कहाँ जाएँगे? राम के नाम पर यह तो सरासर डाका है।"[6]

'योद्धा' कहानी में भी गाँव का बिगडैल ठाकुर अवधु सिंह कथाकार के दद्दा लंगड़ लोहार को उनके द्वारा बनाये गए लोहे के हथियार का शिकार के वक्त टूट जाने पर फटकार लगाते हैं –"तोहरे चलते हमरी कितनी हतक भई, मालूम?"[7]

'जसी-बहू' कहानी में भी अवधी का प्रयोग परिलक्षित हुआ है –"भतार आवता का? मूड़ धोये बाटू! नीमी का तेल न होय तो हमसे लेई जाव!' ठकुराइन अम्मा बोलतीं। 'रहइ दो अइया, बाबा के आए पे काउ लगउबू?"[8] इसके अतिरिक्त **'मदद', 'जे एहि पद का अरथ लगावे' तथा 'प्रेरणास्त्रोत'** आदि कहानियों में अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।

मगही हिंदी मिश्रित प्रयोग

संजीव का कार्य-क्षेत्र औद्योगिक कस्बा कुल्टी रहा है। कोइलरी तथा विभिन्न कारखानों में मजदूरी के तलाश में यहाँ उत्तर-प्रदेश और बिहार के मजदूर आते रहे हैं। विभिन्न भाषाओं के मेलबंधन से ये मगही मिश्रित हिंदी का प्रयोग करते नजर आते हैं। संजीव ने अपने कथा-साहित्य में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। **'मदद'** कहानी में शकीला इसी भाषा में

---

6. *संजीव, 'मरजाद', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 207*
7. *संजीव, 'योद्धा' (कहानी संग्रह – गुफा का आदमी), दूसरा संस्करण : 2010, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 19*
8. *संजीव, 'जसी-बहू', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 121*

समाज द्वारा स्त्री के प्रति किये जा रहे दोहरे व्यवहार का पर्दाफाश करती है –"हमनियें पागल हैं ...? कोई चीज़ पाक हो कि नापाक, आग केकरो नयं छोड़ने वाला है जराने से, तो रमैन में झूठ काहे लिखत है कि सीताजी नयं जरा...? हमनियें पागल हैं कि हम गलत करें तो हमर दोसर सजा और हमार मरद कोई पाप करे तो ओकर दोसर सजा? ई खुदा के जबान है...? ऊ तलाक दे सके है, हम नयं?"[9]

'दुश्मन' कहानी में भी मगही हिंदी का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है –"गोस्सा के का बात? हमरे तो एके बात नय समझ में आवो है, जब तोरा पास कुच्छौ नय है तो तू फोकस कौन च़ीज का मारता है? हमर तोर झगड़ा होवेगा कौन बात पे! न तू हमर कोई, न हम तोर! हाँ, झूठ में मत जी तू दुर्गी, अउर न झूठ हमर के पढ़ाव!"[10]

'धनुष टंकार' कहानी में मजदूरनी सुरसती की भाषा में मगही हिंदी परिलक्षित होती है –"निरमल बाबू बतावो हलीं, घाटा हरामखोर अफसर, ठीकादार बाबू के चलते हैं, जे बिना कौनों काम कइले पइसा ले जाओ हैं। हमनी तो जान दे के काम करोहियो।"[11]

हिंदी-उर्दू मिश्रित

संजीव के कथा-साहित्य में बहुत सारे हिंदी-उर्दू मिश्रित शब्दों की भरमार है जो एक-दूसरे के पूरक के रूप में सामने आई हैं। जैसे 'लिटरेचर' कहानी में –"गोया कि आप सेठ तिरलोक चंदजी की बेटी हैं। बजा फरमाया आपने ...और आप...?"[12]

---

9. *संजीव, 'मदद', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 68-69*
10. *संजीव, 'दुश्मन', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 335*
11. *संजीव, 'धनुष टंकार', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 169*
12. *संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 27*

'मुर्दगाह' कहानी में हिंदी उर्दू मिश्रित शब्दों का प्रयोग हुआ है –"एक खौफजदा शर्मीले इनसान, दीये की लौ-सा थरथराता कलेजा ...। इस्लाम थोड़ा रुककर देखने लगा काँपती-धुँआती शिखा को। फिर शीशे को चढ़ाकर लौ को सम करते हुए बोल उठा, 'ऊपर से ओढ़ा गया पत्थर का नकाब...जो दरअसल कालिखजमा शीशा था – महज शीशा, एक बार चटखा कि फिर देखिए, हवा के थपेड़ों से घबराकर कैसे पनाह माँगती फिरती है लौ!"[13]

'प्रेरणास्त्रोत' कहानी में हिंदी उर्दू मिश्रित शब्दों का चित्रण कुछ इस प्रकार है –"हम दोनों ही एक-दूसरे के जीवंत अहसासों में तैरते रहे, मगर चिलमन न उसने हटाई, न मैंने; और आज आहटों के शेष होते ही चिलमन को चाक करके देखता हूँ तो सारा मंजर वीरान है।"[14]

'खिंचाव' कहानी में हिंदी उर्दू मिश्रित शब्दों का प्रयोग –"नट-बाजीगरों में एक अजीम शख्सियत हुआ करती थी। नाम था – शफी मुहम्मद! उसके दल का डेरा जहाँ भी गिरता, वह हिस्सा आबाद और गुलजार हो उठता।"[15]

संजीव की **'संतुलन', 'मक्तल', 'सागर सीमान्त'** आदि कहानियों में भी हिंदी उर्दू मिश्रित शब्दों का प्रयोग परिलक्षित होता है।

गढ़वाली का प्रयोग

संजीव ने अपनी कहानियों में पात्रानुकूल भाषा प्रयोग के दौरान गढ़वाली बोली का भी प्रयोग किया है। **'आरोहण'** तथा **'हिमरेखा'** कहानी में इस बोली के प्रयोग ने प्रभावात्मकता तथा रोचकता बढ़ा दी है। **'आरोहण'** कहानी में इसका प्रयोग परिलक्षित है –"ओय महीप-ऽ।

---

13. *संजीव, 'मुर्दगाह', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 201*

14. *संजीव, 'प्रेरणास्त्रोत', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 151*

15. *संजीव, 'खिंचाव', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 289*

तूई वकी जाणा छू (तू वहाँ जाएगा) ...आप लोग चले गए तो बैठ के मक्खी-ई तो मारणा है। घार बटी झगड़ा करी के पइसा कमाणा के वास्तेई तो आई छों।"[16]

"ल्या सुण ल्या एकइ बात।" तिरलोक बूढ़े ने सबको सुनाकर कहा, "यह कहता है कि यक रूप सिंह छै! चलो मान लिया! लेकिण फिर बोलूँ छै कि सरकार याको सिर्फ़ म्याल चढ़न कूँ वास्ते चार हज़ार तणखा देवे छूँ! यक क्या बात हुई? कैसी अहमक है यक सरकार भी!"[17]

'हिमरेखा' कहानी में सरपंच कौशिला देवी अपने पहाड़ी गाँव लाखा के निवासियों को पांडवों की संतान बताते हुए उसे माता कुंती के आदेशानुसार द्रोपदी के तरह घर के सभी पुत्रों के लिये एक पुत्रबधु के समर्थन में कपिल को समझाती हैं –"स्त्री ई तो घर को बाँधे है बेटा, एक से दो, हुई नईं कि मुआसा (परिवार) फूटा, खेत टूटा। जो हम पे मज़ाक करते हैं, उन्हें याँ रैना पड़े तो सारी हवा निकल जाए। ज़मीन बचाने के लिए। 'वाँ' भी ये-ई सब होवे है– तुझे मेरी बात पे शक हो तो जा के देख फिर से, चादर डाली जाती है, जूता रखा जाता है ...क्या नईं होता!"[18]

'भूमिका' कहानी में भी इस बोली का प्रयोग देखने को मिलता है –"भौत बड़ा काम किया, साब! भौत बड़ा!"[19]

'लाज-लिहाज' नामक कहानी में भी इस बोली के प्रयोग ने परिवेश को यथार्थ बना दिया है –"तीन भाइयों में एक-ई तो बैण थी वैसे तो अपणी बिरादरी में लड़की पैदा होते ही

---

16. *संजीव, 'आरोहण', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 308*

17. *संजीव, 'आरोहण', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 316*

18. *संजीव, 'हिमरेखा', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 378*

19. *संजीव, 'भूमिका', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 281*

नूण चटा देत्ते और इब तो डाग्दरों ने और भी सुविधा कर रखी है। पहले से ई पता कर लेते हैं, छोरा है कि छोरी। गर छोरी हुई तो गरभ में ही काम तमाम कर डालते हैं, पैदा होणे ही नहीं देत्ते।"[20]

बुन्देलखण्डी का प्रयोग

संजीव ने अपनी कहानियों में बुन्देलखण्डी बोली का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। **'खोज'** कहानी में इसे परिलक्षित किया जा सकता है –"मत भूलो वीरा कि सोलह ऊँटन पे लदि के आई रहो खजानो?" ...सोलह कलाओं वाली लक्ष्मी महारानी जहाँ सोइ रही हैं, वाँ पे सुख-समृद्धि का थाल धरा है। ...तो याको मतलब यों भयो कि बीजक के आठों पदों के तुक-ताल जोड़ सको, तो खजाना मिल जाए और न जोड़ सको, तो ...।"[21]

आदिवासियों की बोलियों का प्रयोग

संजीव अपनी बहुत-सी कहानियों में आदिवासियों की समस्याओं के लेकर मुखर हुए हैं। इसी संदर्भ में इन्होंने टीस, जीवन के पार, आप यहाँ हैं इत्यादि कहानियों में उनकी बोलियों का भी प्रयोग किया है। **'आप यहाँ हैं'** कहानी में इन जनजातियों के बोलियों का प्रयोग प्रभावात्मक ढंग से हुआ है –"देखो साहेब, अब से हमको सरकार-फरकार मत बुझाओ, सरकार को हम नै देखा। वो जो दाढ़ीवाला बड़ा अफीसर था, उसको देख के समझा, सरकार वोइसा होता, औ तुम जैसा छोटा अफीसर को देख के समझा, सरकार अइसा होता। तुम हमरा दरवाजा पे आया, तुमको हम रच्छा करेगा, तुमरा माफिक जानवर नै कि मार डालेगा जान से। चलो, गाड़ी में बैठो। ई लोग का माथा ठीक नै है।"[22] इसी कहानी में आदिवासी सामूहिक नृत्य का गीत भी है –

---

20. *संजीव, 'लाज-लिहाज', (कहानी संग्रह – झूठी है तेतरी दादी), प्रथम संस्करण : 2012, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 25*

21. *संजीव, 'खोज', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 163*

22. *संजीव, 'आप यहाँ हैं', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 164*

"स्वरग राज केतिक सुंदर हमार लगिन
सोना सा सिंगरलै, रूपा सजावारले,
भूख नखे, पियास नखे, ओहो रेऽऽऽ
जोर नखे, जुलुम नखे, लड़ाई-नखे, झगड़ो नखे, ओहोरेऽऽऽ"[23]

'जीवन के पार' कहानी में भी आदिवासी बोलियों का प्रयोग सार्थक रूप में हुआ है --"एकरा से का होगा? गाँव भर की चरवाही करके तू केतना जुगाड़ कर पाएगा मान? अरे, तनी अच्छा-अच्छा बैल और दस गो पाठा, आधा मन चाउर (चावल) और पाँच सौ रुपैया ले आ, तब जा के बामई का हाथ माँग।"[24]

'टीस' कहानी में बांग्ला मिश्रित आदिवासी बोली का प्रयोग हमें देखने को मिलता है --"अइसा छोटा बात काहे को बोलता भाइपो ...आप लोग मैनेजर बनेगा, मिनिस्टर बनेगा, ई धन्धा हम गाँइयाँ-गँवार को छोड़ दो। सँपेरा लोग का जीवन साँप कामड़ाने सेइ जाता। हमारा बाप भी अइसेई मरा था। मरते बखत हमको ऊ बोल के गिया – बेटा, ई धन्धा छोड़ के चासवास शुरू करना। हम किया भी। गाछ काट-काट के, पाथर हटा-हटा के खेत बनाया, मगर भाग्गो। (भाग्य) में येई लिखा था।"[25]

इससे यह स्पष्ट होता है कि कहानी के क्षेत्र में भाषाओं में विविधता पात्रानुकूल देखने को मिलती है।

शब्द योजना

संजीव का भाषा के उपर बहुत मजबूत पकड़ है। उन्होंने अपनी कहानियों को रोचक,

---

23. संजीव, 'आप यहाँ हैं', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 158

24. संजीव, 'जीवन के पार', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 130

25. संजीव, 'टीस', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 66

सफल, सार्थक एवं यथार्थवादी बनाने के लिए पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। इसी संदर्भ में उन्होंने अपने कथा-साहित्य में अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग भी किया है। जैसे –

संस्कृतनिष्ठ भाषा

सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत का प्रयोग इनके ज्यादातर रचनाओं में देखने को मिलता है। इस भाषा ने हिंदी को समृद्ध ही किया है। सभी रचनाकारों ने इस भाषा से अपने साहित्य को समृद्ध किया है। संजीव के कहानी साहित्य में इसका प्रयोग ज्यादा है। जैसे – पुष्पार्घ्य, उच्छवसित, द्रवित, शुभ्र, शैल- ृंगो, आवर्त, प्रतीक्षित, उद्‌गम।

अपभ्रष्ट शब्द

संजीव के कथा-साहित्य के अधिकांशतः पात्र, गरीब, दलित, अशिक्षित, किसान, मजदूर, आदिवासी इत्यादि हैं। इसलिए पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग क्षेत्र में अपभ्रष्ट शब्दों का प्रयोग ज्यादा हुआ है। जैसे – नेउर (नेवला), भुइँडोल (भूकंप), मरजाद (मर्यादा), बभना (बाभन), ठकुरवा (ठाकुर), कवलेज (कॉलेज), पारटी (पार्टी), परनाम ! परनाम ! ! (प्रणाम-प्रणाम), दिग्विजइया (दिग्विजय), डरेबरी (ड्राइवरी), निकारेंगे (निकालेंगे), महटराइन (शिक्षिका), इनिसपिट्टर (इन्स्पेक्टर) बिलाक (ब्लॉक), टरेनिंग (ट्रेनिंग), सिरिस्टी (सृष्टि), कितबिये (किताब)।

जोड़े के साथ आये हुए शब्द

दिन-रात, टूटी-फूटी, जहाँ-तहाँ, बीन-बटोरक, जीप-वीप, घोड़ा-वोड़ा, जाता-वाता, दायें-बायें, नियम-कानून, बाल-बच्चे, ठीक-ठाक, साफ-सफाई, देवर-देवरानी, "खेत-वेत, अस्त-व्यस्त, चूल्हे-चक्की, झाड़ू-पोंछा, भरी-पूरी, साफ-सुथरी।

द्विरूक्त शब्द

संजीव की कहानियों में द्विरूक्त शब्दों का प्रयोग भी धड़ल्ले से हुआ है। जैसे –मद्धम-मद्धम, घुटते-घुटते, सुर्ख-सुर्ख, बार-बार, तीन-तीन, अकेले-अकेले, गुलाबी-गुलाबी, नीली-

नीली, किस्म-किस्म, गम्म-गम्म, लुद-लुद, थकी-थकी, देखते-देखते भोर-भोरे शुरू-शुरू, धीरे-धीरे, चलते-चलते, नाचते-नाचते, घुट-घुटकर, खभर-खभर, खड़ी-खड़ी, झूकी-झूकी, कभी-कभी।

अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग

संजीव न अपनी कहानियों में पात्रानुकूल अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग भी किया है। जैसे –अख़बार, गलतफहमी, गुबार, मुखालिफ, महरूम, तालिम, मुकम्मिल, आमदा, जहनियत, कुफ्र, खौफ, वजूद, आलम, फकत, मुहलत, कशमकश, शख्सियत, चमन, खाविन्द, सुर्ख, परवान, बेशुमार, आबाद, जर्मी, मरकजी, मगरूर, तब्दील, बेजा, गुस्ताखी, दायरे, दास्तान, मलाल, नाजनी, "नकाब, अर्सा, जिक्र, फासिल्स, ज़ाहिर, दीदार।

अंग्रेजी शब्द

संजीव विज्ञान के छात्र थे। नौकरी भी उन्होंने फैक्टरी में की। इसलिए उनके कथा-साहित्य में विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली सहित बहुतायत अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। जैसे –फॉर्मेटिकल्स, स्कॉलरशिप, प्रैक्टिकल्स, मेडिकल, रिप्रेजेंटेटिब्स, प्रवोक, हिपनोटाइज, फेमिली, ऑफिस, जनरल, असिस्टेंट, नॉट बैड, हाउस-वाइफ, फास्ट-फूड, फास्ट-लाइफ, यूज ऐंड थ्रो, स्पोर्ट्स शू, कुकिंग डिवाइसेज, वैकुअम क्लीनर, काउंटडाउन, स्पेस, मॉड्यूल रीडिंग, ट्यूटर्स, पॉलिटिकल पावर, द बैरेल ऑफ द गन, न्यूक्लियर फीजन, हाइड्रोजन बम।

बांग्ला के शब्द

तुमी, बुझबेना, एइजे, थाक! थाक!, प्रोतिभा, थाकले, तोमार, जोद्वारा, एबार, हॅबे, आमार, लोकटा, फिरिए, दाउ, तुमी, केनो, गेले, बोउ, सोबाइ, बोलबो, बाबा, एराई, काकू, छीलो, मेरे।

अवधी के शब्द

संझा, कइसे, आइ, टिबिल, नाहीं, मोर, गोर, आन्हिर, गरबै, कइसन, इहै, रखवारी, अबहीं, अइया।

गढ़वाली के शब्द

केवास्ताँ, ल्या, सुण, यक, बोलूँ छै, म्याल, तण्खा, याको, गेछू, पैले-ई, कैला, समझते-ई, जां से।

वैज्ञानिक तकनीकी शब्द

संजीव की कहानियों में वैज्ञानिक तकनीकी शब्द प्रयोग की अधिकता है। जैसे– इंजीनियरिंग, न्यूक्लीयर फ्यूजन एँड फीजन, ब्लैक हॉल, बिग बैंग, एनर्जी, न्यूक्लीयस, हाइड्रोजन, फोर्स ऑफ ग्रैविटेशन, हीलियम, प्रकाशवर्ष, मिसाइल, इनसेट सैटेलाइट, टेस्टट्यूब बेबी, बस्टर रॉकेट, विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र प्रोटोन, वीडिओ स्क्रीन।

अंग्रेजी भ्रष्ट शब्द

बिलाक (ब्लैक), इस्कूल (स्कूल), ऊपर टैम (ओवर टाइम), इस्किराप (स्क्रैप), इस्टराइक (स्ट्राइक), पोडक्शन (प्रोडक्शन), लॉड स्पिच्चर (लॉउड स्पीकर)।

ध्वनार्थक शब्द

संजीव ने कहानी साहित्य में रोचकता एवं वातावरण निर्माण हेतु ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग किया है –"वह मगन मन हुक्का गुड़गुड़ाने लगा – गुड़गुड़ गुड़गुड़। गुड़गुड़ गुड़गुड़।।"[26], "कुण्डी में नाग महराज ऐंठन डाले पड़े थे। नजदीक आते ही – 'फों-ओं, भाग जाओ!"[27] "जहाँ गेरू 'बाँ-बाँ', कर रहे थे।"[28], "टप-टप चूता रहा महुआ"[29], "घोड़ो के खुर्रो से खट-

---

26. *संजीव, 'खोज', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 165*

27. *वही, पृष्ठ संख्या – 170*

28. *संजीव, 'उष्मा', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 187*

29. *संजीव, 'मरजाद', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 203*

खट, खर्र-खर्र के अस्फुट ताल"[30] चूँ-चूँ, चरर-चरर, गड़-गड़, गड़-गड़! चल पड़े है गाड़ी लेकर भैंसे! नाग पंचमी के दिन ढोल ढाक बजे रहे हैं शिव मंदिर में – धिधिंग धड़ाम! धिन धिन धिन धि धिंग धड़ाम

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि संजीव के कहानी साहित्य में संस्कृतनिष्ठ शब्द, अपभ्रष्ट शब्द, जोड़े के साथ आये हुए शब्द, द्विरूक्त शब्द, अरबी-फारसी, अंग्रेजी, बांग्ला, अवधी, गढ़वाली, वैज्ञानिक-तकनीकी, ध्वन्यार्थक आदि विविध प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है।

भाषा सौंदर्य के विविध उपकरण

संजीव ने अपने कहानी साहित्य में भाषा सौंदर्य तथा कथा की प्रभावात्मकता को बढ़ाने के लिए उपमा, मिथक, शब्द-शक्तियाँ, कहावतें, मुहावरों, सुकित्यों, एवं पहेलियों का प्रयोग किया है।

मिथक

संजीव ने अपने कहानी साहित्य में मिथकों का प्रयोग प्राचीन एवं नवीन दोनों संदर्भों में किया है। जैसे – "सगुनियों के बारे में कहा जाता है कि दुनिया की ऐसी कोई चीज़ नहीं, जिसे वे खोजने की ठान लें और न खोज निकालें। कब बाढ़ आएगी, कब सूखा, कब महामारी आएगी, कब अकाल, आकाश-मार्ग से कौन-सी प्रेतात्मा जा रही है और धरती के किस चप्पे के नीचे कौन-सा-रत्न छुपा है ...खोज के पहले वे उपवास रखते हैं, फिर परमवृक्ष की डाल लाकर पूजा करते हैं। इस डाल को लेकर चलने पर डाल की पत्तियाँ जहाँ खिलकर ताकने लगें, वहीं रुक जाते हैं; फिर बताते हैं – इसके नीचे खारा पानी है, इसके नीचे मीठा पानी, यहाँ सोना हैं, यहाँ चाँदी, यहाँ जवाहरात।"[31]

---

30. संजीव, 'आरोहण', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 309

31. संजीव, 'खोज', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 157

"कहते हैं, सोलह ऊँटों पर लदकर आया था खजाना, जिसे कौशलेंद्र ने मरने से पूर्व ही भूमिस्थ कर उसे मंत्रबिद्ध कर दिया था, ताकि प्रजा के आशीर्वाद से एक दिन, जब उनका पुनर्जन्म हो, तो वे इसे दोबारा भोग सकें।"[32]

'गुफा का आदमी' कहानी में बोंडा आदिवासी लड़कियों के कम कपड़ा पहनने और सर मुंडाये रहने के पिछे एक मिथक कार्य करता है –"पूछने पर मालूम हुआ कि वहाँ एक सीताकुण्ड है जहाँ बनवास के दौरान एक दफा सीताजी नहा रही थीं। जेठ का महीना था। शायद कपड़े-वपड़े नहीं रहे होंगे बदन पर। उन्हें ऐसी सूरत में देखकर कुछ बोंडा लड़कियाँ हँस पड़ीं। वो हँसी पहाड़ियाँ से टकराकर लौटी तो लगा, पहाड़ियाँ भी हँस रही हैं। बस खफा हो गयी सीताजी, गुस्से में सराप दे डाला, 'जाओ नंगी रहोगी।' तब से लड़कियाँ भी नंगी हैं, पहाड़ियाँ भी।"[33]

'भूमिका' कहानी में रामायण के पात्रों की चर्चा नये संदर्भ के साथ की गई है –"अकूत ताकत है हनुमान के पास, लेकिन जिसे अपनी ताकत का पता नहीं ...और उसका इस्तेमाल क्या हुआ? ...ज़िंदगी भर राजा रामचन्द्र की गुलामी करता रहा, जिन्होंने उसे रावण और मेघनाद के खिलाफ इस्तेमाल किया और रावण-मेघनाद का कसूर...? सिर्फ यह कि उन्होंने हरामखोर और ऐय्याश देवताओं और उनके पुरोहित ऋषियों को पकड़कर काम पर लगा दिया था ...दुश्मनी रावण से हो सकती है, चलो माना मगर लंका के साधारण लोगों ने उनका क्या बिगाड़ा था जो लंका में आग लगा दी और बेकसूर लोग-परिंदे और जानवर तक जल मरे, बच्चों तक को नहीं बख्शा?"[34]

---

32. संजीव, 'खोज', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 159

33. संजीव, 'गुफा का आदमी', (कहानी संग्रह – गुफा का आदमी), प्रथम संस्करण : 2012, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 112

34. संजीव, 'भूमिका', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 289

उपमान

संजीव के कहानी साहित्य में पात्रों के चरित्रों के सजीव चित्रण एवं यथार्थवादी परिवेश के निर्माण हेतु उसे उपमानों से पुष्ट किया गया है जो अत्यंत स्वाभाविक दिखते हैं –"रोड पर जा रहा है एक नम्बर का अजगर मुखिया पिनाकी महतो। जितना सरकारी पैसा और सामान गाँव के लिये मिलता है, सब साला के पेट में जाता। पीछे-पीछे जा रहा है 'उसका' लड़की पत्तो। ढेमना (धामिन) है ढेमना। बड़ा-बड़ा बी.डी.ओ., एस.डी.ओ., कोलरी मैनेजर, ठीकेदार का पा (पैर) बाँध के दूध पी जाता। कपड़ा और मूदीखाना का दुकानवाला सेठ लोग राजस्थान का पीवड़ा नाग है। सूबेदार रामबली राय गंगा के किनारे का चित्ती (करैत) है तो मुनीम जगेशर सिन्हा 'बोड़ा' साँप हैं। ...उड़ीसा का शंखचूड़ नाग देखना है तो उड़िया फ़ोरेस्ट अफ़सर 'दास' को देख लो। तक्षक देखना है तो कोलेरी मैनेजर बैनेर्जी को देख लो। दोमुँहा साँप अबी तक आप नहीं देखा तो यूनियन लीडर सिन्हा को देख लो...।"[35]

'पिशाच' कहानी में "महातम बाबा का पेट साक्षात अगस्त्य ऋषि की तरह था।"[36] **'कदर'** कहानी में –"चारों तरफ मरे साँपों की झूलती झालर के बीच भीगे चूहे-सा बैठा हुआ है बोदा।"[37] 'कदर' कहानी में "भगेलू साँप के मूँह से छूटे बेंग (मेंढक) की तरह कुलाँचकर भागता है।"[38] इससे प्रमाणित होता है कि संजीव के कहानी साहित्य में उपमानों और मिथकों का बहुतायत प्रयोग हुआ है।

---

35. *संजीव, 'टीस', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 63*

36. *संजीव, 'पिशाच', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 314*

37. *संजीव, 'कदर', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 177*

38. *वही, पृष्ठ संख्या – 172*

शब्दशक्तियाँ

संजीव का शब्द की विभिन्न शक्तियों तथा अर्थ-भेद की विभिन्न पद्धतियों, भेदों-प्रभेदों से गहरा परिचय है और इन्होंने इसका प्रयोग साहित्य को सफल, शक्तिशाली और प्रभावात्मक बनाने के लिए किया है। शब्द की अनेक अर्थच्छयाओं का सूक्ष्म और गहन विवेचन करते हुए आधुनिक पाठक को उसके अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति ही शब्द शक्ति है। काव्यशास्त्र में अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना नामक तीन शब्दशक्तियों को स्वीकृति दी गई है। संजीव के कथा-साहित्य में इसका प्रयोग परिलक्षित होता है। जैसे –"ओह! वह नज़र थी या कुदरत का बेमिसाल तोहफ़ा, जैसे वे आँखें अभी-अभी पैदा हुई थीं। पलकें अभी भी आँसू तोल रही थीं, मगर गर्दन खिली हुई, कोये सिंदूरी, जैसे घने कोहरे और अँधेरे को चीरते हुए सूरज की ताज़ा किरन फूटी आ रही हो।"[39]

'अपराध' कहानी में –"न्याय ...सोने और चाँदी के पात्रों में यह ज्यादा शोभता है"[40], "बोलो तो हम सींच दे तुम्हारा खेत।"[41], "मुर्शीदाबाद की गंगा की सोना-माछ है करीम बौ।"[42], "मछलियों का क्या है, सूख जाएँ, फिर भी बिक ही जाती हैं। मगर करीम बौ, मानुष का तन एक बार सूख जाए फिर नहीं बिकता।"[43]

---

39. संजीव, 'दुनिया की सबसे हसीन औरत', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 42

40. संजीव, 'अपराध', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 87

41. संजीव, 'जसी-बहू', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 123

42. संजीव, 'सागर सीमान्त', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 195

43. संजीव, 'सागर सीमान्त', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 199

संजीव की कहानियों के बारे में रविभूषण लिखते हैं –"जहाँ तक भाषा का प्रश्न है, संजीव की कथा-भाषा अलग से गहन विवेचन की माँग करती है। यद्यपि उनके कई पात्र अपनी भाषा न बोलकर कथाकार की भाषा बोलते हैं पर संजीव की कथा-भाषा दूर से ही ध्यान खींचती है। यह मुख्यतः अभिधा की भाषा है, पर यहाँ लक्षणा-व्यंजना के भी कुछ उदाहरण दिखाई पड़ते हैं। भाषा पर संजीव का अद्‌भुत अधिकार है।"[44]

मुहावरा

संजीव की कहानियों में पात्रानुकूल प्रभावात्मकता बढ़ाने के लिए मुहावरों का प्रयोग हुआ है जैसे –पगहा तुड़ाना, कुतुन्नी छाँटना, मुँह में दही जमना, हींग लगे ने फिटकरी, फिर भी रंग चोखा, पाँव डगमगाना, बेताल डाल पर, आधा तीतर आधा बटेर, नौ दो ग्यारह, तार-तार होना, भींगी लालमुनिया बनना, नाक-भौं सिकोड़ना, फब्तियाँ कसना, उल्लू बनाना, तेल देना।

सुक्तियाँ

"संजीव की कहानियों में मुहावरों एवं कहावतों के समान सुक्तियों का भी बहुतायत प्रयोग हुआ है। जैसे – "बैल की इज़्ज़त नहीं होती, साँड़ की इज़्ज़त होती है।"[45], "जिससे आदमी डरता है, उसी की कदर करता है।"[46], "ज़रूरी नहीं कि बहादुरी महज़ जीत का ही बाइस बने, उसकी हार भी सिंगार है।"[47]

---

44. लोढ़े रामचंद्र मारूति, 'संजीव व्यक्तित्व एवं कृतित्व', प्रथम संस्करण : 2012, ए.बी. पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या – 223

45. संजीव, 'कदर', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 172

46. वही, पृष्ठ संख्या – 173

47. संजीव, 'दुनिया की सबसे हसीन औरत', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 41

कहावतें

भाषा में चार चाँद लगाने के लिए संजीव ने कहानियों में मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग किया है जैसे –"कलेजा नोच-नोच कर खा जाना"[48], "गुड़ खाकर गुलगुले से परहेज"[49], "अकल का अंधा होना"[50]

पहेलियाँ

संजीव ने अपने कहानियों को मनोरंजक और प्रभावशाली बनाने के लिए पहेलियों का भी प्रयोग किया है। जैसे – 'माँ' कहानी में – "पास है जितनी, दूर है उतनी,
दूर है जितनी, पास है उतनी।"[51]

'खोज' कहानी में – "चंद्रकला चपला जहाँ सोवति,
रिद्धि और सिद्धि के थाल सना है।
जोड़े मिले अहरा-पहरा,
न जुड़े तुक-ताल तो काल घना है।
.....
बीच ते बीचि भई कमला,
न हिलैं, न मिलैं भ्रमसाल बना है।"[52]

---

48. *संजीव, 'मक्तल', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 45*

49. *संजीव, 'हलफनामा', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 52*

50. *संजीव, 'मदद', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 76*

51. *संजीव, 'माँ', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 141*

52. *संजीव, 'खोज', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 162*

संजीव ने अपने कहानी साहित्य को सशक्त, समृद्ध, सफल एवं प्रभावात्मक बनाने के लिए मुहावरा, उपमा, कहावतें, सुक्तियाँ, पहेलियाँ आदि का महत्वपूर्ण प्रयोग किया है।

वाक्य-विन्यास

संजीव ने अपने कहानी साहित्य को आकर्षक, यथार्थवादी और सफल बनाने के लिए भाषा-शैली के अनेक अंगों को अपनाया है। वाक्य-विन्यास को सफल बनाने के लिए कहीं अंग्रेजी-हिंदी मिश्रित वाक्यों का प्रयोग तो कहीं पूर्णतः अंग्रेजी वाक्यों के प्रयोग से भी नहीं हिचकिचाये हैं। उन्होंने कहीं-कहीं डॉटवाले चिन्हों का प्रयोग किया है तो कहीं-कहीं घोषणाओं से प्रयुक्त वाक्यों का भी प्रयोग किया है।

अंग्रेजी हिंदी मिश्रित वाक्य

वैश्वीकरण के इस दौर में आज मनुष्य बहुत सारे अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करता है। संजीव ने भी चरित्रों की उसी मानसिकता को दर्शाने के लिए हिंदी के साथ अंग्रेजी मिश्रित वाक्यों का प्रयोग किया है। जैसे 'हलफनामा' कहानी में – "ये विडियो मॉनीटर्स हैं, इन पर सारा व्यू आता रहता है, कौन किस टाइम क्या कर रहा है, किससे गॉशिप कर रहा है, उसके फेशियल एपीयरेंस यानी चेहरे के रंग कैसे बदल रहे हैं – सारी ऐक्टीविटीज वाच की जा सकती हैं, कंप्यूटर से उन्हें एनलाइज कर इन्फरेंस भी ड्रॉ किया जा सकता है। कोई बेजा हरकत देखो, उसे 'मेमोरी' में ले लो और रिपोर्ट भी –ओ.के.?" सेठ में जब-जब आत्महीनता का कीड़ा कुलबुलाता हिंदुस्तान के अधिसंख्य बुद्धिजीवियों की तरह इसी तरह 'हिंगलिश' में की लीद करने लगता।"[53]

'काउंट डाउन' कहानी में –"बाइ द वे, उस फोटोसिंथेटिक सोलर ऑक्सीजन प्लांट का परफार्मेंस क्या है? इसके फुल डॉटाज हमें चाहिए। तुम्हारा मीटर खराब है कोई कमांड मेसेज

---

53. संजीव, 'हलफनामा', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 55

नहीं भेज रहा है?"[54]

'ब्लैक होल' कहानी में –"कोचिंग पर ही टोटली डिपेंडेंट नहीं थी मैं। मैं खुद टैस्ट लेती प्रताप का, मज़ाक़ है, वह डेवियेट कर जाए।"[55]

'मक्तल' कहानी में –"और आप हैं श्री शान्तनू बोस, द सीनियर मोस्ट मैन ऑफ दिस बिल्डिंग, आल राउंडर! यही आपको आपके जॉब के बारे में भी बताएँगे।"[56]

'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' कहानी में –"सर, ये सारे शॉट्स लांग शॉट्स हैं, इसलिए..."

"क्यों है लांग शॉट्स? क्लोज शॉट्स लेने से आपको किसने मना किया था?"[57]

इससे प्रमाणित होता है कि संजीव के कहानी साहित्य में अंग्रेजी मिश्रित हिंदी शब्दों की भरमार है।

पूर्ण अंग्रेजी वाक्य

संजीव ने अपनी बहुत-सी कहानियों में चरित्रों के अनुसार पूर्ण अंग्रेजी वाक्यों का भी प्रयोग किया है। जैसे –

'अपराध' कहानी में –"पॉलिटिकल पावर फ़्लोज फ्रोम द बैरेल ऑफ़ द गन!"[58]

---

54. संजीव, 'काउंट डाउन', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 358

55. संजीव, 'ब्लैक होल', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 259

56. संजीव, 'मक्तल', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 43

57. संजीव, 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 73

58. संजीव, 'अपराध', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 79

'ब्लैक होल' कहानी में –"कैलुकुलेट द रिवोल्विंग स्पीड, द डिस्टेंस, द एकुरेट पोजीशन ऐंड शॉट?"[59] "ए डल फादर कैन प्रोड्यूस ओनली ए डल बेबी।"[60]

'काउंट डाउन' कहानी में –"आय'म रीयली प्राउड ऑफ हिम! ऐंड यू! द ग्रेट मदर ऑफ द ग्रेट सन!"[61]

'लिटरेचर' कहानी में –"यू आर टू एकम्पैनी माय पापा; ओ.के.!"[62]

'सीपियों का खुलना' कहानी में –"आइ हेट सच शॉर्ट ऑफ इंपोज्ड लव।"[63]

'अपराध' कहानी में – "शी हैड बिन ब्रूटली बूचर्ड लांग एगो।"[64]

छोटे-छोटे वाक्य

संजीव ने अपनी कहानियों में छोटे-छोटे बहुसंख्यक वाक्यों का प्रयोग किया है जिससे कहानी में ग्राह्यता, नाटकीयता और सरलता का संचार हुआ है और पाठक समुदाय तक संप्रेषणीयता बढ़ी हैं। जैसे **'लिटरेचर'** कहानी में –

---

59. संजीव, 'ब्लैक होल', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 258

60. वही, पृष्ठ संख्या – 258

61. संजीव, 'काउंट डाउन', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 360

62. संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 29

63. संजीव, 'सीपियों का खुलना', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 258

64. संजीव, 'अपराध', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 95

"आपकी सबसे प्यारी चीज क्या है?"

"मतलब?"

"घबराइए नहीं, यूँ ही पूछ रहे हैं।"

"पिता जो मार दिए गए, माँ जो जीते जी मर गई।"

"वेल, अपने माता-पिता की शपथ लेनी पड़ेगी आपको।"

"क्यों?"

"क्योंकि इसके बाद जो चर्चा होगी, उसे आप डिसक्लोज नहीं करेंगे।"

"और शपथ लेने के बाद भी डिसक्लोज कर दूँ तो?"

"तब तो आप में राजनेता और बड़े अफ़सरों के सारे गुण पहले से मौजूद हैं।"[65]

'जो एहि पद का अरथ लगाये' कहानी में –

"नुनू बाबू ससुराल जा ही नहीं पा रहे हैं।"

"अब कौन-सी समिस्सा उठ खड़ी हुई?" अंजू ने पूछा

"शुभ लगन नहीं मिल रही है।"

"इतनी लगन है, फिर भी"

"अरे आप न-न समझती हैं।"[66]

'धुन्ध और धुन्ध' कहानी में –"कोई बात नहीं! चलिए खाना खाया जाए। कल आप जहाँ जाना चाहें चले जाएँगे। आपकी उचित जगह यह नहीं।"[67]

---

65. संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 44

66. संजीव, 'जो एहि पद का अरथ लगावै', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 388

67. संजीव, 'धुन्ध और धुन्ध', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 282

घोषणाओं से प्रयुक्त वाक्य

संजीव ने अपनी कहानियों में यथार्थवादी और स्वाभाविक दृश्यों की सृष्टि के लिए अनेक घोषणाओं से प्रयुक्त वाक्यों का प्रयोग किया है – नेता' कहानी में मजदूर युनियनें एक-दूसरे के खिलाफ नारेबाजी करती हैं –

"पोसी-युनियन ! पोसी युनियन... !"

"हाय-हाय !"

"मैनेजमेंट के पिट्ठू।"

"हाय-हाय ! मिसराजी नहीं मिस राजी ! मिस राजी हाय ! हाय !"[68]

'धनुष टंकार' कहानी में मजदूर अपने माँगो को लेकर जुलूस निकालते हैं एवं नारेबाजी करते हैं –

"इन्कलाब ! यूनियन के प्रेसीडेंट तपादार बाबू ...नेतृत्व करने।

"जेंदाबाद !"

"हमारी माँगें !"

"जेंदाबाद !"

"ऐं ! सब चौपट ! अरे बोलो – देनी होंगी !"[69]

'कन्फेशन' कहानी में श्रमिक नेत्री पल्लवी दी के पक्ष में मजदूर नारे लगाते हैं –

"पल्लवी दी जिन्दाबाद !"

"जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद !"

---

68. संजीव, 'नेता', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 30

69. संजीव, 'धनुष टंकार', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 172

"साहा बाबू अमर हैं।

"अमर हैं! अमर हैं!"[70]

संजीव की कहानियों में मजदूर अपनी माँगों और अन्याय के खिलाफ आंदोलन करते हैं। इन्कलाब, जिन्दाबाद का नारा लगाते हैं। आंदोलनों और नारों के माध्यम से सरकार और पूँजीपतियों पर हल्ला बोलते हैं।

अतः संजीव ने अपनी कहानियों को रोचक एवं प्रभावी बनाने के लिए वाक्य-विन्यास में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग, अंग्रेजी-हिंदी मिश्रित वाक्यों का प्रयोग, पूर्णत अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग, छोटे-छोटे भाषणों एवं नारों आदि का प्रयोग किया है।

शिल्प का अर्थ और स्वरूप

'शिल्प' शब्द का अर्थ है कारीगरी। साहित्य के क्षेत्र में हम इस कारीगरी को रचना के बाह्य रूप में देख सकते हैं। यह अंग्रेजी के स्ट्रक्चर, फार्म, टेकनिक, क्राफ्ट, पैटर्न, डिजाइन आदि का पर्याय है। हिंदी शब्द सागर में, "हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम, दस्तकारी जैसे – बर्तन बनाना, कपड़े सीना, गहने गढ़ना आदि। रूप, कला-संबंधी व्यवसाय, दक्षता, कौशल, चातुर्य, रचना, आकार, आवृत्ति आदि।"[71] टेकनिक का अर्थ हम किसी विषय के निर्माण के तंत्र, पद्धति, नियम, सिद्धांत से ले सकते हैं। किसी भी रचना का निर्माण बिना शिल्प के संभव नहीं है। जब-जब कथाकार की संवेदना किसी रचना में ढ़लती है तो उसका कोई न कोई खास रूप, उपादान के माध्यम से ही पाठकों तक पहुँचेगी। शिल्प से ही रचना का सौंदर्य उजागर होता है। साहित्य के प्रत्येक विधा की शिल्प अलग-अलग होती है। शिल्प का अर्थ के संबंध में डॉ. जवाहर सिंह का मत है –"किसी चीज को बनाये या रचने का 'ढंग'

---

70. संजीव, 'कन्फेशन', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 268

71. दास श्याम सुंदर (संपा), 'हिंदी शब्द सागर', नवां भाग, पृष्ठ संख्या – 4751

अथवा 'तरीका', किसी वस्तु के रचने की जो-जो विधियाँ अथवा प्रक्रियाएँ होती हैं। उनके समुच्चय का शिल्प विधि"[72] कहा जाता है। आसान शब्दों में कहें तो शिल्प का अर्थ हाथ से कोई वस्तु तैयार करने या दस्तकारी से है। प्रत्येक कहानी के शिल्प में भी भिन्नता पाई जाती है।

शिल्प के स्वरूप पर विमर्श करते हुए इस बात पर विचार किया जाता है कि क्या कथ्य खुद अपने अनुरूप शिल्प का निर्माण कर लेती है। क्या शिल्प कथाकार के मस्तिष्क में रहता है। परंतु यह पूर्णतः सत्य नहीं है। शिल्प अपने आप नहीं बनता, उसे बनाना पड़ता है। क्योंकि जिस प्रकार एक गीत की प्रस्तुति अलग-अलग रागों में की जा सकती है, उसी प्रकार एक कहानी का शिल्प भी अलग-अलग हो सकते हैं। किसी भी लेखक के शिल्प के अंतर्गत हम उस लेखक के द्वारा प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न विधियों-प्रविधियों, क्रियाओं-प्रक्रियाओं एवं रचनागत कौशल को अभिव्यक्त करने के तरीके को देखते हैं। सबसे पहले रचनाकार अपने परिवेश से समाज की सच्चाईयाँ, मनुष्य के हालात, मानवीय संवेदनाओं एवं परिवेश के यथार्थ को ग्रहण करता है। सभी संवेदनाएँ अनुभूतियाँ नहीं बनती हैं। उनमें से कुछ अनुकूल संवेदनाओं को लेकर उसके मन में भावों का उद्वेलन होता है। वह अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए उसे तथ्यों की कसौटी पर कसकर उससे आत्म-साक्षात्कार करता है। अब उसमें कल्पना और बिंब-विधान का समावेश कर किसी न किसी माध्यम या विधि द्वारा उस सच्चाई को रचना के रूप में पाठक के सामने प्रस्तुत करता है। इस प्रक्रिया में रचनाकार को अपनी रुचि तथा पाठकों की अभिरुचि के साथ सामंजस्य बैठाना पड़ता है। वह अपने विषय को प्रभावात्मक एवं आकर्षक बनाने के लिए आवश्यकतानुसार नई-नई शिल्प का प्रयोग करता है। अपनी रचना को अलग-अलग दृष्टियों से देखने का प्रयास करता है। साहित्यकार ने अपनी रचना में जो कुछ भी कहा है, वह उस रचना का भाव-वस्तु है तथा जिस ढंग से या पद्धति से कहा है, वह उस रचना का शिल्प-विधान है।

---

72. लोढ़े रामचंद्र मारूति, 'संजीव व्यक्तित्व एवं कृतित्व', प्रथम संस्करण : 2012, ए.बी. पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या – 189

यद्यपि जैनेंद्र जी का भी मानना है –"मुझे ख्याल होता है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि कहानी कला या शिल्प ही नहीं बल्कि सृष्टि हो। हर शिशु अपना बनाव और अपना स्वभाव लेकर जनमता है।"[73] परंतु यह सत्य नहीं है। शिल्प अर्जित किया जाता है। परंतु इसे सिर्फ यंत्र के समान अर्जित नहीं किया जा सकता। इसमें कल्पना का समावेश करना पड़ता है। एक प्रतिभासंपन्न समृद्ध कल्पनाशील व्यक्ति ही इस कला को अर्जित कर सकता है। स्वयं संजीव का भी मानना है कि कहानीकार के सरोकारों एवं संस्कारों का भी शिल्प पर गहरा प्रभाव पड़ता है इसीलिए एक ही घटना पर केंद्रित कहानियों के शिल्प में भिन्नता पाई जाती है। कहानी के आरंभ से लेकर अंत तक अर्थात विषय चयन, पात्रों की प्रस्तुति, संवाद सबकुछ उसके निजी पसंद-नापसंद तथा निजी धारणाओं के इर्द-गिर्द होता है। संजीव स्वयं एक प्रयोगधर्मी कलाकार हैं। वे अपनी रचनाओं में अलग-अलग शिल्प का प्रयोग करते रहे हैं।

वस्तु शिल्प

किसी भी रचना के दो तत्व होते हैं –वस्तु और विन्यास। वस्तु अर्थात कथ्य, उस विषय की बात, जिसे लेकर रचनाकार ने अपनी कृति रची और विन्यास यानी कथ्य को कहने का तरीका। कथ्य को अभिव्यक्त करना और सभी तत्वों का उचित समायोजन करना ही शिल्प का कार्य है। कहानीकार के संस्कारों और सरोकारों का उसके शिल्प पर प्रभाव पड़ता है। कहानी लेखन भी एक प्रकार की कला है और अन्य कलाओं की भाँति कहानी लेखन कला में सुधार की पर्याप्त गुंजाइश बची रहती है। रचना का प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की प्रणाली शिल्प-विधि है। कहानी शिल्प के विषय में डॉ. सुरेश सिन्हा का विचार है –"कहानी लिखने के लिए कहानीकार को कहीं भटकना नहीं पड़ता, वह जो जीवन जीता है उसी से कहानियों की प्रेरणा भी लेता है। उस जीवन से जिया संवेदनशील घटना को चुन लेता है और इसे शब्दों में अत्यंत सूक्ष्मता एवं कुशलता से बाँधने का प्रयत्न करता है। इसके लिए अनेक उपकरण जुटाने पड़ते हैं। यह विभिन्न उपकरण ही वस्तुतः कहानी के तत्व होते हैं, जिनसे

---

73. जैनेन्द्र, 'साहित्य का श्रेय और प्रेय', प्रथम संस्करण : 1953, एडीसन-3, पूर्वोदय प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 322

मिलकर एक कहानी की रचना होती है।"[74] एक सफल कहानी के लिए प्लॉट की मौलिकता एवं उसकी रोचक प्रस्तुति आवश्यक है नहीं तो वह पाठक को बाँधने में असफल हो जाएगी। कहानी में कुछ नयापन अवश्य होना चाहिए। यह नयापन वस्तु और विन्यास दोनों के समिश्रण से संभव है।

एक सफल कहानी के लिए उसमें संक्षिप्तता, सजीवता, स्वाभाविकता, विश्वसनीयता, उत्सुकता आदि गुणों का समावेश होना आवश्यक है। संजीव ने अपने कहानी साहित्य में आम ग्रामीण, किसान-मजदूर, दलित, आदिवासी, कारखाना-श्रमिक, सरकारी दफ्तरों के कर्मचारी, बेरोजगार, विस्थापित, ट्यूटर, नक्सली, पूँजीपति, पुजारी, पुलिस, सूदखोर, डॉक्टर, खिलाड़ी, रिक्शा चालक, अभिनेत्री, सेठ-साहूकार, छात्र, बच्चे, सब्जी बेचने वाली युवती, नौकरानी, रखैल, वृद्ध, वैज्ञानिक, जज, शिक्षक, अवसरवादी नेता आदि की टोह ली है। संजीव की कहानियों में वर्गभेद और वर्णभेद का चित्रण स्पष्ट है। यह आम जनता की व्यथा-कथा है। संजीव की कहानियों के बारे में डॉ. रविशंकर सिंह का मानना है –"संजीव की कहानियाँ न तो सूचनाओं से आतंकित करती हैं और न ही उसे अद्‌भुत लोक में भटकाती हैं, जहाँ आबनूसी टेबुल, जंग खाई लोहे की कुर्सियाँ, तिलस्मी अंधेरा और केवल मानसिक विकृति के शिकार पात्र होते हैं। उनकी कहानियाँ बड़े प्यार से पास बुलाकर आम आदमी के जीवन और उनके दुःख-दर्द, हर्ष-उल्लास से अवगत कराती हैं। उनकी कहानियों में यथार्थ और कला का इतना सम्यक् परिपाक हुआ है कि कहीं भी कथारस बाधित नहीं होता। वे हर हाल में कहानीपन को जिलाए रखते हैं। संजीव की कहानियों को समझने के लिए न तो किसी बोर्खेज या मोर्खेज को पढ़ने की जरूरत है और न शास्त्रों के गुढ़ रहस्यों को। संजीव की कहानियों को जानने के लिए जीवन को जानना जरूरी है, जो उनका उपजीव्य है।"[75]

---

74. सिन्हा डॉ सुरेश, 'हिंदी कहानी उद्‌भव और विकास', प्रथम संस्करण : 1967, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 9-10

75. काशिद गिरिश (संपा.) 'कथाकार संजीव',आलेख डॉ. रविशंकर सिंह, 'संजीव की कथायात्रा : एक मूल्यांकन', संस्करण : 2008, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 150

अतः इससे स्पष्ट होता है कि संजीव ने अपनी कहानियों में वंचितों-शोषितों की आवाज उठाकर अनेक अनछुए पहलुओं को छुआ है। उनकी कहानियों में विषय विविधता की भरमार है।

कहानी का आरंभ

कहानी की सफलता के लिए कथावस्तु का ठोस, सुसंबद्ध एवं प्रभावात्क होना आवश्यक है। शुरुआती दिनों में कहानी की रचना वर्णनात्मक रूप में हुआ करती थी। घटना का प्रारंभ, उसका विकास और फिर परिणति। लेकिन अब इसे अनिवार्य नहीं माना जाता है। कहानी का प्रारंभ अनेक प्रकार से किया जा सकता है। दो पात्रों के मध्य वार्तालाप द्वारा, किसी चरित्र के अंतर्द्वंद्व या भाषण द्वारा, दो चरित्रों के बीच टेलिफोन के संवाद द्वारा, डायरी या पत्र शैली में। कहने का तात्पर्य यह है कि कहानीकार के पास यह अधिकार होता है कि वह कहानी को उसके तथ्य के अनुसार आरंभ, विकास और परिणति में संजोये। यह आवश्यक भी नहीं कि कहानी का कोई निश्चित अंत हो। बहुत से कहानीकार आजकल अंत का कुछ हिस्सा आरंभ में ही चित्रित कर कहानी को पूर्वदीप्ति पद्धति में लेकर चलते हैं और कहानी को आकर्षक बनाते हैं। अब कहीं-कहीं कहानी चरम परिणति पर पहुँचकर समाप्त होती है तो कहीं-कहीं पाठक में उत्सुकता का संचार करती हुई मध्य में ही। पाठक के मन पर गहरा असर छोड़ने के ये सारे तरीके हैं जो कहानीकार द्वारा अपनाये जाते हैं। कहानी के विषय में डॉ. गुलाबराय के ये विचार सार्थक परिदृश्य होते हैं। –"कहानी के आरंभ में अंत का थोड़ा-सा संकेत रहना वांछनीय रहता है, जिससे अंत अप्रत्याशित होते हुए भी नितांत आकस्मिक न लगे। यद्यपि कहानी की गति उपन्यास की-सी वक्र नहीं होती तथापि एक-दो घुमाव उसकी रोचकता को वढ़ा देते हैं। जीवन का प्रवाह भी संघर्षमय है। वह भी भुजंगम गति से चलता है। कहानी उससे भिन्न नहीं हो सकती। कहानी में कई घटनायें हो सकती हैं और होती है, किंतु उनमें एकता और अन्विति आवश्यक होनी चाहिए। चरम सीमा का संबंध प्रायः मूल घटना से होता है।"[76] संजीव ने विभिन्न प्रकार से अपनी कहानियों की शुरुआत की है।

---

76. श्रेत्रिय प्रभाकर (संपा.), 'वागर्थ', जनवरी 1998, पृष्ठ संख्या – 27

वार्तालाप द्वारा

कहानियों का आरंभ दो पात्रों के मध्य वार्तालाप द्वारा होता है और इस वार्तालाप के द्वारा ही जितना संभव हो घटनाओं, स्थितियों और भावों का वर्णन संक्षिप्त और सांकेतिक रूप में पाठक को मिल जाता है जिससे पाठक में कहानी को आगे पढ़ने की रुचि जगती है। जैसे–

"यह न तो शादी है, न सहजीवन!" तारीक अली ने तत्वज्ञानी की तरह आँखें मूँद लीं।

फिर क्या है?" पहेली हमारे सामने शीर्षासन कर रही थी।

प्रेम?"

"आक-थू!" मनतोष प्रतिक्रिया व्यक्त करने में आगे था।

"व्यभिचार?" जयंत ने नाक सिकोड़कर मुँह ऊपर उठाया तो उसकी मूँछें साही के काँटों की तरह खिल उठीं।

"च्चा!" तारीक ने इस फौरी निष्कर्ष को अपनी विशिष्ट शैली में खारिज कर दिया।

"विद्रोह?"

"च्चां!"

"नारी मुक्ति?"

"च्चा!"

"उत्तर आधुनिकता?" मैंने साहित्यिक गुंजलक़ फेंकी।"[77]

"वह जो पहाड़ी पर ढहती हुई गढ़ी हमने देखी थी, वह राय साहब की थी, और जो बायीं ओर की दोमंजिला कोठी झलक रही है, यह लाल साहब की है। याद रहे सामने आते ही जूते उतार लेना, नज़र नीची रहे" दूबे ने मोटरसाइकिल धीमी करते हुए मुझे चेताया।

"क्यों?"

"यही दस्तूर है।"

---

77. संजीव, 'खयाल उत्तर आधुनिकी', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 235

"मैं कटकर रह गया। पाँच साल से नौकरी के लिए भटक रहा था। कहीं लग जाती तो यहाँ आता ही क्यों!"

"यहाँ तो मन्त्री-वन्त्री, डी.एम., एस. पी भी आते रहते हैं।"

"यह नियम हमारे-तुम्हारे जैसों के लिए है। वैसे कई अधिकारी भी...।"

"ये राय साहब और लाल साहब क्या चीज़ हुए?"

"यह तपे-तपाये राजा-रजवाड़ों का इलाका है। ऊँचे खानदान की रानियों से राजा-साहब के जो लड़के पैदा हुए, वे 'राय साहब' कहलाये और रखैलों से जो हुए, वे 'लाल साहब'।"[78]

"क्यों साब, ट्रेन दो घण्टे लेट है क्या?" मैं किसी पत्रिका में डूबा हुआ था कि यह सवाल आया।

"एनाउंसिंग से तो ऐसा ही लगता है।" मैंने यूँ ही सर गड़ाए हुए जवाब उछाल दिया।

"आप लेखक हैं न?" प्रश्नकर्ता के दूसरे सवाल पर मैंने चौंककर आँखें ऊपर उठाई। एक तीस-पैंतीस साल का औसत कद-काठी का कोई परेशान-सा युवक था। शायद मुझे जानता भी था।

"क्यों?"

"आपके पास वक्त हो तो एक प्लॉट मैं दूँ आपको।"

"मान न मान, मैं तेरा मेहमान! मुझे थोड़ी झुँझलाहट हुई। आपको परेशानी न हो तो उस काठबादाम पेड़ के पास चलें, वहाँ एकांत है।"

"मुझे आदमी थोड़ा खब्ती लगा। कोई बात नहीं, यहाँ भी चलेगा।" कहकर वह बेंच पर मेरे बगल में धस्स-सा बैठ गया और मेरी अवज्ञा को गर्द की तरह झाड़ते हुए वह शुरू हो गया...।"[79]

---

78. संजीव, 'दस्तूर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 240

79. संजीव, 'वांछित-अवांछित', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 296

"बूझो तो वह कौन है!" मामी की तर्जनी जादू की छड़ी की तरह उस लड़की की ओर तनी हुई थी जो कई हमजोली सहेलियों के साथ सिन्दूरी झाँई वाले पीले अमरूदों का मोलभाव कर रही थी। जैसी लड़की, वैसे अमरूद! गजब का मैच! वह पहली ही नजर में फिदा हो गया था। जाने क्या हुआ वे अमरूद की दुकान से भरभराकर भागीं और जा धमकीं कंघी-चोटी-फीता-आलता की दुकान पर।

"लो, नजर लग गई न तुम्हारी!"

"आखिर वह है कौन?"

"अरे, यही तो है वह लड़की, जो तुम्हारी लड़ाका माँ और चुगलखोर बहन को ठीक करने तुम्हारे घर आने वाली है! नहीं पहचान पाए न? पहचानोगे भी कैसे भानजे, विवाह के बखत तो तुम्हें धोती भी बाँधनी नहीं आती थी।"[80]

वर्णन द्वारा

संजीव ने अपनी बहुत-सी कहानियों की शुरुआत वर्णन द्वारा की है जैसे –

"कायदे से देखा जाए तो वह हवेली उस लंबी औषधीय प्रयोगशाला का ही अंग थी, जो अलग भी थी और संयुक्त भी, और जहाँ करीने से चूहे, गिनीपिग, बंदर और दूसरे जंतु प्रयोग के लिए अलग-अलग खाँचों में बंद थे ...जो भी नौकर-चाकर या सुरक्षा-प्रहरी थे, बाहर बुतों की मानिन्द खड़े थे। ...वह बैठकखाना था ...टेबुलों पर मुख्यतः अंग्रेजी और फिर हिंदी समेत दूसरी भाषाओं की पत्र-पत्रिकाएँ और अख़बार थे ...मोटे-मोटे पिलर थे जिन पर नाना प्रकार की भंगिमाओं वाला उत्सवव्रता यक्षिणियों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण थीं, जिनके वजनी स्तन और नितम्ब खासतौर से ध्यान खींचते थे। यक्षिणियाँ कहीं शंख फूँक रही थीं, कहीं मृदंग बजा रही थीं, कहीं आईना देख रही थीं ...कुल मिलाकर मुझे लगा जैसे मैं किसी अजायबघर में आ पहुँचा हूँ, कई-कई सदियों पीछे...।"[81]

---

80. संजीव, 'अन्तराल', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 224

81. संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 21

माँ बताती थीं कि हम फरीदपुर के 'सोनारदीघी' गाँव से आये हैं, जो अब पाकिस्तान में है। सन् 71 में 'बांग्लादेश' बन जाने के बाद भी वे इसे 'पाकिस्तान' ही कहती रहीं। उस पार से आये कई बंगाली *'ओ पार बांग्ला, ए पार बांग्ला'* (उस पार का बंगाल, इस पार का बंगाल) कहकर दोनों को जोड़े रहते, माँ ही ऐसा न कर सकीं। जाने कौन-सी ग्रंथि थी! ऐसा भी नहीं कि 'उस पार' के लिए उन्होंने अपने खिड़की-दरवाजे पूरी तरह से बंद कर लिये थे। 'इस पार' आ जाने के बाद भी काफी दिनों तक उनकी जड़ें तड़पती रहीं वहाँ के खाद-पानी के लिए– वे लहलहाते धान के खेत, नारियल के लंबे-ऊँचे पेड़, आम-जामुन के स्वाद, चौड़ी-चौड़ी हिलकोरें लेती नदियाँ, नदियों के पालने में झूलती नावें, रात में नावों की लालटेनों से लहरों पर दूर तक फैली ललाई, सँवलाई-सँवलाई रातों में नावों से उड़-उड़कर आते भाटियाली गीत-

"मॅन माझी तोर बइठाले रे,
आमी आर बाइते पॉरलॉम ना;
बाइते-बाइते जीवॅन गेलो,
कूलेर देखा पाइलॉम ना।"[82]

"होटल के दूसरे तल्ले पर एक खिड़की है। खिड़की के बाहर दूर-दूर तक चिहराई हुई विवर्ण धरती, धरती के सीने पर खूँटे-से गड़े, कुछ ठूँठ पेड़, पेड़ों के आगे धूप में धुँधुआते इक्के-दुक्के घरौंदे। खिड़की के सामने एक टेबल है, टेबल पर ऐश-ट्रे, ऐश-ट्रे में अभी-अभी मसला गया आठवाँ सिगरेट, सिगरेट के धुएँ में डूबते रेक पर पान के कुछ खुले कुछ अनखुले बीड़े। बगल में तीन चौथाई खाली हो चुकी दारू की बोतल और गिलास। इनसे घिरी एक डायरी है, डायरी में स्प्रिंगदार दो पंक्तियाँ और बकरी की लेड़ी-से छितराए शब्दों के कुछ स्पेयर पाट्र्स। इस समूचे परिदृश्य में टेबल के सामने कुर्सी पर बैठा हुआ वह आदमी परेशान-परेशान है।"[83]

---

82. *संजीव, 'ज्वार', (कहानी संग्रह – गुफा का आदमी), प्रथम संस्करण : 2012, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 9*

83. *संजीव, 'तुक, ताल, लय, मात्रा और छन्द', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 121*

"लगातार-बारिश, तेज हवा और रात का अँधेरा। आठ बजते-बजते ही शहर में मरघट का सन्नाटा भर गया है। कहीं-कहीं इक्के-दुक्के जेनरेटरों और देर बाद गुजरती किसी कार, बस या ट्रक की धड़कनों में ही शहर की नब्ज धड़क रही है; इसके सिवा शहर में न कोई जान है, न सुगबुगाहट।"[84]

चरित्रों को लेकर आरंभ

कहानी में पात्रों की संख्या उपन्यास की तुलना में काफी कम होती है। कई बार तो एक-दो चरित्रों के इर्द-गिर्द ही कहानी घुमती है। प्राय: कहानियों में एक केंद्रीय चरित्र रहता है और उसके आसपास कुछ सहायक चरित्र। पाठक को कहानी के आरंभ में ही मुख्य पात्रों के विशेषताओं के बारे में संकेत मिल जाता है। संजीव की कहानियों में कथावाचक की भूमिका प्रमुखता से लक्षित की जा सकती है। चरित्र-चित्रण के लिए कहानीकार अलग-अलग विधियाँ अपनाता है। कहीं-कहीं पात्रों के कार्य ही उसके चरित्र को उजागर करते हैं तो कहीं अन्य पात्रों द्वारा उसके बारे में कही गई बातों से। कहीं-कहीं अन्य पात्रों के वार्तालाप से तो कहीं स्वयं उसकी सोच से भी पात्रों का चरित्र उजागर होता है। कहानी के आरंभ से ही पात्रों की स्थिति स्पष्ट हो जाती है जैसे –"गुलाब सगुनिया के जीवन का यह आखिरी खोजी अभियान था। इसके बाद उमर नहीं बचेगी! साठ का हो चुका है वह । चेहरे पर फूले कास-सी सफेद दाढ़ी-मूँछें फहराने लगी हैं और शरीर तथा आत्मा में थकान और निराशा की एक नामालूम-सी धुंध और फफूँदी घनी होने लगी है।"[85]

"बरसाती इतना सिड़ाया हुआ क्यों रहता है?

खिस्स से हँसकर रह जाता है बरसाती इस सवाल पर। इस हँसी में दबा-दबा सा

---

84. संजीव, 'अवसाद, संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 116

85. संजीव, 'खोज', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 155

अपमान, शर्म, खींझ और झेंप –क्या-क्या नहीं छुपा होता! कभी-कभार कुछ बोलता भी है तो सिर्फ इतना –"हमको नैं पता।"

कोई जवाब-सा जवाब तो हुआ नहीं यह! किस-किस सवाल पर बरसाती कहता फिरेगा "हमको नैं पता?"

क्या-क्या नैं पता?" यह कि बरसाती बरसात में पैदा हुआ था ...या यह कि बरसाती की मेहरारू बड़ी छबीली है और अगहरा का पेटरौल पम्प उसी के नाम पर है ...या यह कि बरसाती की माँ दूसरे के साथ भाग गई है और बाप सधुआ गया है और अब भीख माँगता फिरता है?"[86]

जिस दिन संग्रामपुर कोलियरी के ओवरमैन जमनालाल के बेटे संजू का सेलेक्शन आई.आई.टी. में हो गया, लोगों को लगा कि जमनालाल का कद कस्बे में सबसे ऊँचा हो गया है, हालाँकि वह अभी भी पाँच फीट चार इंच के डंसे चेहरेवाले इनसान ही थे, उसी तंग और खस्ताहाल क्वार्टर में रह रहे थे और कुल मिलाकर परिवार और रिश्तेदारों के बोझ से गरीबी के दलदल में धँसते ही जा रहे थे।"[87]

भाषण द्वारा आरंभ

संजीव ने अपनी कहानियों की शुरुआत भाषण द्वारा भी किया है जैसे –

"केलूडाँगा कोलियरी के हमारे बहादुर मजदूर साथियों।" बहुत सधे हुए स्वर में पल्लवी दी ने भाषण शुरू किया। 'निजीकरण' के विरुद्ध ..."परिस्थितियों ने आज हमें जीवन-मरण के ऐसे नाजुक और निर्णायक मोड़ पर ला कर खड़ा कर दिया है जहाँ एक ही चीज़ बचती है -

---

86. संजीव, 'उष्मा', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 180

87. संजीव, 'नस्ल', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 339

-'करो या मरो'। सन् इकहत्तर में कोलियरियों का राष्ट्रीयकरण हुआ था, तब यह कहा गया था कि कोयला राष्ट्र की संपत्ति है, मगर आज वही सरकार उसे निजी मालिकानों को बेच रही है। हम पूछते हैं, क्या कोयला अब राष्ट्रीय संपत्ति नहीं रहा या आप लोग भेड़-बकरियाँ हैं, जिसे पैसे लेकर वह किसी को भी बेच सकती है?"[88]

टेलीफोन संवाद द्वारा

टैलीफोन पर होने वाले बातचीत के माध्यम से भी संजीव ने कहानियों की शुरुआत की जैसे –"हलो! बोल रहे हैं! ...ओ मिश्राजी परनाम! परनाम!! आँऽऽ चौथा दिन है स्ट्राइक का? चौथा दिन! ...अच्छा! ओऽऽ! अफसरों की तरह निश्चित अवधि में प्रोमोशन! ...दूसरी डिमांड? ...इंसेंटिव? ओफार्नेस की गर्मी का! मरो ससुरो ... न न आपको नहीं! ऐं स्वतः स्फूर्त! देखिए इतने दिन तक हमने भी वहाँ ट्रेड युनियन किया है, घास नहीं छीली। पता कीजिए कि कौन है इस स्वतः स्फूर्त के पीछे, अच्छा-अच्छा माने कि फार्नेस पर उस दिन जो मजदूर मरा, उसके समर्थन में वहाँ के मजदूरों ने हड़ताल कर दी ...ऐसे पहले भी मरते आए थे ... खैर वही हुआ यानी मजदूरों ने हड़ताल कर दी और बाद में बाइसों युनियनें अपनी-अपनी रोटी सेंकने वहाँ आ पहुँची। ...।"[89]

आकर्षक आरंभ

जब कहानी का आरंभ आकर्षक होता है तो पाठक वर्ग के अंदर पूरी कहानी को पढ़ने की उत्सुकता एवं कौतूहल उत्पन्न हो जाता है। और वह अंत तक बड़ी तत्परता से कहानी को पढ़ता है। संजीव की भी कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जो आरंभ में ही पाठक को प्यासा बना देती हैं। जैसे –

---

88. संजीव, 'कन्फेशन', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 264

89. संजीव, 'नेता', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 24

"मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने अपनी ज़िंदगी में उस जैसी हसीन औरत नहीं देखी।" महमूद की आवाज़ इस कदर भावुक थी कि हमें झुरझुरी आ गई। "गोरी थी?" सतपाल ने धीरे से पूछा।

"महज़ गोरी होने से क्या होता है। यह तो पता चले कि उसके नैन-नक़्श कैसे थे।" सुरेंद्र ने उत्कंठा व्यक्त की। "ऊँह!" तुम दोनों ही दोयम-तेयम दर्जे की वजहों में भटक गए। अव्वल तो यह जानना ज़रूरी है कि उसकी उम्र क्या थी?" मैंने अपनी समझ से सौंदर्य के बुनियादी तत्व को पकड़ लिया था।"[90]

"झीने कुहरे से बुनी चाँदनी रातों में जिस राह से अंडे देने के बाद इलिश मछलियाँ समुद्र में लौटती हैं, जिस राह के दोनों ओर धुंध-भरी सुबह की कुनकुनी धूप में कछुए अपनी पीठ सेंकते मिलते हैं और केकड़े अपने बिलों में कुलबुलाया करते हैं, जहाँ बालू या पंक में अपने अंडे गाड़कर मादा घड़ियाल फिर समुद्र में चल देती है, उसी राह से आई थी नसीबन बी आज से पच्चीस साल पहले, सुदूर मुर्शीदाबाद से।"[91]

औपन्यासिक शिल्प की कहानियाँ

संजीव ने छोटे फलक की कहानियाँ बहुत कम लिखी हैं। सिर्फ 'यह कस्बा जिन्दा कैसे है! तथा 'कन्फ्यूजन' क्रमशः एक और तीन पृष्ठ की कहानियाँ हैं। **'प्रेरणास्त्रोत', 'पूत-पूत! पूत-पूत!!', 'तिरबेनी का तड़बन्ना', 'अपराध', 'हलफनामा', 'लिटरेचर', 'सागर सीमान्त', 'आरोहण', 'कुछ तो होना चाहिए'** आदि लंबी कहानियाँ हैं। संजीव ने स्वयं भी यह स्वीकार किया है कि कुछ कहानियों का फलक उपन्यास का बन रहा था, परंतु उन्हें कहानियों में समेटना पड़ा, जिससे इनका दायरा काफी लंबा हो गया है। ओमा शर्मा ने अपने एक लेख में

---

90. संजीव, 'दुनिया की सबसे हसीन औरत', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 36

91. संजीव, 'सागर सीमान्त', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 188

संजीव को लंबी कहानियों का लेखक माना है। ओमा शर्मा के कहानी के प्रकाशन के बाद जब संजीव ने उनकी हौसला अफजाई की, तभी ओमा शर्मा ने उक्त वाक्य लिखे –"इतने अंतराल के बाद लंबी कहानी विधा का सिद्धहस्त लेखक कहानी के रेशे-रेशे को पकड़कर, पहल करके हौसला अफजाई करें, यह तो कल्पनातीत था।"[92] **'लिटरेचर'** कहानी अट्ठाइस पृष्ठ की है तो **'खोज'** चौबीस पृष्ठों की। इनके अधिकांशतः कहानियों की पृष्ठ संख्या बीस से अधिक है। इनमें कई कथाएँ एक साथ चलती हैं। **'खोज'** एक प्रतिकात्मक कहानी है। इसमें सगुनिये सात पुश्तों से खजाने की खोज कर रहे हैं। ये देश की साधारण जनता है जो पूँजीपतियों के लिए अपना हाड-मांस पेर रही है। दूसरी तरफ इंद्रवंश के राजा कौशलेंद्र द्वारा गाड़ा गया खजाना है। यहाँ इंद्रवंश दुनिया भर के सत्ताधारी और पूँजीपति वर्ग का प्रतीक है। इसके साथ इसमें मंगल बाबा की कथा है तथा इंद्रवंश का इतिहास है एवं वीजक (पहेलियों) के माध्यम से खजाना ढूँढ़ने का प्रयास है।

इनकी कहानियों में समय का अंतराल भी काफी बड़ा है। **'सागर सीमान्त'** की नसीबन बी अपने बिछड़े सौहर करीम से बीस वर्ष बाद मिलती है। **'जसी-बहू'** में जसी भी कई वर्ष बाद शहर से गाँव लौटता है। **'लिटरेचर', 'मानपत्र', 'घर चलो दुलारी बाई!', 'प्रेरणास्त्रोत', 'खोज'** आदि कहानियों में समय का अंतराल काफी लंबा है। अमूमन ऐसा उपन्यासों में होता है। कहानियों के बारे में डॉ. भागीरथ मिश्र लिखते हैं –"उपन्यास समाज की पृष्ठभूमि में किसी व्यक्ति के पूर्ण जीवन का वर्णन करता है। जबकि कहानी जीवन किसी अवसर विशेष का ही चित्र उपस्थित करती है।"[93] संजीव की कहानियों में भी किसी पात्र का पूरा जीवन तो नजर नहीं आता परंतु उनके जीवन के बीच एक लंबा कालाखण्ड अवश्य नजर आता है।

---

92. काशिद गिरिश (संपा.) 'कथाकार संजीव', आलेख ओम शर्मा, 'पेशानी की सलवटों का सबब', संस्करण : 2008, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 61

93. मिश्र भगीरथ, 'काव्य शास्त्र', प्रथम संस्करण : 1971, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ संख्या – 84

कहानी का मध्य

कहानी का मध्य भाग अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस भाग में कहानीकार अपनी कथा का विस्तार करता है उसकी विश्वसनीयता को तर्क की कसौटी पर पुष्ट करता है। इसी भाग में कहानी का उद्देश्य पुष्ट होता है। कहानी के मध्यभाग के संबंध में डॉ. नारायण टंडन के विचार द्रष्टव्य हैं –"मध्यभाग कथावस्तु का ऐसा अंश होता है जिसमें वास्तविक विषयवस्तु का विवेचन किया जाता है ...। एक कुशल कलाकर कहानी के मध्यभाग को विशेष रूप से प्रभावशाली बनाने की चेष्टा करता है। क्योंकि कथावस्तु का यही अंश उसकी विश्वसनीयता की संभावनाएँ उत्पन्न करने में समर्थ होता है।"[94] अतः कहानी का मध्य प्रभावात्मक होना चाहिए जैसे –"ऊपरी अदालत...? राजस्थान में भँवरी बाई के साथ बलात्कार पर 'का' फैसला दिया ऊपरी अदालत ने – यही कि बाभन लोग एक नीच जाति का औरत का बलात्कार कर ही नहीं सकते। थू है ऐसों पर। हुआँ भी कैप्चर करके रखा है बाभन लोग, जाएँ हम कहाँ।"[95] **'सागर सीमान्त'** कहानी में करीम का समुद्र में खो जाने के बाद नसीबन एकदम अकेली पड़ जाती है। नूर-बूढ़ा को बरामदे में सोने की जगह देकर अपनी सुरक्षा निश्चित करती है और अपने बेटे शफीक को थपकी देते हुए सोचती है –"करीम जैसा शौहर एक विशाल समुद्र की तरह होता है, जिसमें छोटी-बड़ी मछलियों की तरह कितनी इच्छाएँ किल्लोल करती रहती हैं। समुद्र से निकलते ही मछलियाँ मर जाती हैं और मर्द की हिफाजत से निकलते ही औरत की इच्छाएँ।"[96] इससे सिद्ध होता है कि मध्यभाग कहानी के आरंभ और अंत के बीच सामंजस्य और संतुलन बनाये रखता है, उसमें बिखराव नहीं आने देता है।

---

94. टण्डन प्रतापनारायण, 'हिंदी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास', प्रथम संस्करण : 1959, हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, पृष्ठ संख्या – 54

95. संजीव, 'पूत-पूत! पूत-पूत!!', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 101

96. संजीव, 'सागर सीमान्त', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 198

कहानी का अंत

कहानी के प्रारंभ और मध्य के समान कहानी का अंत भी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यहाँ आकर कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट हो जाता है। विभिन्न आरोहो-अवरोहों से गुजरते हुए कहानी के पात्र अपनी मंजिल तक पहुँचते हैं। प्रभावात्मक कहानियों का अंत होने के पश्चात् भी वह पाठकों के मन में चलता रहता है। कहानियों का अंत एक प्रकार से नहीं होता है, परिणति कहीं मर्मस्पर्शी तो कहीं अनिश्चयात्मक होती है।

मर्मस्पर्शी अंत

संजीव की अधिकांशतः कहानियों का अंत मर्मस्पर्शी हैं जैसे –"आँऽऽ हाँऽऽ!" कहते हुए चैतन्य होने की कोशिश में काँपते हाथों से लाल शर्बत उन्होंने ले लिया चंदानिया साहब के हाथों से, मगर होंठ से लगाते ही उसके लाल रंग पर दिमाग़ असंतुलित हो उठा। अरे यह तो खून है, अपने बच्चों का ख़ून! और यह ख़्याल आते ही बड़े जोर की मरोड़ उठी, उबकाई आई और उन्होंने बिलबिलाकर उल्टी कर दी।"[97] **'जसी-बहू'** कहानी का अंत भी आँखें नम कर जाता है –"उसी दिन जसी-बहू के पेट में दर्द होना शुरू हुआ और सतमासे लड़के को जन्म देने के बाद ही वह उठ पाई। जसी के सितई पंडित की हलवाही पकड़ने की और उसके दूसरी औरत लाने की बात उड़ती हुई जसी-बहू के कान तक आई। अंदर और बाहर से टूटती हुई वह बिल्कुल भयावनी हो चली थी। इसी बीच एक दिन उसने दूर से देख जसी को एक नई औरत के साथ आते हुए। एक जर्बदस्त हूक छाती में उठी फिर जल्दी-जल्दी करके उसने भुइली को कपड़े पहनाए, कपड़े के टुकड़े में बच्चे को उठाया, तेल की तलछट को उसके सिर पर थपथपाते हुए कजरौटा लेकर निकल पड़ी। गाँव के लोगों ने देखा, दुःस्वप्नों भरी दुपहरी की तरह एक जसी-बहू जा रही थी, शाम के सलोनेपन की तरह एक जसी-बहू आ रही थी।"[98]

---

97. संजीव, 'मरोड़', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 47

98. संजीव, 'जसी-बहू', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 126-127

"अच्छे-खासे मूड में, शिकारी की चुस्त पोशाक में, आईने में खुद को देखकर खुद पर रीझती हुई अलकाजी ने आहट पाकर ज्यों ही पीछे मुड़कर देखा, 'ओ नो!' एक नंगी चीख घर को दहला गई। नि:शब्द रोए जा रहे पी.पी. और अलकाजी की नंगी चीख के बीच तैरता पड़ा था 'अंक'!"[99]

अनिश्चयात्मक अंत

कुछ कहानियों के अंत निश्चित होते हैं तो कुछ कहानियों के अंत अनिश्चित। कहानीकार कथ्य के अनुसार कहानी का आरंभ, मध्य और अंत निश्चित करता है। परंतु अब यह भी नहीं माना जाता कि कहानी का कोई निश्चित अंत होना ही चाहिए। इसके विपरीत यह भी संभव है कि कहानी अपनी परिणति पर पहुँचकर समाप्त हो जाए जैसे **'अपराध'** कहानी में होता है। अंत में कुछ नाटकीय नहीं होता है फिर भी कहानी पाठक के मन पर व्यापक प्रभाव डालती है –"स्टेशन पर उतरते ही अगवानी के लिए आए विभागाध्यक्ष के साथ माँ को देखकर याद आता है ...साधु ने शायद ठीक ही कहा था ...कि मेरी मौत पानी में होगी। ...पूरा भविष्य डुबा दिया है मैंने पानी में और विद्रूप में मेरे होठ टेढ़े हो उठे हैं।"[100]

"अचानक उसे होश आया, हाँ, वो तुम लोग क्या तो पूछ रहे थे – उसके रूप-रंग, नैन-नक्श, उम्र ...बताऊँ?"

"ना!" सतपाल ने कसकर उसका हाथ दबा दिया, "दुनिया की सबसे हसीन औरत की खूबसूरती पर इन सतही चीज़ों के दाग न लगाओ।"[101]

---

99. संजीव, 'ब्लैक होल', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 263

100. संजीव, 'अपराध', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 96

101. संजीव, 'दुनिया की सबसे हसीन औरत', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 42

पात्र एवं चरित्र-चित्रण शिल्प

कहानियों में उपन्यासों की तरह अनेक चरित्र नहीं होते हैं। यहाँ दो-चार चरित्रों के इर्द-गिर्द ही कहानियाँ घूमती हैं। कई बार तो कहानियेां में सिर्फ एक केंद्रीय चरित्र होता है। यहाँ तक कि कहानियों में पात्रों के सिर्फ उसी चरित्र को उजागर किया जाता है जो कहानी के केंद्रीय भाव को व्यक्त करता है। परंतु श्रेष्ठ कहानीकार उस संक्षिप्तता में ही अपने पात्रों के चरित्र का पूरा गुण स्थापित कर देता है। आज की कहानियाँ कल्पना पर कम और यथार्थ पर ज्यादा आधारित होती हैं। इसके लिए पात्र सजीव और स्वाभाविक होते हैं। अधिकांशतः वह मानव स्वभाव और यथार्थ समाज पर आधारित होता है। इसलिए कहानीकार चरित्रों का विकास वर्णन, मनोविश्लेषण, संवाद, प्रसंग आदि से करता है। संजीव के पात्रों में मैलिकता, सजीवता, व्यवहारिकता आदि महत्वपूर्ण गुण मौजूद हैं।

प्रमुख पात्र

प्राचीन काल में नायक-नायिका अधिकांशतः सर्वगुण संपन्न, धनी, संभ्रांत, कुलीन एवं प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हुआ करते थें। परंतु आधुनिक काल में पात्रों के निर्माण संबंधी विचारधारा में परिवर्तन आया है। आज कथानुरूप गरीब, किसान, मजदूर, कूली, मछुआरा, पहाड़ी कोई भी कथा का प्रमुख पात्र हो सकता है। संजीव ने अपने पात्रों के साथ न्याय करने का संपूर्ण प्रयास किया है। उनके कहानियों के कुछ प्रमुख पात्र इस प्रकार हैं – हराधन दा (लांग साइट), दीपक (लिटरेचर), मानसिंह सुंडी (जीवन के पार), बरसाती (उष्मा), तैयब चा (गुफा का आदमी), मास्टर (प्रतिद्वंदी), सुरजा (तीस साल का सफ़रनामा), मास्टर दीनानाथ (मरोड़), विजय (फूलवा का पूल), शिबू काका (टीस), सिद्धार्थ, सचिन (अपराध), रामलाल (भूखे रीछ), महमूद (दुनिया की सबसे हसीन औरत), इस्लाम (मुर्दागाह), रामकुमार (अंतराल), बोदा (कदर), झम्मन (धनुष-टंकार), श्रीधर राय (पुन्नी माटी), कामता राय (चुनौती)।

प्रमुख स्त्री पात्र

संजीव की कहानियों के कुछ प्रमुख स्त्री पात्र निम्नलिखित हैं – जसी-बहू (जसी-बहू), कल्याणी दी (कठपुतली), सुरसती (धनुष-टंकार), नसीबन बी (सागर सीमान्त), शांता देवी

(मरजाद), बामई तिर्की (जीवन के पार), पल्लवी दी (कन्फेशन), मताई (टीस), संघमित्रा (अपराध), रजिया (भूखे रीछ), फूचकी देवी (लांग साइट), ललिता (सीपियों का खुलना), ज्योति (लिटरेचर), कावेरी जी (अवसाद), छबीली (जीवन के पार), अलकाजी (ब्लैकहोल)।

सहायक पात्र

संजीव की कहानियों के कुछ प्रमुख सहायक पात्र निम्नलिखित हैं –मुन्ना (प्रतिद्वंदी), मिसेज वर्मा, हिंदिया का बाप (आप यहाँ हैं), नूर-बूढ़ा, फातिमा (सागर सीमान्त), फोकल चटर्जी (कन्फेशन), लंगड़, भगेलू (प्याज के छिलके)।

पीड़ित नारी पात्र

संजीव की कहानियों में नारी दुखी, पीड़ित, असहाय एवं लैंगिक शोषण की शिकार है। जैसे – **'जसी-बहू'** कहानी में सितई पंडित जसी-बहू से बलात्कार करता है। **'आप यहाँ हैं'** कहानी में मि. वर्मा हिंदिया के साथ अनैतिक संबंध बनाते हैं। **'कठपुतली'** कहानी में कल्याणी दी सेठ की रखैल है। **'टीस'** कहानी में मताई का पुजारी पंचानन से अवैध संबंध है। **'धनुष-टंकार'** कहानी में मुंशी सुरसती के साथ व्यभिचार करता है। **'प्याज के छिलके'** कहानी में एक प्याज के लिए मुंशी कैलशिया का झोटा पकड़कर पीटता है। **'प्रतिद्वंदी'** कहानी में अपाहिज अनिता को मुहल्ले के लड़के छेड़ते हैं।

खल पात्र

संजीव की कहानियों में खल पात्रों की संख्या भी दृष्टिगोचर होती है। जैसे – नंबरदार (तीस साल का सफ़रनामा), बड़े बाबू (फूलवा का पूत), पुजारी पंचानन भट्टाचार्य (टीस), सेठ (कठपुतली), सितई पंडित (जसी-बहू), मुंशी जी (प्याज के छिलके), मिस्टर वर्मा (आप यहाँ हैं), मिसिर जी (मरजाद), अवधू सिंह (योद्धा) आदि।

आदर्शवादी तथा अविस्मरणीय पात्र

संजीव की कहानियों में आदर्शवादी पात्रों की संख्या भी दृष्टिगोचर होती है। जैसे – निरमल बाबू (धनुष-टंकार), भम्बल दा (धावक), मेवालाल (मदद), बोदा (कदर), नसीबन

(सागर-सीमान्त), मेहरून्निसा (फैसला), कपिल (हिमरेखा), बरमेश्वर शर्मा (पूत-पूत! पूत-पूत!!) आदि।

चरित्र चित्रण की विधियाँ

चरित्र-चित्रण के लिए कहानीकार कई विधियाँ अपनाता है जैसे –वर्णनात्मक विधि, संवादात्मक विधि, आत्मकथात्मक विधि, विवरणात्मक विधि, व्यंग्यात्मक विधि, अनिश्चयात्मक विधि, मनोवैज्ञानिक विधि आदि।

संवादात्मक विधि

संवाद मनुष्य के जीवन के बहुत आवश्यक तत्व है। इसके माध्यम से मनुष्य अपने मनोभावों, आचारों-विचारों, भावनाओं, संवेदनाओं आदि को एक-दूसरे पर प्रकट कर पाता है जैसे **'जीवन के पार'** कहानी में संवादात्मक अभिव्यक्ति झलकती है –

"तुम बाँसुरी बजाना नहीं जानते मान?" बारह बरस की बामई पूछती।

"क्यों, तू नाचेगी?" सवाल के जवाब में सवाल करता मानसिंह।

पहले तो सकुचा जाती बामई, फिर यह सोचकर कि कहीं उसकी कमजोरी भाँप न ले 'मान' सो ठसके से बोलती, "नाच का क्या है, मैं तो ऐसा नाच सकती हूँ, ऐसा जैसे ..." आगे उसे शब्द नहीं सूझते।

"जैसे ये रंगीन तितलियाँ।" बात पूरी करता मानसिंह।

"हाँ!" खुश हो जाती बामई।

"देख, ये सकोआ है न!" मानसिंह उसे टोकता।

"हाँ -अ।"

"नाचते-नाचते इसके पार न चली जाना।"

"क्यों?"

उधर हाथी आते हैं।"

"अरे बाप रे।"

हाथी से डरती है?"[102]

विवरणात्मक विधि

इस विधि के अंदर पात्रों की रूप-रेखा, वेशभूषा, रहन-सहन, चाल-चलन, भाव-मूर्ति, बातचीत, बुद्धि-विवेक आदि का विवेचन किया जाता है जैसे – नसीबन इतनी सुंदर कि जिस दर से गुजरती वह दर खुशगवार हो उठता। हँसती तो फजाँ महक उठती और गुनगुनाती तो हवा में मिठास घुल जाती। पेड़-रूख, फूल-पत्ते, हवा-समुद्र –कौन नहीं था उसका चहेता, मगर वह थी सिर्फ करीम की। कहते हैं पशु-पक्षी के मादा जोड़े अपने नरों से पूछते हैं, "तुम मुझे करीम-सा प्यार क्यों नहीं करते?' नर जवाब देते, 'तुम नसीबन बन जाओ, फिर देखो।"[103]

आत्मकथात्मक विधि

इस विधि में कथाकार की भावना, मानसिकता, इत्यादि उजागर होती है जैसे उनकी पहली ही कहानी **'क़िस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का'** में आत्मकथात्मक विधि परिलक्षित होती है –"हाँ, तो मैंने काम शुरू कर दिया। बाकायदा एजेंट बनकर, एक पोर्टफ़ोलियो बैग में चंद पम्फ़लेट्स, गाइड पुस्तिकाएँ, फ़ार्म इत्यादि भरकर दर-दर भटकने वाला मैं अब जनता का उद्धारक बनकर विचरने लगा।"[104]

संवाद शिल्प

संवाद कहानी का केंद्रीय तत्व है, यह कहानी को प्रवाहमय तथा प्रभावात्मक बनाती है। यह सेतुबंध का कार्य करता है, एक घटना से दूसरे घटना को तथा एक पात्र से दूसरे पात्र को

---

102. संजीव, 'जीवन के पार', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 127

103. संजीव, 'सागर सीमान्त', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 189

104. संजीव, 'क़िस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण: 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 13

जोड़ते हुए कहानी को सोद्देश्य बनाने का प्रयत्न करता है। यह कहानी में रोचकता एवं चमत्कार उत्पन्न करता है। कहानी को पात्रानुकूल बनाकर उसमें सजीवता लाता है। कहानी के संवाद संक्षिप्त एवं प्रभावात्मक होने चाहिए। संजीव के कहानी के संवाद शिल्प तीव्र, स्पष्ट, सरल एवं प्रभावी हैं जैसे – 'योद्धा' कहानी में भावात्मक एवं यथार्थवादी संवाद परिलक्षित हुए हैं –

"दद्दा!"

"हाँ!"

"ई दुबे से कैसे बोल रहे थे और तुमसे कैसे?"

"बड़े हैं न!"

"बड़े तो तुम हो।" (दद्दा छह फूट के थे, बावजूद इसके कि वे लंगड़ थे)

"अरे नहीं, जाति के ऊँचे। ठाकुर हैं न!"

"क्या सभी हमसे ऊँचे हैं?"

"बनिया, लाला, ठाकुर, बाभन...।"

"और नीचे?"

"धोबी, धरिकार, पासी, चमार...।"

"और नबी के घरवाले?।"

"पठान हैं, मुसुरमान हमसे अलग!"

"ऊँचे है कि नीचे?"

"ऊँचे भी, नीचे भी...।"[105]

इसी प्रकार **'लिटरेचर', 'जीवन के पार', 'सूखी नदी के घाट पर'** आदि कहानियों में संवाद शिल्प का प्रयोग हुआ है।

---

105. संजीव, 'योद्धा', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 269-270

व्यंग्यात्मक संवाद

व्यंग्यात्मक संवाद हास्य-विनोद के साथ-साथ समाज की कड़वी सच्चाई को बहुत ही कारगर ढंग से अभिव्यक्त कर देते हैं। इनके वजह से कहानी में सजीवता एवं धार आ जाती है। जैसे –**'क़िस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का'** में एक बेरोजगार युवक का फ़ियरलेस कंपनी के एजेंट के रूप में दर्द उभरता है –"बड़ा टफ़ कम्पिटीशन था। तीर्थस्थानों में पंडों और स्टेशनों पर कुलियों का एक ही व्यक्ति पर हक़ जतलाने और फिर तू-तू मैं-मैं के बाद की कम्प्रोमाइज को यहाँ एक नया आयाम दिया गया था।"[106] **'टीस'** कहानी में भ्रष्टाचारियों की तुलना विभिन्न विषधरों से किया गया है –"उड़ीसा का शंखचूड़ नाग देखना है तो उड़िया फ़ॉरेस्ट अफ़सर 'दास' को देख लो। तक्षक देखना है तो कोलरी मैनेजर बैनर्जी को देख लो। दोमुँहा साँप अबी तक आप नहीं देखा तो युनियन लीडर सिन्हा को देख लो, इसका मूँ छौ-छौ मास बाद नहीं छौ-छौ मिनट पर खुलता-बंद होता है। लेवर से एक बात बोलता, मैनेजमेंट से दोसरा...।"[107]

अत्यंत संयत और छोटे संवाद

संजीव की कहानियों में छोटे-छोटे किंतु प्रभावात्मक संवाद स्थापित किये गए हैं। जैसे **'लिटरेचर'** कहानी में –

"तुम कब आईं?"

"कब की।"

"ये बदबू कहाँ से आ रही है?"

"कहीं मेरे बदन से तो नहीं?" वह हँसी, अब गड्ढे उछलकर उसके गालों पर उभर आए थे।"

---

106. संजीव, 'क़िस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण: 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 14

107. संजीव, 'टीस', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 63

"नहीं-नहीं, अगल-बगल के गड्ढ़ों में कुछ मर गया होगा।"

"यह बदबू तो रोज ही यहाँ रहती है, आश्चर्य है, तुम्हें इसका पता आज चल रहा है।"

"तुम मज़ाक़ कर रही हो।"

"मज़ाक़? तुम्हें पता है, यह नदी कहाँ से निकलती है?"

"नहीं।"

"शराब-कल से, उसका सारा उत्सर्जन और पानी लेकर।"[108]

कौतूहल उत्पन्न करने वाले संवाद

कौतूहल कहानी का एक प्रमुख तत्व है। यह पाठक के अंदर उत्सुकता, रोचकता एवं जिज्ञासा उत्पन्न करता है और पाठक पूरे कहानी को पढ़ने को विवश हो जाता है। संजीव की कहानियों में कौतूहलवर्द्धक संवाद परिलक्षित किये जा सकते हैं जैसे–

"बूझो तो वह कौन है!" मामी की तर्जनी जादू की छड़ी की तरह उस लड़की की ओर तनी हुई थी जो कई हमजोली सहेलियों के साथ सिंदूरी झाँई वाले पीले अमरूदों का मोलभाव कर रही थी। जैसी लड़की, वैसे अमरूद! गजब का मैच! वह पहली ही नजर में फिदा हो गया था। जाने क्या हुआ वे अमरूद की दुकान से भरभराकर भागीं और जा धमकीं कंघी-चोटी-फीता-आलता की दुकान पर।"

"लो, नजर लग गई न तुम्हारी!"

"आखिर वह है कौन?"

"अरे, यही तो है वह लड़की, जो तुम्हारी लड़ाका माँ और चुगलखोर बहन को ठीक करने तुम्हारे घर आने वाली है! नहीं पहचान पाए न? पहचानोगे भी कैसे भानजे, विवाह के बखत तो तुम्हें धोती भी बाँधनी नहीं आती थी।"[109]

---

108. संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 26

109. संजीव, 'अन्तराल', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 224

वातावरण शिल्प

कहानी में उपन्यास की भाँति परिवेश चित्रण के उतने अवसर नहीं होते हैं। कहानी में कहानीकार परिवेश का चित्रण उतना ही करता है जितने से कहानी में वर्णित कार्य-व्यापार स्वाभाविक लगे, पात्र जीवंत लगें और कहानी के विकास में मदद मिले। कहानी में उपन्यास की भाँति वातावरण के लंबे-चौड़े फलस्फे नहीं बांधे जा सकते हैं। कहानी में जीवंतता लाने के लिए यह आवश्यक है कि कहानीकार कहानी में घटित घटनाओं के अनुरूप ही परिवेश की सृष्टि करे। यदि कहानी शहर से संबंधित है तो कहानी का वातावरण भी शहरों के अनुकूल होना चाहिए। शहरी आपाधापी, व्यस्तता, तंग-गलियाँ, भीड़ भरे रास्ते, तरह-तरह के पहनावे, मिश्र रहन-सहन, बोली-भाषा आदि सभी उसी के अनुकूल होनी चाहिए। एक श्रेष्ठ कहानीकार संक्षेप में ही पूरे परिवेश का चित्रण कर देता है। कहानी के परिवेश के सही वर्णन के लिए कहानीकार को काल बोध की सही जानकारी अवश्यक होनी चाहिए। अतः उसे इस बात का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए कि जिस समय कहानी लिखी जा रही है उस समय वहाँ के लोगों का जीवन, रहन-सहन, बोली-भाषा, पहनावा, संस्कृति आदि कैसी है। कहानी में परिवेश के महत्व को रेखांकित करते हुए गुलाबराय कहते हैं –"कहानी में उपन्यास की भाँति वातावरण चित्रण के लिए अधिक गुंजाइश नहीं होती, फिर भी कहानी में देशकाल की स्पष्टता लाने के लिए तथा कार्य से परिस्थिति की अनुकूलता व्यंजित करने के लिए इनका चित्रण आवश्यक हो जाता है। वातावरण भौतिक और मानसिक दोनों ही प्रकार का हो सकता है और भौतिक वातावरण भी प्रायः ऐसा होता है कि वो पात्रों की स्थिति की व्याख्या में सहायक हो।"[110]

सामाजिक वातावरण

एक ही शहर या गाँव के लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में भिन्नता पाई जाती है। कहानीकार का यह कर्त्तव्य होता है कि अलग-अलग वर्गों के लोगों की वर्गीय भिन्नता के

---

110. राय डॉ. गुलाब, 'काव्य के रूप', द्वितीय संस्करण : 1950, प्रतिमा प्रकाशन, 206, हैदर कुली, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 223-224

कारण आए फर्क को रेखांकित या सांकेतिक करे। अगर कहानी का परिवेश सामाजिक है तो उसमें कोई ऐसी चीज वर्णित नहीं होनी चाहिए जो इस काल विशेष में अस्वाभाविक लगे। कहानी का परिवेश जितना वास्तविक और स्वाभाविक होगा कहानी उतनी ही यथार्थवादी कहलायेगी। संजीव की कहानियों में भी सामाजिक वातावरण परिलक्षित होती है जैसे– **'पिशाच'** कहानी में –"तुमरी हिम्मत कइसे पड़ी ई कहने को...? इहाँ हमरे लड़के तुम्हारे घर काम करेंगे, भूलि गए कि तुम काउ हो और हम काउ है? चार पैसा कमाने लग गए तो हमें मोल खरीद लोगे...!"[111] यहाँ सवर्ण समाज दलित समाज से एकाध जगहों पर आर्थिक स्थिति में पिछड़ने के बावजूद महातम बाबा के रूप में अपने अहं एवं दलितों को गलियाने के अपने तथाकथित अधिकार से इंच भर भी पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। **'जसी-बहू'** कहानी में भी सवर्ण सितई पंडित दलित स्त्री जसी-बहू का शारीरिक और मानसिक शोषण करता है। जसी-बहू द्वारा इसका विरोध करने पर उल्टे उसे ही जातिसूचक गालियाँ देता है –"सितई पंडित ज़ोर-ज़ोर से गाली देने लगे। चमाइन सियाइन होइके जाने की हिम्मत कैसे भई हमरे घर में?"[112] आज भी भारतीय समाज में जातिगत विषमता का यह माहौल कायम है। मनुष्य को उसके कर्म से कम और जाति से ज्यादा पहचाना जाता है।

प्राकृतिक वातावरण

प्राकृतिक चित्रण परिवेश की स्वाभाविकता एवं कहानी की प्रभावात्मकता बढ़ाने में सहायता करती है। यह कहानी को जीवंत एवं आकर्षक बनाता है। संजीव की कहानियों में भी प्राकृतिक वर्णन परिलक्षित किया जा सकता है जैसे **'महामारी'** कहानी में –"दोपहरी चिलचिला रही है। झलमला रहे हैं खलिहानों में पड़े अनसिझे डाँठों के बोझ। पूरब के पुरवे का, बीच के पुरवे का, पशुपति बाबा का, सुबरन सिंह का, खुद अपना। डंगराए खड़े हैं गुलैची, अड़हुल

---

111. संजीव, 'पिशाच', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 317

112. संजीव, 'जसी-बहू', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 124

ओर कनेर के पेड़। उदास चौरे पर बुलबुलों की एक-सी कचपचाहट, फूल एक भी नहीं दिखते इनकी फुनगियों पर। अगियार की उड़ती गंध है।"[113]

प्राकृति वातावरण का बड़ा ही मनोरम वर्णन **'हिमरेखा'** कहानी में भी देखने को मिलता है –"ओह! वे सरग टँगी चोटियाँ! वे रहस्य में डूबी गहरी घाटियाँ! वे ऊपर-नीचे फैले हरे मखमली चरागाह। वे सीढ़ीदार बिछे खेत! वे झरने। वे रंग-बिरंगे मेले! वे हिमपात! वे हिमस्खलन... और सबके ऊपर दूर, बहुत दूर से चमकती वह कभी न पिघलनेवाली शुभ्र अनंत, अविचल हिमरेखा! इन्हीं के बीच पहाड़ी फूल से खिले कुछ घरौंदे और उनके बीच कीड़ों-से फँसे इनसान।"[114]

इसी प्रकार प्रकृति वर्णन **'आरोहण', 'प्रेरणास्त्रोत', 'प्रेत-मुक्ति'** आदि कहानियों में भी देखने को मिलती है। यह प्रकृति वर्णन पाठक को आकर्षित करता है और उसके चित्त को प्रसन्न करता है। कहानी को प्रभावात्मक बनाता है।

भौगोलिक वातावरण

कहानी में देशकाल के अनुसार भौगोलिक वर्णन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि कहानी गाँव से संबंधित है तो कहानी में वर्णित वातावरण भी गाँव के अनुकूल होनी चाहिए। गाँव की गलियाँ, घर, कृषि, चौपाल, प्रकृति, नदी, नाले, पहाड़, मैदान, लोगों का पहनावा, रीति-रिवाज, भाषा, आदिवासी, उनकी प्रकृति आदि सभी का वर्णन कहानी के अनुकूल ही होना चाहिए। जैसे 'प्रेरणास्त्रोत' कहानी में –

"पानी के अभाव में दूर-दूर तक फैला ऊसर, रेह के ढूह, काश-कुश, सरपत, पलाश और कँटीले झाड़ों के प्रान्तर! इस रूक्षता के बीच छिटके हुए कुछ घरौंदे।

---

113. संजीव, 'महामारी', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 235

114. संजीव, 'हिमरेखा', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 369

गर्मी की सुनसान दोपहरिया में धू-धू कर दहकता रहता है यह इलाका। बीच-बीच में रेह के बगूले उठते रहते हैं – कभी यहाँ, कभी वहाँ।"[115]

इसी प्रकार **'प्याज के छिलके', 'सीपियों का खुलना'** आदि कहानियों में संजीव ने भौगौलिक वातावरण का सफल चित्रण किया है।

प्रतिपाद्य शिल्प

प्रतिपाद्य का अर्थ है कहानी में जो कुछ कहा गया है उसका अभिप्राय क्या है। पहले कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन की दृष्टि से लिखी जाती थीं परंतु अब ऐसा नहीं है, अब कहानी का एक निश्चित उद्देश्य होना आवश्यक है। प्रतिपाद्य के अंतर्गत रचना का उद्देश्य और रचनाकार की अपनी दृष्टि परिलक्षित होती है। कोई भी कहानी अपने पात्र, शिल्प या परिवेश के वजह से महान नहीं बनती है। कहानी को महान बनाता है उसका उद्देश्य। यह उद्देश्य किसी समस्या का चित्रण, उपदेश, संस्कार, मूल्य संवर्धन, मनोविश्लेषण, आदर्श समाज की स्थापना आदि किसी भी रूप में हो सकती है। किसी भी कहानी की सामाजिक और साहित्यिक मूल्यवत्ता का जब कथाकार ध्यान रखता है तो यहीं से उद्देश्य शिल्प को समझने की राह आसान हो जाती है। यदि कहानीकार कहानी के उद्देश्य के प्रति गंभीर नहीं है तो वह सफल कहानी की रचना नहीं कर पाएगा। कहानी के उद्देश्य को लेकर गुलाबराय के विचार स्पष्ट हैं –"प्रत्येक कहानी में कोई न कोई उद्देश्य या लक्ष्य अवश्य रहता है। कहानी का ध्येय केवल मनोरंजन या लंबी रातों को काटकर छोटा करना नहीं है। वरन् जीवन संबंधी कुछ तथ्य देना या मानव मन के निकट परिचय कराना, किंतु यह उद्देश्य या तथ्य हितोपदेश या ईसप (aesop) की कहानियों की भॉति व्यक्त नहीं किया जाता है। वह अधिकांश व्यंजित रहता है। कहानी के अध्ययन में उसका उद्देश्य समझना एक आवश्यक बात होती है।"[116]

---

115. संजीव, 'प्रेरणास्रोत', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 153

116. राय डॉ. गुलाब, 'काव्य के रूप', द्वितीय संस्करण : 1950, प्रतिमा प्रकाशन, 206, हैदर कुली, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 224

संजीव की कहानियों में हमेशा गरीब, किसान, मजदूर, दलित, पीड़ित जनता का पक्ष लिया गया है। **'जसी-बहू', 'दुनिया की सबसे हसीन औरत', 'घर चलो दुलारी बाई!', 'कठपुतली', 'पुत्री माटी', 'प्याज के छिलके'** आदि कहानियों में नारी शोषण और उसके प्रतिकार को चित्रित किया गया है।

'अपराध', 'पूत-पूत! पूत-पूत!!' तथा **'अवसाद'** कहानियों में नक्सलवादी आंदोलन का चित्रण किया गया है। **'आरोहण', 'हिमरेखा'** में पहाड़ी लोगों तथा **'सागर सीमान्त'** में मछुआरों के जीवन के समस्याओं को उठाया गया है। **'भूखे रीछ', 'कन्फेशन', 'नेता'** आदि कहानियों में मजदूरों की समस्याओं को रेखांकित किया गया है।

इस प्रकार संजीव का पूरा कथा-साहित्य धर्म, रूढ़िवाद, अंधविश्वास, सामंती शोषण, सांप्रदायिकता, पूँजीवाद, ओछी राजनीति पर प्रहार है। वे हमेशा शोषित जनता के पक्ष में खड़े हैं।

संजीव के कहानी साहित्य का शैलीगत मूल्यांकन

प्रत्येक कहानीकार का कहानी लिखने का अपना अलग-अलग अंदाज होता है फिर कहानी चाहे घटना प्रधान हो या चरित्र प्रधान, ऐतिहासिक हो या समकालीन। प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद एक ही युग के रचनाकार हैं, परंतु उनके लिखने की शैलियों में भिन्नता है। स्वयं प्रेमचंद की विभिन्न रचनाओं की शैलियों में भिन्नता देखने को मिलती है। कहने का तात्पर्य है कि अलग-अलग कहानियों की शैलियों में भिन्नता पाई जाती है। यह व्यक्ति के हृदय के भावों को अभिव्यक्त करने का तरीका है। कहानीकार कहानी में शैली का निर्धारण करते वक्त अपनी व्यक्तिगत रुचि और कहानी की विषयवस्तु की माँग को ध्यान में रखता है। अलग-अलग विषयवस्तु अलग-अलग शैली की माँग करती है। घटना-प्रधान कहानियाँ वर्णनात्मक शैली तथा चरित्र-प्रधान कहानियाँ मनोविश्लेषणात्मक शैली की माँग करती हैं। लेखक घटना प्रधान कहानियों में घटनाओं का वर्णन करता है तथा चरित्र प्रधान कहानियों में पात्रों के आंतरिक द्वंद्व को रेखांकित करता है। कहानीकार कथा के अनुरूप फैंटसी, डायरी, आत्मकथात्मक एवं पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग करता है। एक ही कहानी में एक से अधिक

शैली का प्रयोग भी देखने को मिलता है। शैली के संबंध में डॉ. गुलाबराय का मानना है – "शैली का संबंध कहानी के किसी एक तत्व से नहीं वरन् तत्वों से है और उनकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पड़ता है। कला की प्रेषणीयता अर्थात दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति शैली पर ही निर्भर करती है। किसी बात के कहने या लिखने के विशेष प्रकार को शैली कहते हैं। इसका संबंध केवल शब्दों से नहीं वरन् विचार और भावों से भी है।"[117]

भाषा के माध्यम से अपने भावों, विचारों, संवेदनाओं को सशक्त रूप में व्यक्त करने की कला ही शैली है। शैली के संबंध में डॉ. भगीरथ मिश्र का वक्तव्य इस प्रकार है –"शैली की स्वभाविकता कहानी की जान है। स्वाभाविक और सफल कहानी वही है, जिसमें वर्णन और वार्तालाप दोनों का सहारा लेकर कथानक का विकास एवं चरित्र-चित्रण उपस्थित किया गया है। यह सदा ही ध्यान में रखना चाहिए कि संक्षिप्त और स्वाभाविक शैली कहानी कला का आवश्यक अंग है।"[118]

संजीव ने अपनी कहानियों को सरल, सहज, सुबोध, ग्राह्य, स्वाभाविक, दिलचस्प और प्रभावात्मक बनाने के लिए विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। **'लिटरेचर'** और **'धक्का'** जैसी कहानियों में आत्मकथात्मक तथा **'जीवन के पार'** एवं **'लिटरेचर'** में संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। **'मानपत्र'** कहानी मानपत्र शैली में लिखी गई है परंतु यह अभियोगपत्र शैली, अधिक प्रतीत होती है। **'कन्फेशन'** कहानी भाषण शैली, **'संतुलन'** साक्षात्कार शैली, **'सागर सीमान्त'** लोकगाथात्मक शैली, **'हलफनामा'** व्यंग्यात्मक शैली तथा **'जीवन के पार'** काव्यात्मक शैली में लिखी गई कहानी है। अत: संजीव की कहानियों में विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग देखने को मिलता है।

---

117. राय डॉ. गुलाब, 'काव्य के रूप', द्वितीय संस्करण : 1950, प्रतिमा प्रकाशन, 206, हैदर कुली, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 225

118. मिश्र डॉ. भगीरथ, 'काव्यशास्त्र', प्रथम संस्करण : 1971, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ संख्या – 93

आत्मकथात्मक शैली

संजीव की कहानियों में कथावाचक की भूमिका प्रमुख होती है। उनकी बहुत-सी कहानियों में पात्रों के वक्तव्य नैरेटर के विचार प्रतीत होते हैं। उनकी बहुत-सी कहानियाँ जैसे **'क़िस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का', 'अपराध', 'टीस', 'लिटरेचर', 'धक्का', 'ऑपरेशन जोनाकी', 'हलफनामा', 'पिशाच', 'भूमिका', 'माँ', 'पूत-पूत! पूत-पूत!!', 'प्रेरणास्त्रोत'**, आदि में 'मैं' शैली के रूप में कथावाचक मौजूद है। जैसे **'लिटरेचर'** कहानी में –"मैंने मन ही मन तय कर रखा था कि कुछ और बड़ा हो जाऊँ तो मैं उनसे वह विद्या सीख लूँगा। कितना मजा आएगा तब।"[119] **'धक्का'** कहानी में –"अपने देहाती भुच्च कॉलेज से निकलकर जिस दिन उस को-एजुकेशन वाले कॉलेज में हमने पहली बार कदम रखा, हमने पाया कि हमारी दुम में एक खास तरह की अकड़ आ गई है।"[120] " **'हलफनामा'** कहानी में –"जी श्रीमान जी, मैं शुरू से ही बयान कर रहा हूँ। वह 14 अगस्त, ईसवी सन् 1997, दिन बृहस्पतिवार की सुबह सात बजे का वक्त था।"[121] **'अपराध'** कहानी में –"मैं एक थाने से दूसरे थाने की फ़ाइलों में बिखरी आँकड़ों की सांख्यिकी में भटक रहा था कि एक दिन एक थाने के बाहर सचिन के पिता राखाल बाबू ने पकड़ लिया।"[122] इससे स्पष्ट होता है कि संजीव ने अपनी कहानियों में अधिकांशतः 'मैं' शैली का प्रयोग किया है।

संवाद शैली

संवाद का अर्थ विभिन्न पात्रों के आपसी बात-चीत से है। यह कथोपकथन ही कहानी को

---

119. संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 22

120. संजीव, 'धक्का', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 321

121. संजीव, 'हलफनामा', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 49

122. संजीव, 'अपराध', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 84

नाटकीय, रोचक एवं प्रभावात्मक बनाती है। संजीव की कहानियों में इस शैली का प्रयोग प्रमुखता के साथ किया गया है जैसे **'लिटरेचर'** कहानी में –

"तुम कब आईं?"

"कब की..."

"ये बदबू कहाँ से आ रही है?"

"कहीं मेरे बदन से तो नहीं?" वह हँसी, अब गड्ढे उछलकर उसके गालों पर उभर आए थे।

"नहीं, नहीं, अगल-बगल के गड्ढों में कुछ मर गया होगा।"

"यह बदबू तो रोज ही यहाँ रहती है, आश्चर्य है, तुम्हें इसका पता आज चल रहा है।"

"तुम मज़ाक़ कर रही हो।"

"मज़ाक़? तुम्हें पता है, यह नदी कहाँ से निकलती है?"

"नहीं!"

"शराब कल से, उसका सारा उत्सर्जन और पानी लेकर।"

"अरे!"

और तुम्हें पता है, ये गड्ढे कैसे बने हैं यहाँ?"

"नहीं।"

"उसी शराब के रेफ्यूज का जहरीला पानी गलाता रहा है पत्थर। पत्थर गलते-गलते गड्ढे और गह्वर बनते गए ऐसे कि बैठ जाओ तो पता ही न चले।"[123]

वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली में लिखी गई कहानियों में लेखक घटनाओं का वर्णन मात्र करता है। **'घर चलो दुलारी बाई!'** कहानी में "बैसवाड़े में औरतों की स्थिति शूद्रों की तरह ही थी। घर

---

123. संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 26

के अंदर आपस में चाहे कट-मर जाएँ, बाहर मर्दों से चूँ तक नहीं कर सकती थीं।"[124]

'सीपियों का खुलना' कहानी में –"भोर की ताजी हवा में उसके रूखे बाल रूखी पंखुरियों की मानिंद झिरक रहे थे। अब वह उस घूरे पर खड़ा था, जहाँ बुहारकर फेंके गए गलीज कचड़े और मसले फूल, मरे पड़े फतिंगे, उनके पर और ऐसी तमाम वाहियात चीजें थीं।"[125]

'फुटबॉल' कहानी में –"आज वह फिर उसी दफ्तर में बैठा था। बूढ़ा हो चला है अब एक तरह से। बीस वर्ष पहले भी शायद इसी जगह बैठा था। 'शायद' इसलिए कि दफ्तर में एक बड़ा रद्दोबदल हो चुका है।"[126]

पत्रात्मक शैली

संजीव की कहानियों में कथानुरूप पत्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है जहाँ पात्र दूर से पत्रों के माध्यम से अपने मनोभावों को प्रकट करते हैं जैसे **'लिटरेचर'** कहानी में –

"तुम कितना अच्छा लिखते हो! काश मैं भी तुम्हारी तरह लिख पाती! तुम्हारे ही कॉलेज की बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा हूँ, तीन तारीख की शाम पाँच बजे गागर गुड़ी नदी के बगल में बन रहे मंदिर के पास आओगे!"[127]

'धावक' कहानी में भी भंबल दा ने अपने भैया को एक पत्र लिखा है, जिसके कुछ अंश

---

124. संजीव, 'घर चलो दुलारीबाई!', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 363

125. संजीव, 'सीपियों का खुलना', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 254

126. संजीव, 'फुटबॉल', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 264

127. संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 25

यहाँ द्रष्टव्य है –"कह नहीं सकता, तुम आओगे या नहीं, माँ की मौत के समय विदेश में थे। यदि आए भी तो शायद इस छोटे से मकान पर हक़ मत जतलाना। हम दोनों *'टग ऑफ वार'* के दोनों ओर शक्ति आजमाइश करते रहे हैं। निश्चय ही मेरी सम्बद्धता अपने दल के साथ है जो तुम जैसों के अभिजात को मिट्टी में पलोटता हुआ घसीट ले जाने को जी-जान से जुटा हुआ है। मैं भी तुम्हारी तरह होता तो तुम्हारे जैसा दीर्घायु होता। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, आठ-दस साल ज़्यादा जी लोगे यही न? जिस जुनून में जीया, उसकी तासीर का एक क्षण भी तुम्हारे तमाम ताम-झाम के सालों से उम्दा है! हो सके तो चखकर कभी देखना।"[128]

इसी प्रकार **'मानपत्र'** कहानी में भी पत्र लिखा गया है जो अभियोग की श्रेणी में है। **'हिमरेखा'** कहानी में भैया ने कपिल को पत्र लिखा है।

पूर्वदीप्ति शैली

संजीव की कहानियों में फ्लैशबैक पद्धति का प्रयोग हुआ हे। अपराध, हिमरेखा, घर चलो दुलारीबाई!, टीस, लिटरेचर, प्रेरणास्रोत, मरोड़, धावक, प्याज के छिलके, सीपियों का खुलना आदि कहानियों की बुनावट फ्लैशबैक पद्धति में है। 'हिमरेखा' कहानी की शुरुआत कथानायक के ट्रेन यात्रा से होती है जहाँ वह इलाहाबाद से अपने गाँव की ओर विलोमयात्रा करते हुए सोचता है –"रह-रहकर अँधेरों के बीच आज शाम की मैरिज पार्टी का दृश्य दु:स्वप्न-सा खिल उठता। उफ! कितनी भयानक बात थी! कल तक जिस कॉलेज में वह सिर उठाकर चला करता था, वहीं से सरे-महफिल नंगा होकर भाग आना पड़ा था उसे।...

नीरा, विभव की शादी कॉलेज कैम्पस में ही हुई थी। उसी कॉलेज के छात्र-छात्रा होने के कारण एक तरह यह शादी कॉलेज के उत्सव में तब्दील हो चली थी। ...

"तुम थे कहाँ?" शहनाज उसके सामने आकर खड़ी हो गई, 'यहाँ पूरी की पूरी हिट

---

128. संजीव, 'धावक', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 199-200

लिस्ट बनकर तैयार है, एक तुम्हीं बाकी रह गए म्याँ!"

"हिट लिस्ट?"

"हाँ! किसकी शादी किससे होनी है – यह मसला हमने आज ही फाइनल कर दिया है। ...अब तुम ठहरे टची, सेंटीमेंटल मोरलिस्ट! कोई लड़की तैयार ही न हुई तुम्हारे नाम पर।"[129]

यहाँ पर कपिल का बचपन में हुई उसके भैया का विवाह, और उसके गाँव की परंपरा के अनुसार भाभी को ही अपनी पत्नी मान लेने की परंपरा का मजाक उड़ाया जाता है और वह वहाँ से खिसककर ट्रेन से अपने गाँव की ओर पलाचन करता है जहाँ वह इन घटनाओं को सोचता है।

'अपराध' कहानी की शुरुआत भी फ्लैशबैक पद्धति में होती है जहाँ कथावाचक ट्रेन में यात्रा करते समय सोचता है –"ज़ेहन में धीरे-धीरे आकार ले रही है एक हवेली ...कस्बे में व्यवस्था और सत्ता का प्रतीक मेरी हवेली – कंचनजंघा। धीरे-धीरे कई चेहरे उभर रहे हैं, प्रभुसत्ता रोबीले-सेशन जज पापा, एस.पी. –बड़े भैया, जिलाधीश-छोटे भैया, गृह विभाग के सचिव – जीजा, उनके प्रभाव का अहसास कराती हुई गर्वीली बहन, सबके अपने-अपने पोस्टेड ज़िलों में चले जाने पर उदास राजमाता की तरह मम्मी, न जाने कितने मंत्रियों, अफसरों और ऊँचे ओहदे वालों के गड्ड-मड्ड चेहरे!"[130]

'मरोड़' कहानी की शुरुआत भी फ्लैशबैक पद्धति में होती है –"तड़के ही किसी खटपट से नींद टूट गई दीनानाथजी की। उन्होंने लेटे-लेटे ही देखा, माँ बाबूजी के चित्र पर पुरानी माला बदलकर टटके फूलों की नई माला लगा रही थीं। यानी बाबूजी का साथ छूटे हुए आज दस वर्ष गुज़र गए! ...

---

129. संजीव, 'हिमरेखा', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 366-367

130. संजीव, 'अपराध', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 79

उन्हें याद आया, बाबूजी गेमटीचर के अंदाज़ में कहा करते, "ज़िंदगी एक रिले रेस है। पहले बाप दौड़ शुरू करता है। क़तरे-क़तरे चू-चू कर रीते हो जाते हैं दिन, लीक में ही समा जाता है वजूद। बाप दे जाता है रिले की बैटन (छड़ी) अपनी संतानों को। संताने वहीं से शुरू करती हैं अपने हिस्से की अपनी रेस।"[131]

संजीव की कहानियों जैसे पूत-पूत! पूत-पूत!!, माँ आदि इत्यादि में फ्लैशबैक पद्धति में कहीं-कहीं बिसंगति दिखाई पड़ती है, फिर भी यह असंगतियाँ कथा-प्रवाह में बाधक नहीं बनती हैं।

भाषण शैली

संजीव की अधिकांशतः कहानियाँ कोयला खदानों तथा कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की व्यथाकथा है। इनका जीवन हमेशा मैनेजमेंट, पूँजीपतियों तथा नेताओं के शोषण से त्रस्त रहा है। फिर भी ये संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाते हैं। मजदूरों द्वारा आरंभ किये गए आंदोलनों के चित्रण के लिए कथाकार ने भाषण शैली का प्रयोग किया है। **'कन्फेशन'** कहानी की तो शुरुआत ही भाषण शैली में होती है –

"केलूडाँगा कोलियरी के हमारे बहादुर मजदूर साथियों!"...

"परिस्थितियों ने आज हमें जीवन-मरण के ऐसे नाजुक और निर्णायक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है जहाँ एक ही चीज़ बचती है –'करो या मरो'। सन इकहत्तर में कोलियरियों का राष्ट्रीयकरण हुआ था, तब यह कहा गया था कि कोयला राष्ट्र की संपत्ति है, मगर आज वही सरकार उसे निजी मालिकानों को बेच रही है। हम पूछते हैं, क्या कोयला अब राष्ट्रीय संपत्ति नहीं रहा या आप लोग भेड़-बकरियाँ हैं जिसे पैसे लेकर वह किसी को भी बेच सकती है?"[132]

---

131. संजीव, 'मरोड़', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 40

132. संजीव, 'कन्फेशन', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 264

'भूखे रीछ' कहानी में पार्शियल लॉक आउट का नोटिश लगने पर, इस शैली का प्रयोग देखने को मिलता है। फटीचरनुमा मजदूर भाषण देता है –"हमारा कोई माई-बाप नही है, इस दुनिया में!"[133]

'नेता' कहानी में अशोक भाषण देता है –"कारखाने के मजदूर साथियो, मैनेजमेंट ने आपके हड़ताली साथियों को चार्जशीट, संस्पेंशन और डिस्चार्ज के कागज थमा दिए हैं। आपके शुभचिंतकों का चरित्र बेनकाब हो गया है। आपसे अपील है कि हालात को देखते हुए आप अपनी हड़ताल जारी रखें।"[134]

साक्षात्कार शैली

संजीव ने अपनी कहानियों में साक्षात्कार शैली का भी प्रयोग किया है। **'लिटरेचर'** कहानी का वार्तालाप भी साक्षात्कार के नजदीक दिखता है जहाँ पाँच लोग मिलकर दीपक की पड़ताल करते हैं –

"खैर, यह तो बताइए दीपक साहब, आप लिखते कब हैं, मैं तो नहीं लिख पाता।"

"जी, लिखना तो मेरे लिए चौबीसों घंटे की प्रक्रिया है।"

"कितने पैसे मिल जाते हैं।" ...

"जी, अक्सर तो कुछ नहीं, उल्टे लिटिल मैगजीन्स को हमें ही कभी-कभी सपोर्ट करना पड़ता है।"

"यानी पैसों के लिए नहीं लिखते?"

"लिखना तो मेरी आत्मा है, जैसे आपकी आत्मा है आपका बिजनेस।"...

"वक्त तो जाया करती ही होगी यह आत्मा?"

"हाँ सर, मगर काम के वक्त मैं सिर्फ काम करता हूँ।"

---

133. *संजीव, 'भूखे रीछ', संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 100*

134. *संजीव, 'नेता', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 28*

"काम, यानी जेजे का सेल?"

"जी!"[135]

'सन्तुलन' कहानी की शुरुआत ही साक्षात्कार शैली में होती है –

"नाटकों में कब से काम कर रही है जोहराबाई?" जोहराबाई से इंटरव्यू का पहला सवाल मैंने किया।

"चौदह साल की थी, जब पहली दफा 'दशेला' में नाची थी।' ...

"और तब से कितने दिन गुजर गए नाटक करते हुए।"

"सर जी बताते हैं, छत्तीस साल हो गए।"

"क्यों, सर जी क्यों? आपको याद नहीं?"

"मैं कोई पढ़ी-लिखी नहीं। मुझे तो बस इत्ता-सा याद है कि उसी साल मेरी शादी हुई थी। वो, एक मेले में नाचने गए थे हम, वहीं सर जी ने हमें देखा।"

"और असलम ने भी।"

"जी।"[136]

काव्यात्मक शैली

संजीव की कहानियों में बीच-बीच में कविता या गीतों का प्रयोग हुआ है जिससे कहानी की संवेदना और सुदृढ़ हुई है। जैसे **'जीवन के पार'** कहानी में मानसिंह और बामई गीत गाते हैं –

"मानसिंह गाता – अमदोरादी चीता दाई
अमदोरादी चीता दाई

---

135. *संजीव, 'लिटरेचर', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 41*

136. *संजीव, 'संतुलन', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 182*

मरंगड़ा लेयो लेयो

कम बोरोया।।

(तुम जो चीता हो, नदी की इतनी लहरों से जूझकर भी मुझ तक आ जाती हो, प्रिये तुम्हें डर नहीं लगता?)

और जवाब में बामई गाती – आयंदो बाबू चीता-ग

आयंदो बाबू चीता-ग

मरंगड़ा लेयो-लेयो

कञ बोरोया आमलागिता

जीवोनञ एमेया।।

(हाँ मैं हूँ चीता, तुम्हारी चीता। नदी से क्या डरना, प्रिय तुम्हारे लिये जान जो हाजिर है।)"[137]

'हलफनामा' कहानी के बीच निराला की कविता के कुछ अंश उद्धृत हैं जो कहानी की प्रभावात्मकता को बढ़ाते हैं –

"यह घाट वही जिस पर हँसकर

वह कभी नहाती थी धँसकर

आँखें रह जाती थीं फँसकर

कँपते थे दोनों पाँव बंधु!"[138]

इसी प्रकार **'फैसला', 'सागर सीमान्त', 'ज्वार', 'जो एहि पद का अरथ लगावे'** आदि कहानियों में भी कविता तथा गीतों का प्रयोग किया गया है।

---

137. संजीव, 'जीवन के पार', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 129

138. संजीव, 'हलफनामा', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 51

व्यंग्यात्मक शैली

संजीव की कहानियों में सामंतवादी शोषण, मजदूरों का शोषण, बेरोजगारी, आदिवासी जीवन, पूँजीपतियों, मैनेजमेंटों, खदान मालिकों का शोषण इत्यादि का वर्णन देखने को मिलता है। इसलिए बहुत सारे जगहों पर कथाकार ने बहुत सारे मुद्दों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। **'क़िस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का', 'अपराध', 'टीस', 'मरोड़', 'नस्ल', 'ट्रैफिक जाम'** आदि कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया गया है। **'हलफनामा'** कहानी में पूँजीपतियों के शोषणचक्र पर व्यंग्य है –"हाँ तो श्रीमान् जी, मुझे नहीं मालूम कि इस लाल पोटली में क्या है, अगर यह गीता है तो इस पर हाथ रखकर मैं दावा कर सकता हूँ कि मैं गीता के संदेश का ही पालन कर रहा था, यानी कर्म ही कर रहा था, उसी पर अपना अधिकार था, फल पर तो सेठ जैसे मलाई काटने वाले मलाईदार परतों के लोगों का ही अधिकार था।"[139]

'नस्ल' कहानी में कुमार अपने छोटे बहनोई अजीत को समझाता है जो हिस्ट्री का टॉपर होकर भी बेरोजगार है। कुमार की यह बात ही व्यवस्था का पोल खोल देती है –"बिजनेसमैन और कारखानों के मालिक आपके लिए शोषक हैं, पूँजीपति जोंक, नेता क्या कहते हैं, वाइरस, ऑफिसर्स, कसाई, दलाल, आपकी डिक्शनरी की सबसे गलीज गाली। इसी ठसके में पड़े रहिए जिंदगी भर, कोई पूछने तक नहीं आएगा। जमाना बदल गया है बहनोई जी, दलाल अब गाली नहीं, ऑनर है।"[140] इससे सिद्ध होता है कि संजीव की कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

लोकगीत शैली

संजीव की कहानियों में लोकगीतों का अंकन भी परिलक्षित किया जा सकता है।

---

139. संजीव, 'हलफनामा', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 49

140. संजीव, 'नस्ल', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 348

'ज्वार' तथा **'सागर सीमान्त'** कहानी में बांग्ला लोकगीत, **'टीस'** कहानी में संथाली गीत तथा 'जो एहि पद का अरथ लगावे' तथा **'माँ'** कहानी में भोजपुरी लोकगीत शैली का प्रयोग देखने को मिलता है।

'माँ' कहानी में – लाली-लाली डोलिया में लाली दुलहिनिया
पिया की पियारी भोली-भाली दुलहिनिया...।"[141]

'मौसम' कहानी में – "मीर खाएन मीर आम
फत्ते खाएन तीन आम
हम चाटे कुसुलिया...!"[142]

'ज्वार' कहानी में – "मॅन माझी तोर बइठाले रे,
आमी आर बाइते पारलॉम ना,
बाइते-बाइते जीवॅन गेलो,
कूलेर देखा पाइलॉम ना।"[143]

फैंटसी

संजीव की कहानियों में इस शैली का प्रयोग बहुत कम हुआ है। जीवन की यथार्थवादी घटनाओं पर कटु प्रहार के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है। यह पाठक के कल्पना शक्ति में वृद्धि कर उसे जागरूक बनाती है। **'आहट', 'प्रेत मुक्ति', 'खोज', 'तिरबेनी का तड़बन्ना', 'जो एहि पद का अरथ लगावे'** आदि कहानियों में यह अलग-अलग रूपों में

---

141. संजीव, 'माँ', संजीव की कथा यात्रा तीसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 142

142. संजीव, 'मौसम', (कहानी संग्रह – झूठी है तेतरी दादी), प्रथम संस्करण : 2012, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 9

143. संजीव, 'ज्वार', (कहानी संग्रह – गुफा का आदमी), प्रथम संस्करण : 2012, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 9

प्रयोग हुआ है। **'मक्तल'** कहानी में फैंटसी शैली का प्रयोग देखने को मिलता है –"उस रात मुझे नींद में बुरे-बुरे सपने आते रहे। कभी मैं देखता कि मैं स्वयं किसी एड्स के मरीज की उतरन पहने 'मरा साहब' बनकर टहल रहा हूँ। 'साहब' कहते ही मेरी आत्मा तृप्त हो उठती है और मैं उसी दुकान पर सड़ी-गली सब्जी खरीदने लगता हूँ, तभी बलदेव आकर मेरा कॉलर पकड़ता है, 'बोय! कै महीने हो गए?"[144]

'धुन्ध' और धुन्ध' कहानी में भी फैंटसी शैली का प्रयोग देखने को मिलता है –"आठ आने में आदमी की आतमा के 'दरसन' कीजिए आठ आने में। सिरफ आठ आने में आदमी की आतमा!"[145]

निष्कर्ष

अत: यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि संजीव की कहानियाँ जनता के मन, भाव और भाषा की बात करती हैं। उनके कथ्य, शिल्प और भाषा में विविधता तथा व्यापकता पाई जाती है। जीवन की कुछ अनगढ़ बातों के समान भाषा में खुरदरापन भी है। उन्होंने अछूते विषयों को अपने कथ्य का आधार बनाया। संजीव सिर्फ विषय-वस्तु ही नहीं बल्कि शिल्प और भाषा की दृष्टि से भी अन्वेषण से गुजरते रहे हैं। कहानी के अंतर्गत उन्होंने आधुनिक और नवीन दोनों प्रकार के शैलियों का प्रयोग किया है। कथा के अनुसर वाक्य कहीं छोटे, सीधे, सरल हैं तो कहीं वृहद भी। पात्रों के अनुकूल आंचलिक भाषाओं का भी प्रयोग किया गया है। अरबी, फारसी, अंग्रेजी, मगधी, अवधी, बांग्ला, गढ़वाली शब्दों का प्रयोग किया गया है, कहानियों में आत्मकथात्मक, संवाद, व्यंग्यात्मक, लोकगीती, काव्यात्मक आदि शैली का प्रयोग सफलतापूर्वक किया गया है। पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग और कथानायक की भूमिका

---

144. *संजीव, 'मक्तल', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 59*

145. *संजीव, 'धुन्ध और धुन्ध', संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव, संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 278*

प्रमुख रूप से देखने को मिलती है। मिथक, कहावतें, मुहावरें, सुक्तियों, पहेलियों, बीजक का सफल अंकन हुआ है। समकालीन जीवन के अधिकांश ज्वलंत समस्याओं को व्यापक संदर्भ में उठाने के कारण कहानियाँ कुछ लंबी हो गई हैं। परंतु कहीं भी ये पाठक को बोझिल नहीं लगती हैं। बल्कि उनकी लंबी कहानियाँ अपना एक अलग पहचान रखती हैं। अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि इन्होंने विभिन्न शिल्पगत विधियों का बहुत ही सफल प्रयोग किया है।

संजीव के उपन्यास साहित्य की भाषा

साहित्य की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा ही है। उपन्यास किसी भी कथात्मक विधा जैसे कहानी, नाटक, निबंध आदि से ज्यादा स्वतंत्र और प्रयोगधर्मी विधा है, इसिलए उपन्यास में भाषा-प्रयोग के रचनात्मक क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक होते हैं। उपन्यास में भाषा के नये-नये प्रयोग किये जा सकते हैं। समकालीन होते हुए भी जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद की भाषा में भिन्नता है। बाबू देवकीनंदन खत्री ने चंद्रकांता में जिस भाषा का प्रयोग किया वह प्रेमचंद की भाषा से भिन्न है। समय के साथ समाज परिवर्तित होता रहता है और उसके साथ उसकी भाषा भी। इसलिए विभिन्न कथाकारों के भाषा में अंतर लक्षित किया जा सकता है। कुछ कथाकार निरंतर नये-नये भाषा का प्रयोग भी करते रहते हैं। उपन्यास में समाज के विशिष्ठ क्षेत्रों से चुने गए पात्रों का सृजन उपन्यासकार करता है। परिवेश और परिस्थितियों में भी व्यापकता लाता है। इसीलिए उपन्यास में पात्रों, परिवेश एवं परिस्थितियों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया जाता है। उपन्यासकार की भाषा के क्षेत्र में कथ्य और शिल्प के साथ सामंजस्य मिलाना पड़ता है अर्थात उपन्यास लिखते समय पाठकों का भी ध्यान रखना पड़ता है। मुहावरों, लोकोक्तियों या बिंब प्रतीक, व्यंग्य के साथ-साथ बोलचाल की भाषा का प्रयोग उपन्यास की प्रभावात्मकता को बढ़ा देता है। उपन्यास में मिथक, प्रतीक, अलंकार, गीति आदि प्रयोग के अवकाश अधिक रहते हैं। जटील और किताबी भाषा उपन्यास को दुरूह बना देता है और उसे पाठकों से दूर कर देता है। वास्तव में दैनिक जीवन में हम जिस प्रकार के भाषा का प्रयोग करते हैं, उपन्यास की भाषा उससे ज्यादा भिन्न नहीं होती है। वास्तव में उपन्यास मानव जीवन के विविध रूपों को व्यापक स्तर पर चित्रित करता है इसलिए उसमें जीवन की छोटी से छोटी घटनाओं को

शब्दों में पिरोने की क्षमता होती है। संजीव ने भी अपने उपन्यासों में भाषा के विविध रूपों का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। वे स्वयं अवधी भाषी हैं लेकिन भोजपुरी लोककलाकार भिखारी ठाकुर के ऊपर **'सूत्रधार'** उपन्यास लिखकर इन्होंने भोजपुरी पर अपनी पकड़ साबित कर दी। इसी प्रकार पश्चिम बंगाल में रहने के कारण उन्होंने अपने बहुत सारे उपन्यासों में बांग्ला भाषा का प्रयोग भी किया है। इसके अलावा उन्होंने अवधी, आदिवसी, संथाली आदि बोलियों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों, घटनाओं एवं प्रसंगों को पात्रानुकूल भाषा में प्रयोग कर उपन्यास गढ़े हैं।

भोजपुरी का प्रयोग

संजीव की कर्मस्थली कुल्टी में भोजपुरी भाषी लोगों की संख्या अधिक थी। अक्सर वे अपना नाम और परिचय छुपाकर अपने अंचल के लोगों से मिला करते थे एवं उनके दुख-दर्द तथा समस्याएँ सुना करते थे, जिसे बाद में वे अपने कथा-साहित्य में शामिल करते थे। संजीव के कथा-साहित्य में भोजपुरी का प्रयोग धड़ल्ले से मिलता है। **'जंगल जहाँ शुरू होता है'** में –"ना हुजूर! हमरा के चिट्ठी मिलल जंगल सरकार के। गरीब बनिया हइँत हुजूर! न देइँत तो दुकान लुट जाइत! जान न बचित हुजूर।"[146]

'सूत्रधार' उपन्यास में –"त-अ भाई लोगन, लबार के अतने काम बा कि हँसी-मजाक के फुरेरा भी छूटत रहे और मरजाद भी बनल रहे। कतना चीजु बा जौना पे लबारी कइल जा सकेला समाज की गंदगी, धरम के नाम पे अधरम, बड़ लोगन के छोट काम –कोई भी चीज, जौना से समाज के आँखि खुले। खाली मेहरारू के पीछे खस्सी की तरह 'बों-बों' करते हुए दौड़ना ही लबारी नहीं है।"[147] इसी प्रकार **'धार', 'सावधान! नीचे आग है'** उपन्यास में भी भोजपुरी का प्रयोग परिलक्षित है।

---

146. संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पहला संस्करण : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 59

147. संजीव, 'सूत्रधार', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 226

बांग्ला भाषा का प्रयोग

संजीव की शिक्षा-दीक्षा और नौकरी पश्चिम बंगाल में ही हुई। इसलिए इनके उपन्यासों में बांग्ला भाषा का प्रयोग स्वाभाविक है। जैसे –**'रह गईं दिशाएँ इसी पार'** में –"चारीदिके जॅल...किंतु एक फोटा मुखे देवा जाबे ना! (चारों तरफ पानी ही पानी, लेकिन एक बूँद भी मुँह में नहीं डाला जा सकता।)"[148]

'सावधान! नीचे आग है' में –"तोरा सब बोसे जा (तू सब बैठ जा)। देखते हैं, कौन आगे बढ़ता है?" ...ओ माँऽऽऽ! खाल भोरा...!"[149]

पंजाबी मिश्रित हिंदी का प्रयोग

संजीव के उपन्यास में पंजाबी मिश्रित हिंदी शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है जैसे 'सावधान! नीचे आग है' में –"अरे तू की छुपाएगा पुत्तराँ! देख, मेरे चेहरे पर लिखा हुआ है सब। हमने जैसेई सुना, ड्यूटी छोड़कर तेरी खोज करने निकला। ए ताँ रब दा आशीर्वाद समझ, नहीं तो एह आदिवासी किसे नू नहीं छड़दे।"[150]

आदिवासियों की बोलियों का प्रयोग

संजीव ने अपने उपन्यास **'सावधान! नीचे आग है', 'धार', 'पाँव तले की दूब'** में आदिवासियों के बोलियों का प्रयोग किया है। **'धार'** उपन्यास में लॉबीर की बैठक की घोषणा संथाली भाषा में होती है –"देलावन हिजूकान राते लॉबीर वयसी बाँसगड़ा रे होइया...।"[151]

---

148. संजीव, 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', पहला संस्करण : 2012, पहली आवृत्ति : 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 30

149. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 43-44

150. वही, पृष्ठ संख्या – 45

151. संजीव, 'धार', पहला संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 52

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में आदिवासी गीत का प्रयोग हुआ है –

"हो-हो-हो-हो तेञ लाडणयेन,

कोयेक-कोयेक तेञ मोकायेन।

हाय रे आदिवासी बोयहा

मित घाव हो वाङ पे गोड. लेत।"[152]

अवधी का प्रयोग

संजीव स्वयं अवधी भाषी हैं और उन्होंने अपने पहले ही उपन्यास **'किशनगढ़ के अहेरी'** में अवधी भाषा का प्रयोग किया है। इस उपन्यास का पुनर्जन्म **'अहेर'** के नाम से प्रकाशित हुआ है जिसमें भी अवधी भाषा का प्रयोग परिलक्षित है –"अब एतना बेगाना तो न बनो कक्का! अपनी पतोहू को आशीर्वाद तो देते जाओ। ...हम कौनों कसूर किहा बच्चा?"... 'कसूर! इही कसूर की खातिर तुहैं कक्का कहत मोरी छाती दुगनी होय जात है!"[153]

बोलचाल की भाषा का प्रयोग

संजीव के अधिकांशतः पात्र सामाजिक हैं, इसलिए इनके उपन्यासों में समाजों में प्रचलित बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है। **'धार'** उपन्यास में मैना सौंतालों को संबोधित करती है –"धन्न मनाऊँ रेल कंपनी का कि बछड़ा-बकरा कट जाता और हमको भोज खाने को मिल जाता। धन्न मनाऊँ रेलवई पुलिस का, हमको सिलतोड़ी कराता, हमरा बहिन-बेटी-माँ के साथ रंडीबाजी करता कि हमको दू-चार पैसा भेंटा जाता, धन्न मनाऊँ सरदार निहाल सिंह का कि हमरा चोरी हजम करके टरक से रेलवई करखना का कूड़ा हिंयाँ फेंकता कि हम लोहा-पीतल बीन-बान के उनको बेंच के पेट चलाता और धन्न मनाऊँ महेंद्र बाबू का कि तेजाब का फैटरी खोल के हमरा कुछ आदमी को रोजी देता, चाहे कुत्ता बनाके ही कायें न दे।"[154]

---

152. संजीव, 'पाँव तले की दूब', प्रथम पॉकेट बुक्स संस्करण : 2005, पुनर्मुद्रण : 2009, 2013, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, पृष्ठ संख्या – 37

153. संजीव, 'अहेर', प्रथम संस्करण : 2014, ज्योतिपर्व प्रकाशन, गाजियाबाद, पृष्ठ संख्या – 11

154. संजीव, 'धार', पहला संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 54

निष्कर्षतः इस प्रकार यह स्पष्ट है कि संजीव के उपन्यासों में अवधी, बांग्ला, संथाली, पंजाबी मिश्रित हिंदी, भोजपुरी एवं बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है।

शब्द योजना

अपने उपन्यासों को सफल एवं प्रभावात्मक बनाने के लिए संजीव ने अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है –

संस्कृत के शब्द

संजीव के उपन्यासों में संस्कृत शब्दों का प्रयोग लक्षित किया जा सकता है – भविष्यत्, रक्ताभा, शत्रुवत्, चतुर्मास, उत्तरायण, मतगणना, प्रारंभिक, प्रतिद्वंद्वी, उच्छवास, प्रस्ताव, सप्तपदी, कर्त्तव्यों, सर्वमंगला मंगल्ये दुःखपापविनाशिनी आदि।

अरबी-फारसी के शब्द

संजीव के उपन्यास साहित्य में अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे –वाक़फ़ियत, दग़ा, पैग़ाम, कफ़न, दफ्तर, फ़रियाद, फ़र्क़, अक्सर, खुमारी, तरतीब, फालिज, अदब, दर्ख्वास्त, अदावत, नुमाइन्दे, खुशगवार, कमबख्त आदि।

अंग्रेजी के शब्द

विज्ञान का छात्र होने के कारण संजीव ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से किया है जैसे –मिथेन, कार्बन-मोनोक्साइड, एच-टू-एस, कास्टिंग, अप्रेंटिसशिप, टेस्ट, प्लांट, स्ट्रिक्टली, एलेक्ट्रोस्टैटिक प्रेसीपिटेशन, फिल्टर, रेफ्यूज, वाटर-ट्रीटमेंट, "ट्रांसफर, एक्टीविटी आदि।

अंग्रेजी के भ्रष्ट शब्द

संजीव के उपन्यासों में पात्रानुकूल अंग्रेजी के भ्रष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे –टरक (ट्रक), रिमारक (रिमार्क), मरडर (मर्डर), एरेस्ट (अरेस्ट), प्रोमोशन (प्रमोशन), यूनिबरसीटी (यूनिवर्सीटी), रीजियन (रीजन), उनियन आदि।

हिंदी के भ्रष्ट शब्द

संजीव के उपन्यासों के अधिकांशतः पात्र गरीब, शोषित, पीड़ित, अल्पशिक्षित जनता है इसलिए उनके उपन्यास साहित्य में हिंदी के भ्रष्ट शब्दों की भरमार है जैसे –कुच्छो (कुछ), आसिरवाद (आशीर्वाद) हरिना कस्यप (हिरणकश्यप), तुमरा (तुम्हारा), परगट (प्रगट), संझा (संध्या), पिलाटफारम (प्लेटफॉर्म), शास्तर (शास्त्र), पुन्न (पुण्य), पराश्चित (प्रायश्चित), सरग (स्वर्ग), पंचाइत (पंचायत), सराध (श्राद्ध) आदि।

जोड़े के साथ आये शब्द

संजीव के उपन्यासों में जोड़े के साथ प्रयोग हुए शब्दों की संख्या बहुतेरी है जैसे –जैसे-तैसे, अगल-बगल, आस-पास, रोजी-रोजगार, हाल-चाल, पढ़ाई-लिखाई, अच्छा-खासा, अता-पता, हिसाब-किताब, काज-परोजन, मल-मूत, जहाँ-तहाँ, इक्के-दुक्के, साफ-सफाई, नाई-नाइन आदि।

द्विरुक्ति शब्द

संजीव के उपन्यासों में द्विरुक्ति शब्दों का प्रयोग है जैसे –सही-सही, नई-नई, दूर-दूर, बिखरे-बिखरे, छोटी-छोटी, हाय-हाय, मुड़-मुड़कर, खभर-खभर, पीछे-पीछे, काँव-काँव, गोल-गोल, ठीक-ठीक, पीली-पीली आदि।

ध्वन्यात्मक शब्द

परिवेश की सृष्टि के लिए संजीव ने अपने उपन्यासों में ध्वन्यार्थ शब्दों का प्रयोग किया है जैसे –धर्मनाथ जी का मन्दिर। टुन-टुन बजती घंटियाँ। ...डाल पर चढ़कर लड़के पानी में कूदते हैं –छपाक-छपाक!, रेलगाड़ी की आवाज है यह –छुक-छुक! छुक-छुक! पीं-ई-ई-ई!, कुतिया के 'छप-छप' तैरने की आवाज, सड़क पर कोयले की इतनी गर्द जमा थी कि जूते हपस-हपस कर रहे थे।, मंगर के कंठ से अस्फुट बर्राहट ऐसे फूटी जैसे कोई गौरैया अपने घोंसले से फुर्र-से उड़ी हो।

भोजपुरी के शब्द

अवधी भाषी होने के बावजूद संजीव के उपन्यासों में भोजपुरी शब्दों की भरमार है। इसका मूल कारण है कि वह पश्चिम बंगाल में जहाँ रहते थे वहाँ भोजपुरी भाषी मजदूरों की पर्याप्त संख्या थी। उदाहरण –ले गइल, तौना खातिर, अन्हार, ओकर डर नइखे, भुलाइल, तोहार किरिया, हुँवई, तभिये, ओकरा, कोइँछा आदि।

बांग्ला के शब्द

संजीव की शिक्षा-दीक्षा पश्चिम बंगाल के वर्दवान जिले के कुल्टी में हुई। रोजगार भी उन्हें बंगाल की मिट्टी ने दिया इसलिए उनके कथा-साहित्य में बांग्ला के शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक है। जैसे –'रह गईं दिशाएँ इसी पार' नामक उपन्यास में उन्होंने सिर्फ बांग्ला के शब्द ही नहीं बल्कि बांग्ला वाक्यों का प्रयोग भी किया है जैसे –"अरे मोसाय, आपना के खुजे-खुजे आमी हायरान... चारीदिके जॅल... किंतु एक फोटा मुखे देवा जाबे ना! (चारों तरफ पानी ही पानी, लेकिन एक बूँद भी मुँह में नहीं डाला जा सकता)।"[155]

"ओ मेये, एइ पूरो एलाकाटार नीचोने आगून आछे –जानो?"[156]

अवधी के शब्द

संजीव की मातृ भाषा ही अवधी है। उन्होंने अपने उपन्यासों में इसका प्रयोग किया है जैसे –"नांय, जुगाड़, इहां, मेहरारू, एक-ठे, चाभैं, इहि खातिर"[157] आदि।

---

155. संजीव, 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', पहला संस्करण : 2012, पहली आवृत्ति : 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 30

156. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 29

157. संजीव, 'अहेर', प्रथम संस्करण : 2014, ज्योतिपर्व प्रकाशन, गाजियाबाद, पृष्ठ संख्या – 56

भाषा-सौंदर्य के विविध उपकरण

उपमान

भाषा-सौंदर्य के माध्यम से अपने उपन्यासों को प्रभावात्मक बनाने के लिए संजीव ने उपमानों का भरपूर प्रयोग किया है जैसे – दूर से झाँकते स्त्री-पुरुष, बच्चे जीप के पास आते ही कछुए की तरह गर्दन घुसेड़ लेते।"[158] "अचानक मुझे दूर के पेड़ बिदके हुए मवेशियों-से मचलते नज़र आते हैं।"[159] झील के किनारे दूर-दूर तक कुन्तलों की तरह छितराए दरख्त और झाड़ियाँ हैं और उनके साथ नगीने की तरह जड़े इक्के-दुक्के खपड़ैल।"[160] "घंटों की घहराती आवाज पर कुत्ते की तरह कनमना कर उठ खड़ा होता है। हाथी आ रहा है।"[161] "बहुत जीवंत तो नहीं थे, मरे-मरे से थे, जैसे ऊसर की दूब, लेकिन थे वे अक्षर ही! और उस दिन, जिस दिन वे अक्षर फटी हुई चिट्ठी पर श्राद्ध के घंटे-से टँगे थे?"[162] "बनसूरन से लाल-भभूके सर पर कनखजूरे-सी पतली चोटी, जो उनके अनुसार ब्रह्मरंध्र को ढँकने के लिये छोड़ दी जाती है।"[163] "उनके गोरे-लम्बोतरे चेहरे में जड़ी दो आँखें वज़न और भाग्य बताने वाली मशीन के बल्ब की तरह बारी-बारी से जला-बुझा करतीं।"[164]

---

158. *संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पहला संस्करण : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 10*

159. *संजीव, 'पाँव तले की दूब', प्रथम पॉकेट बुक्स संस्करण : 2005, पुनर्मुद्रण : 2009, 2013, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, पृष्ठ संख्या – 8*

160. *वही, पृष्ठ संख्या – 8*

161. *संजीव, 'सूत्रधार', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 14*

162. *वही, पृष्ठ संख्या – 26*

163. *संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 30*

164. *वही, पृष्ठ संख्या – 60*

शब्द शक्तियाँ

संजीव ने अपने उपन्यासों में सामाजिक भेदभाव को दर्शाने के लिए अभिधा और लक्षणा शब्द शक्तियों का प्रयोग किया है जेसे –"मगर पाप है कि पानी में फेंके गए मुर्दे की तरह उतरा ही आता है।"[165] "सभी हिजड़े हैं, मैं भी। यह पूरा देश हिजड़ा है।"[166]

कहावतें

संजीव के उपन्यासों में समाज में स्थित भेद-भावों, विसंगतियों को कहावतों, लोकोक्तियों के माध्यम से व्यंग्य रूप में चित्रित किया गया है जैसे – वही बाप जो बिगड़ैल, बाभन राजपूतों के आगे कितने नरम सुर में बोलता है, उसे 'काट खाने को दौड़ता है।"[167] "उनके आते ही 'बिछ गए' थे बाबा मगर उनकी झलक पाते ही 'कोने का बिलार' हो गया भिखारी।"[168]

वाक्य विन्यास के विविध प्रयोग

संजीव ने अपने उपन्यासों में वाक्य-रचना के नये-नये प्रयोग किये हैं।

डाँट वाले अंश – संजीव ने अपने उपन्यासों में डाँट वाले चिन्हों का प्रयोग किया है जैसे –"हम का खाएँ और का खिलाएँ बाल-बच्चों को ...? अकेले हो ...?"[169] "अकेला होता तो चला भी जाता कहीं ...नागपुर, नासिक, मुम्बई, दिल्ली ...लेकिन ये दो-दो मुलगियाँ, बायको

---

165. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 34

166. संजीव, 'सर्कस', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 20

167. संजीव, 'सूत्रधार', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 11

168. वही, पृष्ठ संख्या – 18

169. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 17

इन सबको लेकर कहाँ जाऊँ?"[170] "देखो भिखरी, दोनों नृत्य करता है ...नाच! नाच का भंगिमा देखो ...हाय रे भगवान केस्टो, तुमार मॅहिमा!"[171] "सोचिए, आप इतनी ऊँचाई से अनएलर्ट गिरी हैं ...मुँह पर परेशानी ज़रा गहरी, ऐसे उठिए कि लगे कमर में लोच ...हाँ फेसिंग टुवर्ड्स कैमरा, यस यस ...कट!"[172]

छोटे-छोटे वाक्य

संजीव ने अपने उपन्यासों में अनेक छोटे-छोटे किंतु प्रभावात्मक वाक्यों का प्रयोग किया है जैसे –

"पुरुष का रोल क्या है प्रजनन में?"

"विज्ञान की भाषा में?"

"जी!"

"आधे जीन देता है, आधे क्रोमोजोम्स?"

"बस?"

"प्रजनन में तो बस, बाकी परवरिश।"

"..."

"नहीं, हम चाहें तो अकेले-अकेले ही संतान पैदा कर सकती हैं," न...?"

"हां, मगर वे लड़कियाँ ही होंगी, लड़के नहीं।"[173]

---

170. संजीव, 'फाँस', प्रथम संस्करण : 2015, द्वितीय संस्करण : 2016, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 17

171. संजीव, 'सूत्रधार', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 39

172. संजीव, 'सर्कस', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 106

173. संजीव, 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', पहला संस्करण : 2012, पहली आवृत्ति : 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 140

"काहें, दहेज कुछ ज्यादा माँग रहे हैं?"

"वो तो माँगेंगे ही।"

"फिर भी?"

"दस लाख! सीताराम! सीताराम!! लड़का क्या करता है?"

"एस.पी.! बाप कमिश्नर!"

"लेकिन दस लाख?"[174]

"कैसे हैं?"

"ठीक!"

"कोई बात हुई?"

"हाँ, जेनी ने शादी कर ली।"

"तो कम्पनी का नाम...?"[175]

अतः संजीव के उपन्यासों में सारगर्भित छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

अंग्रेजी हिंदी वाक्य

संजीव विज्ञान के छात्र रहे हैं। इसलिए पात्रानुकूल अंग्रेजी-हिंदी वाक्यों का प्रयोग अपने उपन्यासों में बेझिझक किया है जैसे –"ओह मैंने बटाया नहीं, मिस्टर एंड मिसेज बिजारिया माने विस्नू और एलिस आपको स्पांसर कर रहे हैं, फंडामेंटल रिसर्च के लिए।"[176]

"इतने बड़े-बड़े साइंटिस्ट यहाँ हैं, सेंट्रल फुअल रिसर्च इंस्टिट्यूट, इंडियन स्कूल ऑफ़ माइन्स, माइन्स सेफ़्टी जैसे करोड़ों-करोड़ के संस्थान हैं, मगर देखिए, किस तरह सब घोड़े

---

174. संजीव, 'धार', पहला संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 168

175. संजीव, 'सर्कस', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 73

176. संजीव, 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', पहला संस्करण : 2012, पहली आवृत्ति : 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 23

बेचकर सो रहे हैं?"[177]

"कारपोरेट-सोशल, रेसपोंसिबिलिटी इन देशी-विदेशी सेठों की जिम्मेवारी।"[178]

पूर्ण अंग्रेजी वाक्य

संजीव ने अपने उपन्यासों में कई जगहों पर पात्रानुकूल पूर्ण अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग किया गया है जैसे –"अतुल! नाउ नो मोर ट्रिप्स टू बोटानिकल गार्डन।"[179]

"आय विल अर्न माय रिकॉग्नीशन मायसेल्फ। आय विल..."[180]

"ए चेन्ज फ्रॉम आवर डे-टु-डे अरबन लाइफ!"[181]

"यस दैट रेखा इज़ नो मोर, शी इज़ आलरेडी डेड!"[182]

अतः संजीव के कथा-साहित्य में अंग्रेजी वाक्यों और शब्दों का अधिकांशतः प्रयोग लक्षित किया जा सकता है।

घोषणाओं से प्रयुक्त वाक्य

संजीव ने अपनी उपन्यासों में घोषणाओं से प्रयुक्त वाक्यों का प्रयोग किया है जैसे –

---

177. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 33

178. संजीव, 'फाँस', प्रथम संस्करण : 2015, द्वितीय संस्करण : 2016, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 15

179. संजीव, 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', पहला संस्करण : 2012, पहली आवृत्ति : 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 22

180. संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पहला संस्करण : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 7

181. संजीव, 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', पहला संस्करण : 2012, पहली आवृत्ति : 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 31

182. संजीव, 'सर्कस', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 148

"एस.पी. साहब, मुर्दाबाद!

मुर्दाबाद!!

सुदामा हत्यारा है!"

हत्यारा है!!

"सुदीप्त ढोंगी है!

ढोंगी है!!

ढोंगी, हत्यारे, इस्तीफा दो!"

इस्तीफा दो!"[183]

"जेल का ताला टूटेगा – दीपनरायन छूटेगा! पुलिस के गुंडे – हाय-हाय!"[184]

उपन्यास साहित्य का शिल्पगत अध्ययन

उपन्यास को बुर्जुआ समाज का महाकाव्य कहा जाता है और प्रायः सभी आलोचकों ने इसे कला का एक नया रूप माना है। उपन्यास का संबंध यदि आधुनिक पूँजीवादी युग के उदय और महाकाव्य के पतन के साथ जोड़ा जाय तो यह यथार्थ के सबसे नजदीक की विधा है। परंतु यह यथार्थ परिवर्तनशील है इसलिए उपन्यासों में इसकी अभिव्यक्ति भी बदलती रहती है। आधुनिक मनुष्य उपन्यास पढ़ने की ओर क्यों उन्मुख हुआ इसका एक विचार यह है– "उपन्यास औद्योगिक मध्यवर्ग की व्यापक दृष्टि को प्रतिबिंबित करता है – एक ऐसे वर्ग की दृष्टि को जिसके संरक्षण में काफ़ी हद तक उपन्यास का लचीला सांस्कृतिक महत्व सुरक्षित रह सका है।"[185]

---

183. संजीव, 'पाँव तले की दूब', प्रथम पॉकेट बुक्स संस्करण : 2005, पुनर्मुद्रण : 2009, 2013, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, पृष्ठ संख्या – 108

184. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 13

185. जैन निर्मला (संपा), 'साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन, आलेख ऐलन स्विंगवुड, 'उपन्यास का समाजशास्त्र – कुछ समस्याएँ', अनुवाद शांतिस्वरूप गुप्त, प्रथम संस्करण : 1986, कार्यान्नय निदेशालय, दिल्ली, विश्वविद्यालय, मॉडल टाउन द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ संख्या – 86

उपन्यासों में किस्सागोई की विशेषताओं का समावेश प्रायः उपन्यासकार करते हैं क्योंकि किस्सा कहने और सुनने की प्रवृत्ति मनुष्य में विकास काल से ही है। इसलिए उपन्यासकार उपन्यास में कौतूहल, रहस्य और नाटकीयता का समावेश करता है जो किस्सा में होता है। लेकिन इन तत्वों के प्रयोग से केवल घटनाप्रधान कौतूहलपूर्ण और मनोरंजन-प्रधान उपन्यास की ही रचना हो सकती है जबकि आज बल कथावस्तु में घटनाओं पर नहीं बल्कि वर्णित स्थितियों, मनोभावों, आंतरिक द्वंद्वों पर होती है। इसलिए आजकल घटना-बहुल्य उपन्यास की रचना प्रचलन में नहीं है क्योंकि ऐसे उपन्यासों को पढ़ना अब साहित्यिक अभिरुचि में शामिल नहीं है। आज हिंदी उपन्यासों के शिल्प में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। आत्मकथात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, डायरी शैली, रिपोर्ताज शैली, साक्षात्कार शैली, पत्रात्मक शैली, रेखाचित्र शैली या इन सबका सम्मिलित रूप कई उपन्यासों में व्याख्यायित किये जाते हैं। उपन्यास रचना में किसी भी शैली का प्रयोग क्यों न हो, स्थितियों और मनोभावों का उद्‌घाटन इस प्रकार होना चाहिए कि पाठक में इस उद्‌घाटन के लिए उत्सुकता हो। उपन्यास में गतिशीलता और उसके पात्रों में गहरी बेचैनी होनी चाहिए। जो भी हो कथावस्मतु का स्थान उपन्यास में वही है जो हमारे शरीर में रीढ़ की हड्डी का।

विषय शिल्प के अंतर्गत संजीव ने उपन्यास साहित्य में भी अछूते संदर्भों की कलात्मक प्रस्तुति की है। उनके उपन्यासों के कथ्य नवीन और मौलिक है। कथानक का प्रारंभ, मध्य और अंत सजीव, स्वाभाविक, प्रभावात्मक एवं नवीन संभावनाओं का अन्वेषक है। संजीव के उपन्यास मूलतः पिछड़े उपेक्षित आदिवासी, किसान, दलित, अछूत, सर्कस कलाकारों की पीड़ा, खादानों में काम करने वाले मजदूरों की व्यथा, वैज्ञानिक खोज और उसका दोहन, लोककलाकार की जीवनी, डाकू समस्या, सामाजिक विषमता, बेरोजगारी, नारी शोषण और भ्रष्ट व्यवस्था आदि विषयों पर आधारित है।

वर्णन द्वारा आरंभ

गद्य की भाषा में वर्णन एवं विश्लेषण की क्षमताएँ होती हैं। ये विशेषताएँ कुछ ऐसी होती हैं जिसके द्वारा मनुष्य अपने मनोभावों और विचारों को दूसरे तक सम्प्रेषित कर पाता है।

संजीव ने अपने कुछ उपन्यासों की शुरुआत वर्णन द्वारा किया है जैसे –"जेल का जबड़ा थोड़ा-सा खुला और रिहा होनेवाले कैदियों को उगलकर फिर से बंद हो गया। चेहरे का सिपाही सलाखेदार फाटक में ताले बंद करते हुए इत्मीनान की साँस ले रहा था कि तभी उसके कानों में कोई शोर सुनाई पड़ा। उसने पलटकर अंदर देखा तो एक छोटी-मोटी भीड़ उमड़ती चली आ रही थी। इस शोर में सबसे विचित्र थी किसी नवजात शिशु की रुलाई। भीड़ के और करीब आने पर उसने देखा कि शिशु स्वयं जेलर साहब की गोद में है, पीछे-पीछे दूसरे कर्मचारियों, सिपाहियों का भिनभिनाता हुजूम। दूर से ही जेलर साहब का बदहवास-सा स्वर आया, "वह औरत जो जेल से आज रिहा हुई, चली गई क्या?"[186]

"सब संयोग की बात है। न भाई साहब को कैंसर हुआ होता, न उन्हें इलाज के लिए ठाकुर पुकुर आना पड़ता, न वह सुखाड़ इलाके का होता, न यहां के पानी और हरियाली की हिलकोर देख कर ऊट-सी गर्दन निकाल कर सुबह-सुबह टहलने के लिए चल पड़ता, न राह में गिरे सुपारी के फलों को चुनने का बचकाना लोभ पालता, न डॉक्टर जैक्सन के जाल में फंसता।"[187]

स्पष्ट है कि यहाँ संजीव के उपन्यासों का प्रारंभ ठाकुर पुकुर के प्रकृति वर्णन और जेल के दृश्य के वर्णन से हुआ है। यह वर्णन पाठक के हृदय में एक बेचैनी की सृष्टि करता है, वह इसे आगे पढ़ने को उत्सुक होता है। इनके उपन्यासों के प्रारंभ में विविधता है।

उपन्यास का मध्य

उपन्यास का मध्यभाग अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसमें कथानक का विकास होता है। कथानक के प्रारंभ में जिन बातों को रखा गया है उसे सहज, स्वाभाविक और विश्वसनीय ढंग से चरमसीमा पर पहुँचाया जाता है। उपन्यास के उद्देश्य की पुष्टि भी इसी भाग में होता है। पात्रों के आंतरिक और बाह्य संघर्षों का चित्रण भी उपन्यास के इसी भाग में होता

---

186. संजीव, 'धार', पहला संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 9

187. संजीव, 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', पहला संस्करण : 2012, पहली आवृत्ति : 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 15

है। तीव्र गति से विकास करता हुआ उपन्यास पाठकों को जिज्ञासु बनाये रहता है और कथा को परिणति की ओर मोड़ देता है। जैसे –**'सावधान! नीचे आग है'** उपन्यास के मध्य में कोलियरी खदान मजदूरों के बीच मनाये जाने वाले सेफ्टी वीक का वर्णन है जहाँ जलसे में आगे खदान में होने वाले दुर्घटना का संकेत दे दिया जाता है –"हम न कौनो गलत रास्ता पकड़ा था, न दारू पी के गया था। न सो रहा था, न लालच में झोल झाड़ रहा था, तइयो पे अक्सीडंट! एकरा में कहूँ, ईहो देखाया है कि मनीजर घूस ले के कमजोर खूँटा लगवाया – घुनायल, सरल...छत जाँच करने न साहेब आया, न नीसपिट्टर। एकरा में कहूँ, ईहो देखावल है कि कम हवा में काम कराया जाता है, बेमारी होता है। अउर भइया, ईस्टील की धुनहियाँ (आर्च) पे दावा साच है कि नँय गिरेगा?... ऊपर से नीचे तक ठीकेदार, सूदखोर, जुआ खेलाने वाले, दारू बेचने वाले, दलाल अउर हरामखोर अपीसर – सब बेच खाया कोईलॉरी को। के काट रहा है आपन डार, जेकरा पे बैठा हुआ है – तनी सोचो!"[188]

एक गोड़ कट्टे हुए मजदूर के ये वक्तव्य कोयला खदान के क्षेत्र में सेफ्टी वीक मनाये जाने पर कथाकार का व्यंग्यात्मक प्रहार है। उपन्यास के परिणति की ओर होन वाले भयावह खदान दुर्घटना के मूल कारणों को उपन्यासकार यहाँ रेखांकित कर देता है। **'जंगल जहाँ शुरू होता है'** उपन्यास के मध्य में उपन्यासकार ने डी.एस.पी. कुमार के माध्यम से डाकू समस्या के मूल में निहित कारणों का उल्लेख किया है –"मैंने बार-बार कहा है सर कि डाकू समस्या कोई ऊपर का आवरण नहीं है कि आप उसे खरोंचकर फेंक दें। इनकी जड़ों में भूमि सुधार का न होना, ढीला प्रशासन, पॉलिटिकल सेल्टर, रोजगार की समस्या, धर्म, टिपिकल भौगोलिक स्थिति वगैरह हैं – ये सभी इंटररिलेटेड हैं, सारा कुछ दुरुस्त कर दीजिए, रोग खुद-ब-खुद खत्म हो जाएगा।"[189] इससे डी.एस.पी. कुमार का डाकू समस्या पर गहरी जानकारी और

---

188. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 132-133

189. संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पहला संस्करण : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 146

उनके प्रति संवेदनात्मक व्यवहार स्पष्ट हो जाता है परंतु उसको इस समस्या के उन्मूलन का पूरा चार्ज नहीं दिया जाता है। अतः उपन्यास का मध्य यथार्थवादी और प्रभावात्मक है।

उपन्यास का अंत

उपन्यास के प्रारंभ और मध्य के समान उसकी परिणति भी आकर्षक और प्रभावात्मक होनी चाहिए क्योंकि यहाँ आकर उपन्यास अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है। उपन्यास का अंत मर्मस्पर्शी, शिक्षाप्रद, चेतना प्रवाहित करने वाला होना चाहिए।

चेतना प्रवाह वाला अंत

आज लोग शिक्षा ग्रहण कर अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति सचेत हो रहे हैं। वर्षों से जारी परंपरागत शोषण के विरुद्ध लोग एकजूट हो रहे हैं। कुछ इसी प्रकार का अंत संजीव के **'धार'** और **'सर्कस'** उपन्यासों में देखने को मिलता है जहाँ **'धार'** की नायिका मैना अपने जीवन संघर्ष में कठिन परिश्रम से गुजरती है, जनखदान खोलती है, उसके देह को नोचा-खसोटा जाता है, उसके जीते जी उसके पिता और पति के द्वारा उसका श्राद्ध कर दिया जाता है फिर भी तेजाब फैक्ट्री के विरुद्ध आवाज उठाती है, जेल जाती है। वह किसी भी प्रकार का अत्याचार सहने के लिए तैयार नहीं है –"जहाँ-जहाँ बुलडोजर पहुँचता है, उहाँ-उहाँ मैना होती है। कितनी लंबी डुबकी मार के कहाँ उतराएगी – इसे कोई नहीं जानता। वह मरी नहीं, मर सकती ही नहीं, जिस दिन सब बुलडोजर को उलट आएगी, वह फिर हमारे बीच चली आएगी। अभी उसकी एक झलक पाने का सिर्फ एक उपाय है –जुगनू। जहाँ-जहाँ अंधेरे में जुगनू आपको चमकता दिखलाई दे, ईमानदारी से पुकारिये, 'मैना'! कान साधे रहिए – बहुत गहराई से कोई जवाब आएगा, हूँऽऽऽ।"[190]

'सर्कस' उपन्यास में सर्कस पूरी व्यवस्था का प्रतीक बनकर उभरा है जिसे एक न एक दिन समाप्त होना ही है। इसमें टुटे हुए लोगों की तड़प, आशाएँ और आकांक्षाएँ भी हैं जिसे

---

190. संजीव, 'धार', पहला संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 200

उपन्यास के अंत में दर्शाया गया है –"सामने आकर रुकी है पुलिस की गाड़ी। अंदर अभिजीत है। उसमें भरे जाने के पूर्व वह मुस्कुराकर हाथ हिलाते हुए अभिवादन करती है, जोकरनुमा हुलिया में लड़खड़ाती हुई सन्धू दी भी ...जैसे तोप की सुरंग में घुसने के पूर्व आर्टिस्ट और जोकर दर्शकों का अभिवादन करते हैं। यह उसके पुराने शो का अंत भी है और नए शो की शुरुआत भी। शुरू तो किसी चीज़ से भी किया जा सकता है, कहीं से भी किया जा सकता है।"[191]

पात्र एवं चरित्र चित्रण

कथावस्तु के बाद उपन्यास के सबसे महत्वपूर्ण तत्व पात्र तथा चरित्र चित्रण है। बिना पात्र के किसी कथानक की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। यह लेखक के कल्पना और यथार्थ की उपज होती है। प्रेमचंद उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र-मात्र समझते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उपन्यास के कथा के विकास में विभिन्न पात्रों एवं चरित्रों के क्रियाकलाप की भूमिका अग्रगणी है। कथा में पात्रों का एक अपना जीवन और जीवन संघर्ष होता है। वह उपन्यासकार के हाथ की कठपुतली नहीं होता है, पात्रों का अपने कथा के अनुरूप ही चलना या व्यवहार करना पड़ता है। यदि कथाकार पात्रों को उसके सामाजिक, आर्थिक और मानसिक बुनावट के अनुसार काम नहीं करने देता है तो वे पात्र बोझिल और यांत्रिक बन जाते हैं और यांत्रिक पात्र किसी भी प्रकार पाठकों पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ पायेंगे। उपन्यास के सजीव और यथार्थवादी पात्र बहुत दिनों तक पाठकों के मन-मस्तिष्क पर सवार रहते हैं। उपन्यास के मुख्य पात्र के साथ गौण पात्र भी अपने में कुछ न कुछ विशेषता समेटे रहते हैं। इसलिए उपन्यास के पात्र एवं चरित्र सजीव तथा स्वाभाविक होना चाहिए। अत्यधिक कल्पनाशीलता से भी कथाकार को बचना चाहिए। थोड़े कल्पना के साथ यथार्थ का चित्रण ही उपन्यास की प्रभावात्मकता को बढ़ा देती है। इसमें लेखक के अपने अनुभव की बहुत बड़ी भूमिका होती

---

191. संजीव, 'सर्कस', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 204

है। वह अपनी सारी बातों को अपने पात्रों की जुबानी कहलवाता है।

आदर्शवादी पात्र

ऐसे पात्रों के माध्यम से लेखक समाज के सामने अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न, अज्ञान, अंधविश्वास, अनैतिकता के खिलाफ एक आदर्श उपस्थित करना चाहता है। संजीव के उपन्यासों के आदर्शवादी पात्रों में जय और चाँदनी (अहेर), झरना और अब्राहिम खान (सर्कस), आशीष, ऊधमसिंह (सावधान! नीचे आग है), मैना और अविनाश शर्मा (धार), कुमार और मुरली पांड़े (जंगल जहाँ शुरू होता है), सुदीप्त (पाँव तले की दूब) इत्यादि हैं।

श्रमिक वर्ग के पात्र

संजीव के उपन्यासों में मजदूर पात्रों की भरमार है जेसे – रामूदादा, जैनूल, ट्रेनर खान, प्रसाद बाबू (सर्कस), कोयला खदान में काम करने वाले मजदूर, आशीष, हेम्ब्रम, ऊधम, सोमारू, जोखू काका, विष्टू दा (सावधान! नीचे आग है), मैना, मंगर, फोकल, टैंगर, सितवा (धार), बिसराम, बिसराम-बहू, काली, फेंकन, फेकन बहू, मलारी, श्यामदेव, नोनिया, परशुराम (जंगल जहाँ शुरू होता है), भिखारी ठाकुर (सूत्रधार), कालीचरण किस्कु, फिलीप, गोपाल महतो इत्यादि (पाँव तले की दूब)।

स्त्री पात्र

'धार' उपन्यास की नायिका मैना और अहेर की 'चाँदनी' संघर्ष करने वाली साहसी नारी पात्र हैं। **'सर्कस'** उपन्यास में झरना, रीता, चँदा, सुनीता, संधू दी सभी शोषित नारी पात्र हैं। **'सावधान! नीचे आग है'** में केतकी, स्वाती, गूंगी, कालिंदी जैसी नारी पात्र हैं। **'धार'** उपन्यास की नायिका मैना साहसी, जुझारू तथा चेतना संपन्न नारी है। वह पूँजीपति व्यवस्था और बिरादरी से टकराने का अदम्य साहस रखती है। **'जंगल जहाँ शुरू होता है'** में बिसराम-बहू, फेंकन-बहू, मलारी जैसे शोषित और अभिशप्त नारी पात्र हैं। **'पाँव तले की दूब'** की नारी पात्र शीला केरकट्टा है।

उच्चवर्ग के खल पात्र

संजीव ने समाज में स्थित शोषण, अत्याचार, अन्याय और विषमता का चित्रण कुछ खलनायकों के माध्यम से किया है जैसे –सर्कस मालिक (सर्कस), फैक्ट्री मालिक महेंद्र बाबू (धार), रामबुझारथ सिंह, रजगढ़िया साहब, जावेद साहब (सावधान! नीचे आग है), लल्लन बाबू, सोखाइन, जोगी, नोनिया, परशुराम (जंगल जहाँ शुरू होता है) विभिन्न उपन्यासों में चित्रित सूदखोर, सामंत, पूँजीपति, खदान मालिक, सर्कस मालिक, फैक्ट्री मालिक, ठेकेदार, जमींदार आदि खल पात्र हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि संजीव के पात्र संघर्षशील और जुझारू हैं। वे मुश्किल से लड़ते हैं पर हिम्मत नहीं हारते हैं। मैना, भिखारी ठाकुर आदि जैसे बेजोड़ संघर्षशील पात्रों की रचना कथाकार के कलम से हुई है।

संवाद शिल्प

संवाद या कथोपकथन के माध्यम से ही पात्र एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं। उनके चरित्र का विकास होता है, उपन्यास का उद्देश्य एवं वातावरण प्रकट होता है। कथोपकथन की भाषा हमेशा पात्रानुकूल, यथार्थवादी, सजीव, सहज एवं प्रभावात्मक होनी चाहिए। संजीव के उपन्यासों में पात्रानुकूल संवाद या कथोपकथन का प्रयोग हुआ है जैसे– "सामने के किसान आपस में बात करते हैं – वह जो दिल्ली में पिलर-पिलर सजाकर मुकुट बनकर बैठी है खपड़ोई (खोपड़ी) पर, जिसे पार्लियामेंट कहते हैं, वहीं राजा रहते हैं, रानी रहती हैं, वही फैसला करते हैं कि यह बीज बोओगे कि वह बीज, हत्या है कि आत्महत्या, पात्र है कि अपात्र!"[192]

विशाखापत्तनम में मछुआरों के मूवमेंट में जो फायरिंग होता है, उसके न्यूज और विजुअल्स में अजय, बेला को देखता है और वह बेला की तलाश में द्विभाषीय रामलू के साथ

---

192. संजीव, 'फाँस', प्रथम संस्करण : 2015, द्वितीय संस्करण : 2016, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 119

विशाखापत्तनम पहुँचता है। रामलू के जरिये भाषा के सेतु जुड़ते हैं –

"तुम बेलम्मा को ढूंढ़ने को आया?" तेलम्मा ने पूछा

"जी!"

"कहां से आया?"

"कोलकाता से।"

"लेकिन बेलम्मा तो कलकत्ता का नहीं है।"

"हां, उसका घर केंदुली ग्राम है, कोलकाता से बहुत दूर दक्षिण।"

"तुम्हारा क्या लगती वो?"

"हाय! फिर वही सवाल। कोई जवाब नहीं बनता। आस-पास औरतें जुट रही हैं।

"पूछा न, क्या लगता वो तुम्हारा।"

"दोस्त!"

"दोस्त ..." सबको सुनाकर वह जोरों से हँसी।

"देखने में तो छैला लगता।"

"....."

"क्या करेगा? शादी बनाएगा उससे?"

"हां, अगर वह चाहे।"

"वह तो आग है आग, जल जायेगा।"[193]

देशकाल एवं वातावरण

उपन्यासकार जिस कालखण्ड में जीता है, सांस लेता है, उसी कालखण्ड को सजीव रूप में अपने उपन्यासों में चित्रित करने का प्रयास करता है। उपन्यासों में पात्रों एवं कथानक का यथार्थवादी वर्णन के लिये देशकाल का सजीव एवं सार्थक वर्णन आवश्यक है। बहुत सारी

---

193. *संजीव, 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', पहला संस्करण : 2012, पहली आवृत्ति : 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 211-212*

परिस्थितियाँ समय के साथ परिवर्तित होती हैं इसलिए उपन्यास में वर्णित घटना, वेशभूषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज उस काल खण्ड के अनुरूप होनी चाहिए। जैसे –"26 जनवरी, 1954 की रात। बाहर कड़ाके की ठंड है लेकिन पटना के हार्डिंग पार्क के पीछे आम की यह बगिया आज गर्म है। जगह-जगह गैस के हंडे सों-सों कर रहे हैं, बिजली के लट्टू जल रहे हैं, सो अलग। ऊँचाई पर बने बड़े-से मंच के सामने कुर्सियाँ ही कुर्सियाँ हैं। जमीन पर बैठनेवालों का इंतजाम दोनों कोनों से पीछे दूर तक चला गया है। आदमी ही आदमी। खद्दर ही खद्दर ! खाकी ही खाकी !...

बिहार भर से चुन-चुनकर लाई गईं लोक-नर्तकों की मंडलियाँ ! ...सभी की आँखें उस अकेली मंडली पर टिकी हैं जो सिर्फ नृत्य नहीं, महज संगीत नहीं, मात्र अभिनय नहीं, बल्कि साहित्य, संस्कृति और सभी कलाओं का समंजन है – भिखारी ठाकुर। आज वे अपने सुप्रसिद्ध नाटक **'बेटी वियोग'** के अंश प्रस्तुत करेंगे।"[194]

"2005 के सेप्टेम्बर में गौरमिंट का ऑडर हुआ कि पोस्टमार्टम केंद्र चौबीसों घंटे खुले रखें जायें।"

"अच्छा !"

"क्यों ?"

"क्यों ?"

"सरकार ने मान लिया है कि शेतकरी तो मरेंगे ही मरेंगे, इन्हें पात्र से अपात्र बनाने के लिए कोई प्रमाण देने वाला तो हो। पोस्टमार्टम में क्या मिलेगा – जहर ! न लचारी निकलेगी, न टेंशन, न कर्ज !"[195]

---

194. संजीव, 'सूत्रधार', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 282-283

195. संजीव, 'फाँस', प्रथम संस्करण : 2015, द्वितीय संस्करण : 2016, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 54

प्राकृतिक वातावरण

संजीव के उपन्यासों में प्राकृतिक वातावरण के चित्रण का सफल प्रयोग देखने को मिलता है जेसे "निचाट दुपहरिया वैशाख की। तपता हुआ दूर-दूर तक का दियारा। न कोई आदमी है, न चिरई, न जिनावर। बरम्ह बाबा के पीपर के बाद उत्तर चिराँद तक एक भी पेड़ नहीं, जहाँ रुक कर छँहाया जा सके। बस है तो इक्की-दुक्की कँटीली झाड़ियाँ – वह भी बबूल की! छोटे-छोटे बवंडर उठते हैं तो इन झाड़ियों से उलझ कर फनफना उठते हैं, जैसे मरकहे भैंसे की नाथी पकड़ ले कोई। फिर जिन्न की तरह नाचते हुए आगे निकल जाते हैं। सारा सीवान (सीमांत) आँवा की तरह धधक रहा है।"[196]

'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में, "इस बीच सूर्य डूब चुका था। आसमान में सिर्फ शाम की द्वाभा मात्र रह गई थी, जिसके बीच पूरा परिवेश किसी शांत रंगीन चित्र की तरह स्पष्ट और जीवंत लग रहा था। सुदूर उत्तरी क्षितिज से कुछ मटमैले बादल उमड़ रहे थे।"[197]

भौगोलिक परिवेश

संजीव के उपन्यासों में भौगोलिक स्थिति का वर्णन कथानक के अनुरूप परिलक्षित होता है जैसे –**'जंगल जहाँ शुरू होता है'** उपन्यास में –"भूगोल के लिहाज से क्राइम का ग्राफ कुछ इस तरह बनता है कि नारायणी नदी के कटाव से विपन्न प्रकृति उन्हें लूटती थी, और लुटे लोग बाद में दूसरों को लूटने लगे। यह प्रवृत्ति दक्षिण में ज्यादा है, उत्तर में कम, माने जैसे-जैसे नारायणी के उत्तर चलते जाइए, यह डाकू प्रवृत्ति कम होती जाएगी। ...उत्तर में नेपाल, पश्चिम में यू.पी., बीच में पहाड़-जंगल और रेता के बीच की छिटकी आबादी और मीलों फैले गन्ने के खेत। और दूसरे किसी क्षेत्र में हो, न हो, क्राइम के मामले में नेपाल और भारत में पक्की मैत्री

---

196. संजीव, 'सूत्रधार', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 11

197. संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पहला संस्करण : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 11

है –बेरोक-टोक आवाजाही, परस्पर सहयोग से काम, चाहे स्मगलिंग हो, औरतों का जिस्मफरोशी हो या अपहरण।"[198] इसी प्रकार **'सावधान! नीचे आग है'** तथा **'धार'** उपन्यासों में कोयलांचल की भौगोलिक स्थिति तथा **'सूत्रधार'** में छपरा बिहार की भौगोलिक स्थिति का वर्णन हुआ है।

उद्देश्य शिल्प

प्रत्येक उपन्यासकार के उपन्यास रचना के पीछे कोई-न-कोई निश्चित उद्देश्य अवश्य होता है और सभी उपन्यासकारों के उपन्यास रचना के उद्देश्य समान नहीं होते हैं। और यदि रचना के उद्देश्य अलग-अलग हैं तो पाठकों पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होगा। उद्देश्य के आधार पर ही उपन्यासकार कथावस्तु का चयन करता है। वास्तव में रचनाकार का उद्देश्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जीवन यथार्थ की व्याख्या करना होता है। वह मनुष्य के वास्तविक जीवन की अभिव्यक्ति कर मानवतावादी दृष्टिकोण की स्थापना करना चाहता है। वह सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याओं को उठाता है। यह उसके जीवन दृष्टि और रचना-दृष्टि पर निर्भर करती है कि वह इन समस्याओं को किस रूप में उठाये। उद्देश्य को लेकर डॉ. प्रताप नारायण टंडन का विचार है –"प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्राय: सभी उपन्यासों की रचना के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य या जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण मिलता है।"[199]

संजीव ने अपने उपन्यासों में पिछड़े और उपेक्षित अंचलों की व्यथाकथा को वाणी दी है। शोषित, पीड़ित, दलित, आदिवासी जनता, किसान, मजदूर, नारी, जाति, धर्म, संस्कृति आदि इनके कथा के प्रमुख आधार रहे हैं। **'सर्कस'** उपन्यास में सर्कस मालिकों का अत्याचार,

---

198. संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पहला संस्करण : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 231-232

199. टण्डन डॉ. प्रतापनारायण, 'हिंदी उपन्यास कला', प्रथम संस्करण : 1965, हिंदी सनीती सुकन्या विभाग, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ संख्या – 341

शोषण, सर्कस कलाकारों का शोषित-पीड़ित जीवन; **'सावधान! नीचे आग है'** में कोयला खदान में काम करने वाले मजदूरों का अभिशप्त जीवन; **'धार'** उपन्यास में बाँसगड़ा अंचल और संथाल आदिवासियों का जीवन संघर्ष; **'सूत्रधार'** उपन्यास में लोक कलाकार भिखारी ठाकुर का जीवन-संघर्ष; **'फाँस'** उपन्यास में किसानों की ज्वलंत समस्या, आत्महत्या और मुआवजा; **'रह गईं दिशाएँ इसी पार'** में वैज्ञानिकों का पूँजीपतियों द्वारा शोषण; हमारी परिवर्तित होते जीवन स्तर आदि समाज के सामने उपस्थित करना लेखक का उद्देश्य रहा है। **'जंगल जहाँ शुरू होता है'** उपन्यास में ऑपरेशन ब्लैक पाइथन के अंतर्गत डाकू समस्या और उसके मूल में छिपे जमीनों का असमान बँटवारा, बाढ़ का प्रकोप, सामंतवादियों का अत्याचार इत्यादि को रेखांकित किया गया है।

उपन्यास साहित्य का शैलीगत मूल्यांकन

उपन्यास कभी भी एक निश्चित शैली में नहीं लिखी जाती है, जब से उपन्यास लेखन की परंपरा शुरू हुई है उसके शैली के रूपों में निरंतर विकास हुआ है। एक उपन्यास में भी उपन्यासकार विभिन्न शैलियों का प्रयोग करता है। प्रत्येक लेखक के व्यक्तित्व के समान उनके शैलियों में भी भिन्नता होती है। आज भी उपन्यास ही वह विधा है जिसमें सबसे जीवंत और ऊर्जावान लेखन हो रहे हैं इसलिए नयी-नयी शैलियों के आगमन से इन्कार नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार सभी लेखक का व्यक्तित्व हमें प्रभावित नहीं करता उसी प्रकार सभी उपन्यासकारों की शैलियाँ भी हमें प्रभावित नहीं करती। किसी भी रचना की शैली की सफलता कथावस्तु के साथ उसके सामंजस्य में है न कि उसकी प्रयोगशिलता और नवीनता में। संजीव ने अपने उपन्यासों को प्रभावात्मक, सहज, सरल एवं सुगम्य बनाने के लिए कथानुरूप विभिन्न शैलियों जैसे – वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, व्यंग्यात्मक, जीवनीपरक, रूपक प्रधान, फ्लैशबैक, पत्रात्मक, फैंटसी आदि शैलियों का प्रयोग किया है।

वर्णनात्मक शैली

उपन्यास लेखन की यह सर्वाधिक प्रचलित शैली है। इस शैली में उपन्यासकार को यह सुविधा रहती है कि वह घटनाओं, स्थितियों, चरित्रों एवं वातावरण का वर्णन अधिक विस्तार

से अपनी मर्जी के मुताबिक कर सकता है। इसमें कलात्मकता दिखाने के बजाय लेखक अपनी टिप्पणी देने के लिए स्वतंत्र होता है। इस शैली का प्रयोग सामान्य स्तर पर उपन्यास के लिए भी किया जा सकता है और श्रेष्ठ उपन्यासों के लिए भी। संजीव के उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग परिलक्षित होता है जैसे –"पसीने से चिपचिपाई देह पर यार्ड और चाँद की जर्द रोशनी कोढ़ के चकत्तों-सी चिलक रही थी। बचा-खुचा भात और मांस गमछो-आँचलों में लिये फटे, मैले कपड़ों में सदियों के अभिशप्त जीव-से खड़े थे वे। बूँद-बूँद रिस रहा था शोरबा उनकी दीनता की तरह। इन सब पर अक्षत-फूल की तरह फेंक रही थी मैना अपनी आवाज, अब भी वे आदमी बन जाएँ! मंगर को अपनी इस नई पत्नी से अजीब तरह का खौफ हुआ, स्नेह भी, श्रद्धा भी। बीमार नसों में कुछ सनसना रहा था, जैसे वर्षों की सूखी नहर में पानी खुला हो।"[200]

"छितराई-छितराई भीड़! कलाली है! किससे पूछें? यहाँ तो सभी वही हैं। अचानक उसे ख़्याल आया, गेट का संतरी तो होगा ही कहीं। गेट की पक्की गुमटी के पास आया तो, वहाँ एक खाकी गठरी दिखी।"[201]

आत्मकथात्मक शैली

आत्मकथात्मक शैली का तात्पर्य उपन्यास का केंद्रीय पात्र अपनी जीवन गाथा अपने शब्दों में खुद व्यक्त करता है। चरित्र प्रधान उपन्यासों में लेखक प्रायः एक व्यक्ति की नजर से उपन्यास में वर्णित क्रिया-कलापों एवं चरित्रों को आगे बढ़ाता है। कथानक के विकास में वह 'मैं' के माध्यम से पाठकों से आत्मीयता स्थापित करता है। संजीव के उपन्यासों में 'मैं' शैली का प्रयोग परिलक्षित है जैसे –"चिराग लेकर मैं दूसरे छोर तक हो आया, मगर न कहीं कोई किताब दिखी, न ट्रंक, न ही गृहस्थी का कोई अन्य सामान। एक कोने में कागज की एक खुली पैकिंग अवश्य थी। मगर उसमें कुछ था नहीं। यह काठ की अनगढ़ चौकी, इसका

---

200. संजीव, 'धार', पहला संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 54-55

201. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 16

साधारण-सा बिस्तर, दो जोड़ी मामूली कुर्ते-पाजामे, लैंप, कागज की खाली पौकिंग और बुझे सिगरेटों के टोटे जीवन-भर की कुल इतनी-सी जमा पूँजी! विश्वास तो नहीं होता। फिर...? कहीं और चला गया है क्या वह? ...मगर ये रहे-सहे कपड़े-वपड़े...? खैर, वैसे भी तो उसकी ज़िंदगी एक पहेली ही रही है हम दोस्तों के लिए।"[202]

संवादात्मक शैली

संवाद शैली के माध्यम से ही कथा आगे बढ़ती है। संवाद जितने छोटे, सहज और सरल होंगे उसकी प्रभावात्मकता उतनी ही ज्यादा होगी। यथार्थवादी, सजीव, छोटे और आकर्षक संवाद उपन्यास को सफलता की ओर ले जाती हैं। जटील और क्लिष्ट संवाद पाठक को रचना से दूर करते हैं। संजीव के उपन्यासों में छोटे-छोटे संवादों का सफल प्रयोग है जैसे – **'जंगल जहाँ शुरू होता है'** उपन्यास में काली भी डाकू बनने के बाद औरतों को भोगना शुरू कर देता है। जहाँ इसी क्रम में उसकी मुलाकात जोगी द्वारा दूसरे के पास बेच दी गई उसकी व्याहता पत्नी से होती है। सबकुछ जानकर वह उसे छोड़ देता है, यहाँ संवाद अत्यंत छोटे पर सार्थक हैं –

'कहाँ जाना चाहती हो – मायके या ससुराल?'

'बंशूपुरा?'

'क्यों?'

'हमरा बच्चा है।'

'बच्चा अगर मिल जाए तो?'

'तो भी।'

'क्यों, काली के पास नहीं?'

'नहीं! अब हुआं का है?'

---

202. संजीव, 'पाँव तले की दूब', प्रथम पॉकेट बुक्स संस्करण : 2005, पुनर्मुद्रण : 2009, 2013, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, पृष्ठ संख्या – 11

'और बंशूपुरा में?'

'ऊ हमको पतनी का मान दिए, इज्जत दिए, बेटा दिए। आज ऊ बेमार हैं तो हम और कहाँ जाएँ?"[203]

पत्रात्मक शैली

इस शैली में एक पात्र-दूसरे पात्र से खत के माध्यम से अपने मनोभावों, विकारों, समस्याओं एवं दिल की बातों को प्रकट करता है। इस शैली की विश्वनीयता इसलिए बढ़ जाती है क्योंकि पात्र स्वयं अपनी आप बीती लिखते हैं। इसकी प्रभावात्मकता लिखने वाले के ढंग पर निर्भर करती है। संजीव के उपन्यासों में पत्रात्मक शैली का प्रयोग है जैसे –**'जंगल जहाँ शुरू होता है'** में डाकू काली अपने भैया बिसराम तथा डी.एस.पी. कुमार को संवेदनात्मक पत्र लिखता है वहीं डाकू परशुराम कुमार को धमकी भरा पत्र लिखता है –

"बेटा कुमार,

दुख है कि 'आसिरवाद' नहीं दे पा रहा हूँ। हमसे अदावत महँगा पड़ेगा। हरिना कस्यप के बारे में सुना होगा। उसको वरदान था कि वो न तो दिन को मर सकता था, न रात को, न जमीन पर, न आसमान पर...लेकिन ऊ भी मारा गया ...तुम जिस मंत्री का बरदान पाके अजर-अमर बना घमंड से ऐंठ रहा है, ऊ भी हमरे बनाबल है। हमको ई भी पता चला कि तुमको मारने का परमीसन नहीं था। खाली वाह-वाही लूटने के खातिर मारा, ऊ भी धोखे से, गलत टैम पे। बेटा कुमार तुमरा भी बरदान काम नहीं आएगा, खंभा फाड़ के हम परगट होंगे एक दिन और...।

बस थोड़ा लिखना! जियादा समझना।

तुम्हारा बाप

परशुराम"[204]

---

203. संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पहला संस्करण : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 209

204. वही, पृष्ठ संख्या – 41

इसी प्रकार **'पाँव तले की दूब'** में भी सुदीप्त समीर को पत्र लिखता है।

डायरी शैली

कथा-क्रम को आगे बढ़ाने के लिए उपन्यासकार कहीं-कहीं पात्रों द्वारा लिखे गए डायरी का सहारा लेता है। इस शैली के उपन्यासों का कथा का रूप वर्णनात्मक होता है। संजीव ने अपने उपन्यासों में डायरी शैली का प्रयोग किया है। **'सावधन! नीचे आग है'** उपन्यास में खदान दुर्घटना में जल-प्लावन में तेरह मजदूर एयर-पॉकेट में सुरक्षा की कैद पा गए थे। जहाँ ऊधम सिंह डायरी लिखता है –"काँपते हाथों से वह डायरी का वह पृष्ठ खोलता है, जिसमें उन तेरह खान मज़दूरों के नाम हैं, जो उन्नीस दिन पूर्व जल-प्लावन में इस एयर-पॉकेट में सुरक्षा की क़ैद पा गए थे –इस काले पानी में। एक-एक कर कटते गए थे नाम। अब वह एक और नाम काटता है –सोमारू। काटकर मुजरिम की तरह शंकालु होकर सामने देखता है। लगता है, मिस्तरी सोमारू की गूँगी बेटी आँख फाड़कर ताक रही हो बदहवास-सी, जैसे उसकी सारी चेतना आँखों में उमड़ी आ रही हो! घबराकर उसने आँखें फिर डायरी में गड़ा ली हैं।"[205]

भाषण शैली

नेता लोग साधारण जनता को हमेशा भाषण का डोज पिलाते रहते हैं, संजीव के उपन्यासों में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है। **'सावधान! नीच आग है'** उपन्यास में खदान दुर्घटना के बाद प्रधानमंत्री और इस्पात मंत्री का भाषण द्रष्टव्य है –"प्रधनमंत्री के संक्षिप्त भावप्रवण भाषण के बाद इस्पात-खानमंत्री रूँधे गले से बोलते हैं, "यह भाषण देने का समय नहीं है, फिर भी हम एक बात कहना चाहेंगे, प्रधानमंत्री ने मज़दूर भाइयों के जीवित होने की जो बात कही है, वह बेबुनियाद नहीं है। बड़ा धेमों कोलियरी में उन्नीस दिन के बाद भी ग्यारह मज़दूर जिन्दा बचकर आए थे। आपसे यही निवेदन है कि आप नाहक अफ़वाह न उड़ाएँ, न अफ़वाहों पर विश्वास करें, न उद्धार-कार्य में विघ्न ही पैदा करें। इस वक़्त देश के सबसे बड़े-

---

205. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 11

बड़े दिमाग़ चंदनपुर के भाइयों की रक्षा के लिए जुटे पड़े हैं। हमने रूस, जर्मनी, इंग्लैंड, अमेरिका, जापान, पोलैंड भी ख़बर भेज दी है।"[206]

'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में मुख्यमंत्री अपनी भदेस शैली में भाषण देते हैं- -"बेतिया के भाई लोग, माई लोग! ...हमको पटना में मालूम हुआ कि डाकू उन्मूलन का काम में पब्लिक प्रोपर्टी को तोड़ा जा रहा है, जनता को बेवजह परेशान किया जा रहा है? हम डाकू मारने को बोले थे, शांतीप्रिय नागरिक का मकान-दुकान ढाहने को नहीं। जो कुछ हुआ, उस पर हमरा दिल में चोट लगा, हम एही से माफी माँगने पटना से उड़कर आए।"[207]

व्यंग्यात्मक शैली

इस शैली में उपन्यास रचना एक चुनौती भरा कार्य है क्योंकि इसमें भाषा के माध्यम से व्यंग्य का स्थितियों, घटनाओं से इस प्रकार संयोजन होता है कि व्यंग्य थोपा हुआ नहीं लगे। वास्तव में व्यंग्य का मूल कार्य हास्य उत्पन्न करना नहीं बल्कि सामाजिक विसंगतियों और अंतर्विरोधों को उजागर करना होता है। संजीव ने **'सर्कस'** उपन्यास में व्यंग्यात्मक प्रहार किया है –"इस देश की अवाम चकाचौंध और स्टंट की मारी हुई है। यहाँ मेहनतकशों को नीच समझा जाता है और हरामखोरों को ऊँचा। एक नंबर के फ्लर्ट, दलाल और कमीने यहाँ इज़्ज़त पाते हैं। इन्हीं के बीच शुरू से काम करता रहा हूँ, जब तक हालात नहीं बदलते, तुम्हें या तुम्हारी नीचे की पीढ़ियों को भी इसी के बीच काम करना है। रोओगी तो आँसू पोंछने भी नहीं आएगा कोई। ठोकरें मारकर हँसो लेकिन हाँ, अकेले नहीं, इकट्ठा करो ऐसे दबे-कुचले मेहनतकशों को।"[208]

---

206. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 185-186

207. संजीव, 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पहला संस्करण : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 270

208. संजीव, 'सर्कस', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 125

कथात्मक शैली

संजीव ने अपने उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग भी किया है जैसे **'सावधान! नीचे आग है'** में मेवालाल कथा सुनाता है –"पति-पत्नी एक-दूसरे को बहुत मानते थे। राजगढ़िया साहब ने कभी भी उनके 'दान-पुन्न' में रोड़ा नहीं अटकाया। ...यह सिंहासन तब भी इनका नौकर था। एक दिन सवेरे-सवेरे आकर लगा बिलखने, 'माईजी, हम तो लुट गए।' ...बेटी झुलस गई ... घर के अंदर ज़मीन तोड़कर निकली है आग। ...आग उन्हीं की कोलियरी में जमी गैस के चलते लगी है और इसकी सारी ज़िम्मेदारी राजगढ़िया साहब को जाती है। ...राजगढ़िया साहब बोले, पाप? ...सभी खदान-मालिकों की खदानों में आग लगी है या लगेगी। तुम तो सती हो, बड़ी पुण्यात्मा हो, रोक सको तो रोक लो!' ...इसी सदमें में घुलते-घुलते घुल गईं। एक बेटी भी थी, जो कुछ दिनों बाद छत से गिरकर मर गई।"[209]

पूर्वदीप्ति शैली

इस शैली में पात्रों के स्मृति के आधार पर अतीत में व्यतीत हुई कुछ घटनाओं को पुनः स्मरण किया जाता है। संजीव के उपन्यासों में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है जैसे **'पाँव तले की दूब'** उपन्यास में –"स्मृति में वर्षों पुरानी बिसरी ध्वनियाँ सरसराने लगीं। पात्र-पात्र के मुखौटे दरक गए। घुलने लगे सारे रंग-रोगन। मैं हर पात्र को पहचानने लगा ... मैं चिहुँककर उठ बैठा, 'तो तुमने अपनी आत्मकथा लिखी है सुदीप्त? लेकिन तुम तो...? खैर, मैंने पृष्ठों को आगे पढ़ना शुरू किया तो अब मैं कहानी नहीं पढ़ रहा था ... मैं घटनाओं को साफ-साफ देख रहा था।"[210]

---

209. संजीव, 'सावधान! नीचे आग है", पहला पेपरबैक्स संस्करण : 2018, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 35

210. संजीव, 'पाँव तले की दूब', प्रथम पॉकेट बुक्स संस्करण : 2005, पुनर्मुद्रण : 2009, 2013, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, पृष्ठ संख्या – 29

काव्यात्मक एवं गीति शैली

संजीव के उपन्यासों में लोकगीतों का प्रयोग परिलक्षित होता है, क्योंकि वे लोकजीवन से जुड़े कथाकार हैं। विवाहों में गाये जाने वाले गारी का वर्णन है –

"हथिया हथिया शोर कइले, गदहो न ले अइले रे
तोरा बहिन के सोंटा मारौं, नमवा हँसउले रे !"[211]

'फाँस' उपन्यास में जीवनानंद दास की कविता **'आबार आसिबो फिरे'** का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है –

"फिर आऊँगा लौटकर
धान सीढ़ी नदी के तीर
इसी देश में। हो सकता है
मनुष्य नहीं, शंख, चील या शालिख
मैना के भेष में।"[212]

निष्कर्ष

संजीव के उपन्यासों की भाषा एवं शिल्प विधान का अध्ययन करने के पश्चात् शोधार्थी का यह मानना है कि भाषा की दृष्टि से संजीव के उपन्यास सशक्त एवं रोचक हैं। भाषा पर उनकी जबरदस्त पकड़ है। लोकतत्व उनकी भाषा का सौंदर्य है और इसी क्रम में उन्होंने बांग्ला, अवधी, भोजपुरी, संथाली, मगही एवं विभिन्न आदिवासी बोलियों का सफल प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है। शब्द-योजना के सफल अंकन के लिए संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी-फारसी, अवधी, बांग्ला, भोजपुरी के साथ-साथ द्विरूक्ति शब्द, ध्वन्यार्थक शब्द, जोड़े के साथ

---

211. संजीव, 'सूत्रधार', पहला संस्करण : 2004, पहली आवृत्ति : 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 101

212. संजीव, 'फाँस', प्रथम संस्करण : 2015, द्वितीय संस्करण : 2016, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 207

आये हुए शब्द, अंग्रेजी-हिंदी भ्रष्ट शब्द, तकनीकी शब्द आदि का प्रयोग हुआ है। उपन्यासों में मुहावरें, कहावतें, पहेलियाँ, सुक्तियों के माध्यम से पिछड़े अंचल का दुख-दर्द, परिवेश चित्रित किया है।

उनके उपन्यासों का शिल्प विविध संभावनाओं से लबरेज है। उपन्यासों की शुरुआत वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक आदि शैलियों में हुई है। हाशिये पर टंगे, उपेक्षित, पीड़ित, शोषित लोग इनके प्रमुख पात्र हैं। उनकी व्यथा कथा कहना एवं उच्च वर्ग के खल पात्रों के शोषण का चित्रण करना उनके उपन्यासों का उद्देश्य रहा है। वे एक अन्वेषी कथाकार हैं और वातावरण शिल्प के अंतर्गत उन्होंने प्राकृतिक, भौगोलिक और सामाजिक स्थिति का यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्त किया है। संजीव के उपन्यासों में वर्णनात्मक, कथात्मक, पूर्वदीप्ति, आत्मकथात्मक, व्यंग्यात्मक, पत्रात्मक, डायरी, भाषण एवं गीति शैली इत्यादि का प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार संजीव के उपन्यास अछूते संदर्भों का अन्वेषण करते हुए कलात्मक दृष्टि से भी पाठकों के हृदय पर पर्याप्त असर छोड़ते हैं। उनके उपन्यासों का एक निश्चित उद्देश्य है न कि सस्ता मनोरंजन करना। उनके उपन्यास समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं।